गैंडा

अजेन योनेस्को

अजेन योनेस्को के
प्रसिद्ध नाटक Rhinoceros
का अनुवाद
अनुवादिका : कायरीन सिंह

पात्र

जां
बेरांजे
महिला वेटर
पंसारी
पंसारी की बीवी
बूढ़ा
तर्कशास्त्री
घरेलू औरत
काफी हाउस का मालिक
डेज़ी
मि० पैंपियों
ड्यूडार
बोटार
मिसेज़ बीफ
फायरमैन
बूढ़ा-2
बूढ़े की पत्नी
गेंडों के बहुत से सिर

अंक एक

मंच-सज्जा

फ्रांस में एक छोटे शहर का एक चौराहा। मंच के पिछले हिस्से में एक दो-मंजिला मकान। निचली मंजिल पर एक पंसारी की दुकान जिसमें शीशे का दरवाज़ा लगा है और जिसमें जाने के लिए दो-तीन सीढ़ियां चढ़नी पड़ती हैं। दुकान के ऊपर एक बोर्ड जिस पर बड़े अक्षरों में 'प्रोविज़न स्टोर' लिखा है। ऊपर की मंज़िल पर दुकानदार और उसकी बीवी रहते हैं। इसकी दो खिड़कियां। दुकान मंच के पिछले हिस्से में लेकिन थोड़ा बाईं ओर, मंच-पार्श्व से दूर नहीं। मकान के पीछे दूर एक चर्च की घड़ी। पंसारी की दुकान तथा दायें पार्श्व के बीच से आती हुई एक सड़क का दृश्य। दाएं पार्श्व में एक कोने पर एक कॉफी हाउस के ऊपर एक घर जिसमें केवल एक खिड़की है। इसके सामने की जगह पर कुछ मेजें और कुर्सियां जो लगभग मंच के मध्य भाग तक फैली हुई हैं। कुर्सियों के पास एक पेड़ जिसके पत्तों पर काफी धूल इकट्ठी हो रही है। स्वच्छ आकाश, तेज धूप, जिसके कारण सफेद पुती दीवारें और भी सफेद लग रही हैं। रविवार का दिन,

समय कोई बारह बजे का, गर्मी का मौसम। जां और बेरांजे आकर इस कॉफी हाउस की एक मेज के पास बैठेंगे।

पर्दा उठने से पहले चर्च का घंटा बजना शुरू होता है जो पर्दा उठ जाने के कुछ क्षण बाद तक बजता रहता है। जब पर्दा उठ रहा है, एक औरत दाईं ओर से आकर चुपचाप मंच को पार करती हुई बायीं ओर चली जाती है। उसके हाथ में एक खाली टोकरी है और दूसरे हाथ में उसने एक बिल्ली को उठा रखा है। इसी समय पंसारी की बीवी दुकान का दरवाजा खोलती है और इस औरत को देखती है।

पंसारी की बीवी : अच्छा...यह वही है! (दुकान के अंदर बैठे अपने पति से) अजी, यह वही है! कितनी घमंडी हो गई है! अब भला वह हमारी दुकान पर क्यों आएगी।

(पंसारी की बीवी दुकान के अंदर चली जाती है। कुछ क्षणों के लिए मंच खाली। दाईं ओर से जां का प्रवेश। ठीक उसी समय बाईं ओर से बेरांजे का प्रवेश। जां बहुत साफ कपड़े पहने है—ब्राउन सूट, लाल टाई, चुस्त कालर वाला सफेद कमीज़ और ब्राउन हैट। चेहरा थोड़ा लाल तथा फूला हुआ। जूते पीले रंग के जिन्हें खूब चमकाया गया है। बेरांजे ने दाढ़ी नहीं बना रखी, उसके सिर पर हैट नहीं, बालों में कंघी ठीक से नहीं, कपड़ों पर सिलवटें। यह सब उसकी लापरवाही का सूचक है। वह थका हुआ तथा उनींदा लगता है, कभी-कभी जमुहाई लेता है।)

जां : (दाईं ओर से आते हुए) तो आप आ ही गए, बेरांजे साहब।

बेरांजे : (बाईं ओर से आते हुए) नमस्ते, जां साहब!

जां : हमेशा देर से—वही पुरानी आदत ! (घड़ी देखता है) साढ़े ग्यारह का समय तय हुआ था और अब बारह बजने को हैं।

बेरांजे : माफ कीजिए। आप सचमुच काफी देर से मेरा इंतजार कर रहे हैं ?

जां : नहीं। मैं भी अभी आया हूं ! आपने देखा नहीं ?

(दोनों कॉफी हाउस की एक मेज की ओर जाते हुए।)

बेरांजे : तब तो कोई बात नहीं क्योंकि···आप भी···

जां : मेरी बात अलग है। मुझे इंतजार करना अच्छा नहीं लगता क्योंकि मेरे पास बरबाद करने के लिए वक्त नहीं है। चूंकि आप कभी भी वक्त पर नहीं आते, मैं देर से आता हूं, जानबूझ कर और हिसाब लगा कर कि आप कितनी देर से आएंगे।

बेरांजे : ठीक है···ठीक है, लेकिन फिर भी···

जां : आप कह नहीं सकते कि आप ठीक समयपर आए हैं !

बेरांजे : ठीक है···मैंने कब कहा।

(दोनों बैठ गए हैं।)

जां : देखा !

बेरांजे : क्या पीएंगे आप ?

जां : आप को प्यास लगी है क्या ? ···सुबह, सुबह ?

बेरांजे : बड़ी गर्मी है ! मौसम भी बड़ा खुश्क है।

जां : जितना ज्यादा ठंडा पिया जाए, प्यास भी उतनी ही ज्यादा बढ़ती है, यह तो सीधी-सी बात है।

बेरांजे : अगर आसमान में वैज्ञानिक लोग बादल बना पाते, तो मौसम कुछ कम खुश्क होता, प्यास भी कम लगती।

जां : (बेरांजे को घूरते हुए) इससे आपका काम तो चलता। आपकी प्यास पानी से थोड़े ही बुझेगी, बेरांजे साहब···

बेरांजे : आप कहना क्या चाहते हैं, जां साहब ?

जां : आप अच्छी तरह समझते हैं। मेरा इशारा है आपके खुश्क गले की ओर, रेतीली मिट्टी की तरह हमेशा खुश्क !

बेरांजे : आपकी यह तुलना, मुझे लगता है कि···

जां : (बात काटते हुए) आपकी हालत ठीक नहीं, मेरे दोस्त !

बेरांजे : हालत ? ठीक नहीं ? सच ?

जां : मैं अंधा नहीं हूं। थकान के मारे आप गिरे जा रहे हैं, रात आप फिर नहीं सोए, जमुहाइयां ले रहे हैं। आप बेहद थके हुए हैं···

बेरांजे : मेरे बाल कुछ दुख रहे हैं···

जां : आप से शराब की बू आ रही है !

बेरांजे : अभी भी कुछ-कुछ चढ़ी है, सच है।

जां : हर इतवार की सुबह तो ऐसा होता ही है, बाकी दिनों की बात तो छोड़िए।

बेरांजे : नहीं साहब ! बाकी दिनों तो ऐसा कम होता है, दफ्तर की वजह से ··

जां : और आप की टाई का क्या हुआ ? किसी कुश्ती में उसे खो आए हैं क्या !

बेरांजे : (गले पर हाथ रखते हुए) अरे ! बात तो आपने ठीक कही ! कमाल है, पर यह गई कहां ?

जां : (कोट की जेब से टाई निकालते हुए) लीजिए, बांध लीजिए इसे।

बेरांजे : ओह, शुक्रिया। आप तो बड़े अच्छे हैं।

(टाई बांधता है।)

जां : (बेरांजे लापरवाही से टाई में गांठ बांध रहा है।) आपके बाल बुरी तरह बिखरे हैं ! (बेरांजे अपनी उंगलियां बालों में फेरता है।) लीजिए, कंघी लीजिए ! (कोट की दूसरी जेब से कंघी निकालता है।)

बेरांजे : (कंघी लेते हुए) शुक्रिया। (अनमने भाव से कंघी करता है।)

जां : आज आपने दाढ़ी भी नहीं बनाई ! ज़रा अपने पर एक नजर तो डालिए। (कोट के अंदर की जेब में से जा एक छोटा शीशा निकालता है और उसे बेरांजे को देता है। बेरांजे शीशे में अपनी शक्ल देखता है और ऐसा करते समय वह अपनी जीभ बाहर निकालता है।)

बेरांजे : जीभ पर काफी मोटी पर्त जमी हुई है।

जां : (शीशा वापस लेकर उसे जेब में डालते हुए) यह कोई हैरानगी की बात नहीं।··· (बेरांजे के देने पर वह अपनी कंघी भी वापस ले लेता है और उसे अपनी जेब में रख लेता है।) आपको कोई जिगर की बीमारी होने वाली है, मेरे दोस्त।

बेरांजे : (चिंता की मुद्रा में) अच्छा ?···

जां : (बेरांजे से, जो टाई लौटाना चाहता है) रख लीजिए। मेरे पास और हैं।

बेरांजे : (प्रशंसा के स्वर मे) आप···आप तो अपना बहुत ध्यान रखते हैं।

जां : (बेरांजे को ऊपर से नीचे तक जांचना जारी रखते हुए) आप के कपड़ो पर बुरी तरह से सिलवटें पड़ी है। कितनी शर्मनाक बात है यह ! कितनी गंदी है आपकी कमीज, आपके जूते··· (बेरांजे अपने पांवों को मेज के नीचे छिपाने की कोशिश करता है।) आपके जूते भी पालिश नहीं है··· क्या हाल बना रखा है ! ···अपने कंधे देखिए···

बेरांजे : क्या हुआ है मेरे कंधों को ?···

जां : जरा पीछे मुड़िए। मुड़िए भी। आप किसी दीवार से लग-कर खड़े हुए होंगे··· (बेरांजे अपना आलस भरा हाथ जा की ओर बढ़ाता है।)

नहीं, मेरे पास कोई ब्रश नहीं है। इससे मेरी जेबें फूल जाती। (उसी आलस भरे हाथ से बेरांजे धूल हटाने के लिए अपने कंधे झाड़ता है। जा अपना सिर धूल से बचाता

है।) *बाप रे···कहां से लगाया यह चूना ?*

बेरांजे : याद नहीं।

जां : बड़े अफसोस की बात है ! बड़े अफसोस की बात है ! आपका दोस्त होने में शर्म आ रही है।

बेरांजे : आप बड़े कठोर हैं···

जां : आप हैं ही इसी काबिल !

बेरांजे : सुनिए, जां साहब, जी बहलाने के मौके मुझे बहुत कम मिलते हैं। इस शहर मे हम बोर हो जाते हैं। जो नौकरी मैं करता हूं उसमें मेरा मन नहीं लगता···रोज़ दफ्तर में पूरे आठ घंटे बैठो; सारे साल में सिर्फ तीन हफ्ते छुट्टियां ! शनिवार की रात आते-आते थकान से अपना बुरा हाल हो जाता है। तब, जैसे आप जानते ही है, थकान मिटाने के लिए···

जां : देखिए, काम तो सब को करना पड़ता है, मुझे भी। औरों की तरह मैं भी दफ्तर में हर रोज़ आठ घंटे काम करता हूं और मुझे भी साल में सिर्फ इक्कीस छुट्टियां मिलती है। लेकिन, फिर भी, मुझे देखिए। इच्छा शक्ति चाहिए, जनाब···

बेरांजे : ओह, इच्छा-शक्ति। हरेक के पास इतनी नहीं होती जितनी आपके पास है। मेरे बस की तो बात नहीं। नहीं, मेरे बस की बात नहीं इस तरह की ज़िंदगी जीना।

जा : हरेक को आदत डालनी है। आप क्या औरों से न्यारे हैं ?

बेरांजे : ऐसा तो मैंने कभी नहीं कहा···

जां : (बात टोकते हुए) मुझमे और आप में कोई फर्क नहीं है। बल्कि मैं तो अर्ज़ करूंगा कि मैं आपसे बेहतर हूं। बेहतर आदमी वही है जो अपना फर्ज़ अदा करता है।

बेरांजे : कैसा फर्ज़ ?

जां : अपना फर्ज़···मिसाल के तौर पर, एक क्लर्क के रूप में अपना फर्ज़···

बेरांजे : अच्छा, क्लर्क के रूप में अपना फर्ज़...

जां : कल रात आपने नशाबाजी कहां की ? अगर आपको याद हो तो !

बेरांजे : ओग्युस्त का जन्म-दिन मना रहे थे, हमारा दोस्त ओग्युस्त...

जां : हमारा दोस्त ओग्युस्त ? मुझे तो कोई न्यौता नही मिला अपने दोस्त ओग्युस्त के जन्म-दिन का...

(इसी समय एक हांफते हुए जानवर के पैरों की टाप दूर से बड़ी तेज़ी के साथ पास आती हुई सुनाई देती है। साथ ही वह एक लंबी चिंघाड़ मार रहा है।)

बेरांजे : मैं इनकार न कर सका। ऐसा करना अच्छा थोड़े ही होता...

जां : क्या मैं गया था उधर ? मैं ?

बेरांजे : शायद ऐसा हुआ हो, कि आपको न्यौता ही न मिला हो ! ...

महिला वेटर : (कॉफी हाउस से बाहर आते हुए) कहिए साहब, क्या लेंगे ? (शोर काफी बढ गया है।)

जां : (बेरांजे से, शोर की ओर अभी उसका ध्यान नही गया, उस से भी ऊंची आवाज़ में चिल्लाकर ताकि उसकी बात सुनी जा सके।) हां, सच है, मुझे न्यौता नहीं मिला। मुझे यह सम्मान नही मिला...लेकिन फिर भी मैं आपको यकीन दिलाकर कह सकता हूं कि यदि मुझे बुलाया भी गया होता तो भी मैं जाता नही क्योंकि... (शोर बेहद बढ़ जाता है।) यह क्या हो रहा है ? (बड़ी तेज़ी से चौकड़ी भरते समय हुए एक शक्तिशाली भारी-भरकम जानवर का शोर बहुत समीप सुनाई देने लगता है, साथ ही, उसके हांफने का स्वर भी।) अरे, यह क्या हो रहा है ?

महिला वेटर : अरे, यह क्या हो रहा है ?

(ऐसा प्रतीत होता है कि बेरांजे ने कुछ नही सुना। अब भी वह आलस की मुद्रा में जां को इस निमंत्रण के बारे में जवाब दे रहा है। उसके ओंठ हिल रहे हैं लेकिन कोई सुन नहीं पाता कि वह क्या कह रहा है। अचानक जां उठ खड़ा होता है और ऐसा करते समय अपनी कुर्सी गिरा देता है। बायी ओर के पार्श्व मे देखते हुए वह इशारा करता है जबकि बेरांजे अभी भी थोड़ी सुस्ती की हालत में बैठा रहता है।)

जां : बाप रे ! गेंडा ! (इस जानवर का शोर बड़ी तेजी से क्षीण होने लगता है जिसके फलस्वरूप बाद वाले शब्द साफ सुनाई देने लगते हैं। इस सारे दृश्य को बड़ी फुर्ती के साथ खेला जाना चाहिए।

बाप रे, गेंडा !

महिला वेटर : बाप रे, गेंडा !

पंसारी की बीवी : (दुकान के दरवाजे से सिर बाहर निकालती हुई) बाप रे, गेंडा। (अपने पति से, जो अभी दुकान में है) जल्दी आओ, देखो ! गेंडा !

(सभी मच के बाएं पार्श्व मे देख रहे हैं।)

जां : सीधा आगे को भाग रहा है, पटरी पर पड़े माल को गिरा देगा !

पसारी : (दुकान मे से) कहा ?

महिला वेटर : (कमर पर हाथ रखते हुए) कमाल है !

पंसारी की बीवी : (अपने पति से, जो अब भी दुकान में है) आकर देखो न !

(तभी पंसारी अपना सिर बाहर निकालता है।) बाप रे, गेंडा !

तर्कशास्त्री : (दाईं ओर से जल्दी से प्रवेश करते हुए) एक गेंडा, सामने की पटरी पर तेज़ी से दौड़ते हुए !

(जां के "बाप रे ! गेंडा !" कहने के बाद में सभी कथन लगभग एक साथ संपन्न होते हैं। एक महिला की चीख सुन पड़ती है। वह मंच पर आती है और भागकर इसके मध्य भाग में पहुंच जाती है। यह वही घरेलू औरत है जिसने एक हाथ में टोकरी थाम रखी है। मंच के मध्य भाग में पहुंचते ही इसकी टोकरी गिर जाती है और सारा सामान मंच पर बिखर जाता है, एक बोतल टूट जाती है, लेकिन वह अपनी दूसरी बगल में थामी हुई बिल्ली को नहीं गिरने देती।)

घरेलू औरत : आह ! ओह !

(घरेलू औरत के पीछे-पीछे बाईं ओर से एक बना-ठना बूढ़ा आता है और पंसारी तथा उसकी बीवी को एक तरफ धकेलकर जल्दी से दुकान में घुस जाता है। इसी बीच तर्कशास्त्री पंसारी की दुकान के दरवाज़े की बाईं ओर की पिछली दीवार का सहारा लेकर खड़ा हो जाता है। जां तथा महिला वेटर खड़े है और बेराजे अब भी खोया-खोया सा बैठा है—ये तीनों एक दूसरा ग्रुप बनाए हुए हैं। इसी बीच बाईं ओर "ओह" "आह" की चीखों के साथ भागते हुए लोगों का शोर सुनाई दे चुका है। जानवर ने जो धूल उड़ाई, वह अब मंच पर फैल रही है।)

कॉफी हाउस का मालिक : (कॉफी हाउस के ऊपर की मंज़िल की खिड़की से सिर निकालते हुए) क्या हो रहा है, भई ?

बूढ़ा : (पंसारी तथा उसकी बीवी के पीछे से दुकान में जाते हुए) माफ कीजिए !

(यह बना-ठना बूढ़ा सफेद फुल बूट और हैट पहने है, अपने एक हाथ में हाथीदांत की मुट्ठी वाली एक छड़ी लिए है। दीवार से चिपक कर खड़े तर्कशास्त्री की खिचड़ी छोटी मूँछें हैं। वह पुराने फैशन का चश्मा और स्ट्रा हैट पहने है।)

पंसारी की बीवी : (पीछे से धक्का आता है वह भी अपने पति को धकेलती बूढ़े से कहती है) जरा अपनी छड़ी संभालिए, आपसे कह रही हूं !

पंसारी : क्या हो रहा है आपको ? कमाल है !

(बूढ़े का सिर पंसारी तथा उसकी बीवी के पीछे से दिखाई देता है।)

महिला वेटर : (कॉफी हाउस के मालिक से) गेंडा !

कॉफी हाउस का मालिक : (खिड़की से, महिला वेटर को) कोई सपना देख रही हो क्या ? (स्वयं गेंडा देखकर) हैं ! कमाल है !

घरेलू औरत : आह ! (उसके "आह" के साथ मंच के पीछे से "ओह" और 'आह" की जो चीखें आती हैं वे इस "आह" की पृष्ठ-भूमि बनती हैं। उसकी टोकरी, सारी चीजें और बोतल तो गिर गई हैं लेकिन अपनी बिल्ली को, जिसे वह दूसरी बगल में थामे हुए है, उसने गिरने नहीं दिया है।) मेरी प्यारी बिल्ली डर गई !

काफी हाउस का मालिक : (अभी भी बाईं ओर नज़र गड़ाए दूर तक जानवर को देखते हुए, यद्यपि टापों और चिंघाड़ों का शोर धीरे-धीरे कम होता जा रहा है। धूल के कारण बेराजे, बिना कुछ कहे, आलस के साथ अपना सिर थोड़ा एक तरफ हटाता है, फिर मुंह बनाता है।) कमाल है !

जां : (थोड़ा सिर को एक तरफ हटाते हुए, लेकिन पूरी तरह चौकस) कमाल है ! (छींकता है।)

घरेलू औरत : (मंच के मध्य भाग में खड़ी लेकिन बाईं ओर मुंह किये। उसकी चीजें फर्श पर चारों ओर बिखरी हुई हैं।) कमाल

है ! (छीकती है।)

(मंच के पिछले भाग में बूढ़ा आदमी, पंसारी की बीवी और पंसारी दुकान के उस शीशे के दरवाज़े को दुबारा खोलते हैं जिसे बूढ़े आदमी ने दुकान के अन्दर जाकर बंद कर दिया था।)

तीनों : कमाल है !

जां : कमाल है ! (बेरांजे से) आपने देखा ? (गैंडे की टापों का शोर और उसका चिंघाड़ना अब बहुत दूर निकल गए हैं, लोग अभी भी इस जानवर के पीछे टकटकी लगाकर देख रहे हैं। सभी खड़े हैं। केवल बेरांजे अनमने भाव से बैठा हुआ है।)

सभी : (बेरांजे को छोड़कर) कमाल है !

बेरांजे : (जां से) मुझे तो ऐसा लगता है, हां, यह गैंडा ही था ! कितनी धूल उड़ा गया है। (वह रूमाल निकालकर अपनी नाक साफ करता है।)

घरेलू औरत : कमाल है ! मेरी तो जान ही ले गया !

पंसारी : (घरेलू औरत से) आपकी टोकरी…आपका सारा सामान…

बूढ़ा : (घरेलू औरत के पास जाकर मंच पर बिखरी चीज़ों को उठाने के लिए झुकता है। अपना हैट ऊपर उठाकर बड़े आदर के साथ इस महिला का अभिवादन करता है।)

कॉफी हाउस का मालिक : कमाल है ! ऐसा तो कभी कोई सोच भी नहीं सकता।

महिला वेटर : यह क्या हो गया !

बूढ़ा : (घरेलू औरत से) इजाज़त हो तो मैं चीज़ें इकट्ठी करने में आपकी मदद करूं ?

घरेलू औरत : (बूढ़े से) आपका बहुत-बहुत शुक्रिया, जनाब। मेहरबानी कर अपना हैट पहन लीजिए। ओह। मैं तो बहुत डर गई थी।

तर्कशास्त्री : डर एक तर्कहीन स्थिति है। तर्क को इस पर काबू पाना ही होगा।

महिला वेटर : वह आंखों से ओझल हो गया है।

बूढा : (घरेलू औरत से, तर्कशास्त्री की ओर संकेत करते हुए) मेरे मित्र तर्कशास्त्री हैं।

जां : (बेरांजे से), आपका इसके बारे में क्या ख्याल है?

महिला वेटर : काफी तेज भाग लेते हैं ये जानवर!

घरेलू औरत : (तर्कशास्त्री से) आपसे मिलकर खुशी हुई।

पंसारी की बीवी : (पंसारी से) हम क्या करें? हमारी दुकान से थोड़े ही खरीदा था।

जां : (मालिक और महिला वेटर से) इसके बारे में आपका क्या ख्याल है?

घरेलू औरत : कम से कम बिल्ली को मैंने गिरने से बचा लिया।

काफी हाउस का मालिक : (कंधे झाड़ते हुए, खिड़की से) ऐसा अक्सर होता नही है।

घरेलू औरत : (तर्कशास्त्री से, जबकि बूढ़ा उसकी चीजें इकट्ठी कर रहा है।) जरा इसे पकड़ेंगे?

महिला वेटर : (जां से) मैंने आज तक ऐसा नही देखा था!

तर्कशास्त्री : (घरेलू औरत से, बिल्ली को उससे लेते हुए) पंजा तो नही मारेगी न?

काफी हाउस का मालिक : (जा से) बिलकुल पुच्छल तारे की तरह गुजर गया।

घरेलू औरत : (तर्कशास्त्री से) यह तो बड़ी ही प्यारी है। (दूसरों से) हाय मेरी शराब की बोतल! कितनी महंगी चीज है।)

पंसारी : (घरेलू औरत से) मेरे पास है, मेरे पास बहुत है।

जा : (बेरांजे से) कहिए, इस बारे मे आपका क्या ख्याल है?

पंसारी : और है भी बहुत बढ़िया!

कॉफी हाउस का मालिक : (महिला वेटर से) बेकार मत खडी रहिए। इन सज्जनो का ध्यान रखिए।

(वह बेरांजे और जां की ओर संकेत करता है, खिड़की से हट जाता है।)

बेरांजे : (जां से) किसके बारे में आप बात कर रहे हैं ?

पंसारी की बीवी : (पंसारी से) जाओ, और इसके लिए एक दूसरी बोतल ले आओ !

जां : (बेरांजे से) गैंडे के बारे में, जाहिर है गैंडे के बारे मे !

पंसारी : (घरेलू औरत से) मेरे पास बहुत बढ़िया शराब है, न टूटने वाली बोतलों मे ! (वह अपनी दुकान मे ओझल हो जाता है।)

तर्कशास्त्री : (अपनी बांहों मे बिल्ली को सहलाते हुए) बिल्ली मौसी, बिल्ली मौसी !

महिला वेटर : (बेरांजे तथा जां से) आप क्या पीएंगे ?

बेरांजे : (महिला वेटर से) दो बीयर !

महिला वेटर : अच्छा जी ! (काफी हाउस के दरवाजे की ओर जाती है।)

घरेलू औरत : (बूढ़े की सहायता से अपना सामान उठाते हुए) आप तो सचमुच बहुत अच्छे हैं।

महिला वेटर : दो बीयर। (वह अंदर जाती है।)

बूढ़ा : (घरेलू औरत से) यह तो मेरा फर्ज है, मादाम।

(पंसारी की बीवी दुकान के अंदर जाती है।)

तर्कशास्त्री : (बूढ़े और घरेलू औरत से, जो फर्श पर गिरा सामान उठा रहे हैं।) इन्हें तरीके से रख लीजिए।

जां : (बेराजे से) हा, तो आपका इस बारे में क्या ख्याल है ?

बेराजे : (जां से, उसे पता नही कि क्या कहना है।) अ···कुछ नहीं···काफी धूल उड़ाता है···

पंसारी : (शराब की एक बोतल के लिए दुकान से बाहर आकर, घरेलू औरत से) मेरे पास हरा प्याज भी है।

तर्कशास्त्री : (अब भी बिल्ली को सहलाते हुए) बिल्ली मौसी ! बिल्ली मौसी !

पंसारी : (घरेलू औरत से) इसकी कीमत है सौ फ्रांक।

घरेलू औरत : (पंसारी को पैसे देती है, फिर बूढ़े से, जिसने सभी चीजो को टोकरी में वापस रख दिया है।) बड़े अच्छे हैं आप! यही तो है फ्रांस की तहजीब! आज के नौजवानों मे यह बात कहां!

पंसारी : (पैसे लेते हुए) आपको हमारी दुकान से ही सामान खरीदना चाहिए! आपको सड़क पार करने की जरूरत नही पड़ेगी। ऐसी घटनाएं भी दुबारा नही होंगी। (वह दुकान में वापस चला जाता है।)

जां : (जो बैठ गया है और अब भी गेंडे के बारे मे सोच रहा है।) जो भी हो, यह है तो बड़ी अजीब घटना!

बूढ़ा : (अपना हैट उठाकर घरेलू औरत का हाथ चूमते हुए) आपसे मिलकर बड़ी खुशी हुई।

घरेलू औरत : (तर्कशास्त्री से) मेरी बिल्ली को संभालने के लिए आपका शुक्रिया!

(तर्कशास्त्री घरेलू औरत को बिल्ली लौटाता है। महिला वेटर बीयर लेकर मंच पर लौट आती है।)

महिला वेटर : लीजिए, आपकी बीयर!

जां : (बेरांजे से) आपकी आदतें कभी नही सुधरेंगी।

बूढ़ा : (घरेलू औरत से) इजाजत हो तो कुछ रास्ता मैं आपके साथ चलूं?

बेरांजे : (जां से, काफी हाउस के अंदर जाती हुई महिला वेटर की ओर संकेत करते हुए) *मैंने तो खाली सोडा लाने को कहा था*···उससे गलती हो गई है।

(जां घृणा और अविश्वास से कंधे को झाड़ता है।)

घरेलू औरत : (बूढ़े से) माफ कीजिए, मेरे पतिदेव मेरा इंतजार कर रहे हैं। शुक्रिया, शायद फिर कभी!

बूढ़ा : (घरेलू औरत से) मुझे इसकी पूरी उम्मीद है, मादाम।

घरेलू औरत : (बूढे से) मुझे भी।

(उन्हें बड़े प्यार से देखकर, वह मंच के बाईं ओर चली जाती है।)

बेरांजे : धूल अब साफ हो गई है...

(जां फिर कंधे झाड़ता है।)

बूढा : (तर्कशास्त्री से, घरेलू औरत के पीछे देखते हुए) कितनी मजेदार थी!

जां : (बेरांजे से) गैंडा! मुझे तो यकीन नहीं आता!

(बूढ़ा आदमी और तर्कशास्त्री धीरे-धीरे दाईं ओर जाते है जहां से वे ओझल हो जाएंगे। वे आपस में बड़े आराम से गप-शप कर रहे हैं।)

बूढ़ा : (तर्कशास्त्री से, घरेलू औरत पर अंतिम बार प्यार भरी दृष्टि डालने के बाद) बडी प्यारी है, है न?

तर्कशास्त्री : (बूढे आदमी से) मैं आपको सिलोजिज्म क्या होती है, यह समझाने जा रहा हू।

बूढा : अरे हां! सिलोजिज्म!

जां : (बेरांजे से) यकीन नही आता। यह तो बिलकुल नामुमकिन है।

(बेरांजे जमुहाई लेता है।)

तर्कशास्त्री : (बूढे से) सिलोजिज्म में एक मुख्य प्रस्ताव होता है, एक गौण प्रस्ताव होता है और एक होता है निष्कर्ष।

बूढा : कैसा निष्कर्ष?

(तर्कशास्त्री और बूढा मंच से चले जाते है।)

जां : नही, मुझे यकीन नहीं आता।

बेरांजे : (जा से) जाहिर है, आपको यकीन नही आ रहा। यह गैंडा ही था...और क्या? गैंडा ही तो था!...दूर निकल गया...दूर निकल गया...

जां : पर...देखिए...ऐसा कभी होता नही। शहर मे एक गैंडा खुले आम घूम रहा है, और आप हैरान नही? ऐसा होने

देना चाहिए ! (बेरांजे जमुहाई लेता है।) मुंह के सामने हाथ तो रख लीजिए !···

बेरांजे : हां···आ···ऐसा होने नही देना चाहिए। यह खतरनाक है। यह बात मेरे दिमाग में नहीं आई थी। आप घबराइए नही, अब वह हमें कुछ नही कहेगा।

जां : हमें कमेटी से शिकायत करनी चाहिए। आखिर कमेटी होती किसलिए है ?

बेरांजे : (जमुहाई लेते हुए, तब जल्दी से हाथ मुंह के आगे ले जाकर) ओह ! माफ कीजिए···हो सकता है यह गेंडा चिडियाघर से भागा हो !

जां : आप खड़े-खड़े ख्वाब देख रहे हैं !

बेरांजे : मैं तो बैठा हुआ हूं।

जां : खड़े होना या बैठे होना, बात एक ही है।

बेरांजे : फिर भी कुछ फर्क तो है।

जां : मेरा यह मतलब नही था।

बेरांजे : आपने ही तो अभी-अभी कहा है कि बात एक ही है—खड़े होना या बैठे होना···

जां : आप मेरी बात गलत समझे। खड़े होना या बैठे होना—बात एक ही है, जब ख्वाब देख रहे हो !

बेरांजे : तो ठीक है, मैं ख्वाब देख रहा हूं···जिंदगी एक ख्वाब है।

जां : (बात जारी रखते हुए) आप ख्वाब देख रहे हैं जब आप कहते हैं कि यह गेंडा चिड़ियाघर से भागा है···

बेरांजे : मैंने कहा था—*शायद*···

जां : (बात जारी रखते हुए) क्योंकि हमारे शहर में तब से कोई चिड़ियाघर नही है जब से सारे जानवर एक प्लेग मे मर गए···बहुत साल पहले···

बेरांजे : (उसी उदासीनता के साथ) तब, शायद यह सर्कस से आया हो ?

जां : *किस सर्कस के बारे मे आप बात कर रहे हैं ?*

बेरांजे : पता नहीं···कोई घूमने वाला सर्कस !

जां : आप अच्छी तरह जानते हैं कि कमेटी ने सभी खानाबदोश मदारियों के इस शहर में आने पर पाबंदी लगा रखी है··· हमारे बचपन से ऐसे कोई लोग इधर नहीं आए।

बेरांजे : (जमुहाई रोकने की पूरी कोशिश करता है लेकिन सफल नहीं होता) तो फिर हो सकता है यह उन्हीं दिनों से शहर के आसपास के जंगल की दलदल में छिपा हुआ था ?

जां : (आवेश में आकर हाथ झटकते हुए) आसपास के जंगल की दलदल ! आसपास के जंगल की दलदल ! भाई साहब, आप बुरी तरह शराब के नशे में धुत्त हैं।

बेरांजे : (सादगी से) यह सच है। नशे का कोहरा मेरे पेट से उठ रहा है।

जां : और यह आपके दिमाग पर छा रहा है। कहा देखी आपने आसपास के जंगल की दलदल ? और हमारा इलाका इतना रेतीला है कि लोग इसे 'रेगिस्तान' कहते हैं।

बेरांजे : (तंग आकर और काफी थके हुए) तो फिर मुझे क्या पता ? शायद किसी पत्थर के पीछे छिप रहा था ? शायद किसी सूखी टहनी पर घोंसला बनाए हुए था ?···

जां : यदि आप समझते हैं कि आप अच्छा हंसी-मजाक कर लेते हैं तो यह आपकी गलतफहमी है, आप मुझे बोर कर रहे हैं···अपनी उल्टी-सीधी बातों से। मैं समझता हूं कि समझदारी से बात करना आपके बस का है नहीं !

बेरांजे : आज, सिर्फ आज···क्योंकि···क्योंकि मुझे···(किसी तरह हाथ ऊपर उठाकर सिर की ओर इशारा करता है।)

जां : आज ही क्यों, हमेशा ऐसे होता है !

बेरांजे : फिर भी, इतना नहीं !

जां : आपके हंसी-मजाक में जान नहीं होती !

बेरांजे : मैं बनने की कोशिश नहीं कर रहा···

जां : (बात काटते हुए) मुझे कतई पसंद नही कि कोई मुझे मूर्ख बनाए।

बेरांजे : (अपने दिल पर हाथ रखते हुए) जां साहब, मैं ऐसी गुस्ताखी नही कर सकता···

जां : (बात काटते हुए) बेरांजे साहब, आप यही तो कर रहे हैं···

बेरांजे : नही, बिलकुल नही, मैं ऐसा तो नही कर रहा।

जां : क्या बात करते हैं, आपने यही तो किया है !

बेरांजे : लेकिन आप कैसे कह सकते हैं कि···?

जां : (बात काटते हुए) जो है मैं वही कहता हूं !

बेरांजे : मैं आपको यकीन दिलाता हूं···

जां : (बात काटते हुए) ···कि आप मुझे बेवकूफ बना रहे हैं !

बेरांजे : आप तो सचमुच बड़े जिद्दी हैं।

जां : मतलब यह हुआ कि अब आप मुझे गधा भी कह रहे हैं। आपने देखा कि आप कैसे मेरा अपमान कर रहे हैं।

बेरांजे : मेरे दिमाग में तो ऐसी बात आ ही नही सकती।

जां : आपका दिमाग है कहां !

बेरांजे . तभी तो कह रहा हूं कि मेरे दिमाग मे ऐसी बात आ ही नही सकती।

जां · कुछ चीजें ऐसी हैं जो उनके दिमाग में भी आती हैं जिनके दिमाग नही होता।

बेरांजे · यह नामुमकिन है।

जा : नामुमकिन कैसे ?

बेरांजे : क्योंकि यह नामुमकिन है।

जां : तो फिर मुझे समझाइए कि यह नामुमकिन क्यों है क्योंकि आप हर चीज को समझाने का दावा करते हैं···

बेरांजे : मैंने तो ऐसा दावा कभी नही किया।

जां : तो फिर आप बनते क्यों हैं ? मैं फिर पूछना चाहता हूं कि आप मेरा अपमान क्यो कर रहे हैं ?

बेरांजे : मैं आपका अपमान नहीं कर रहा। उलटे आपको पता है कि मैं आपकी कितनी इज्जत करता हूं।

जां : अगर ऐसा है तो फिर आप क्यों मेरी बात मानने से इनकार करते हैं कि किसी गेंडे को शहर के बीच इस तरह दौड़ने देना खतरनाक है—खासकर एक इतवार की सुबह जब गलियां बच्चों से भरी होती हैं···और बड़ों से भी···

बेरांजे : उनमें से काफी तो चर्च मे होते हैं। उन्हें कोई खतरा नहीं···

जां : (बात काटते हुए) मुझे बोलने दीजिए···और वह भी जब बाजार खुला है···

बेरांजे : मैंने यह तो कभी नहीं कहा कि किसी गेंडे को इस तरह खुला छोड़ना खतरनाक नहीं है। मैंने तो सिर्फ यह कहा कि ऐसे खतरे पर मैंने विचार नहीं किया। ऐसा तो मेरे दिमाग में आया ही नहीं।

जां : आपके दिमाग में तो कभी कुछ आता ही नहीं।

बेरांजे : अच्छा, ठीक है। किसी गेंडे का खुला घूमना अच्छी बात नहीं है।

जां : ऐसा तो होना ही नहीं चाहिए !

बेरांजे : ठीक है ! ऐसा तो होना ही नहीं चाहिए। वैसे भी, यह तो पागलपन है। ठीक है···लेकिन इसका मतलब यह तो नहीं कि आप इस जंगली जानवर के लिए मुझसे झगड़ा करें। दैववश एक चौपाया हमारे सामने आ गया, और आप मुझ पर बरस पड़े ?

एक अधम चौपाया, जो बात करने के योग्य भी नहीं ! और खतरनाक भी···और जो गायब भी हो गया, जो अब है ही नहीं। हम उस जानवर के बारेमें माथा-पच्ची क्यों करें जो है ही नहीं। आइए, किसी और विषय पर बातचीत की जाए, जां साहब, किसी और विषय पर

बातचीत के लिए विषयों की कमी नहीं··· (जमुहाई लेता है, फिर अपना गिलास उठाता है।) चीअर्स !

(उसी क्षण तर्कशास्त्री और बूढ़ा दाईं ओर से मंच पर फिर आते हैं। बातें करते हुए वे दोनों कॉफी हाऊस की एक मेज़ पर बेरांजे और जा से थोड़ी दूर, उनके पीछे और दाईं ओर जाकर बैठेंगे।)

जां : गिलास को मेज़ पर ही पड़ा रहने दीजिए। आप पीएंगे नहीं।

(जां अपनी बीयर से एक बडा घूट भर गिलास को आधा खाली करते हुए मेज पर रखता है। बेरांजे अब भी अपने गिलास को हाथ मे थामे हुए है। वह न तो इसे मेज़ पर रख रहा है और न ही इसमें से घूट भरने का साहस कर रहा है।)

बेराजे : मैं इसे वेटर के लिए थोड़े ही छोड़ूंगा। (वह गिलास को मुंह की ओर ले जाता है।)

जां : इसे नीचे रख दीजिए, मैंने कहा न।

बेराजे : ठीक है··· (जैसे ही वह गिलास मेज पर रखना चाहता है, डेज़ी वहां से गुजरती है। वह एक सुनहरे बालों वाली नवयुवती है जो टाईपिस्ट का काम करती हैं। वह मंच को दाईं और से बाईं ओर जाकर पार करती है। उसे देखते ही बेराजे हड़बड़ाकर उठ खड़ा होता है और ऐसा करते समय अनाड़ीपन में उससे गिलास गिर जाता है और जा की पेंट भीग जाती है)

अरे ! डेज़ी !

जां : जरा ध्यान से। आप तो सचमुच अनाड़ी हैं !

बेरांजे : वह डेज़ी है···मुझे माफ कीजिए···

(बेराजे छिपने चले जाता है ताकि डेज़ी उसे देख न पाए) मैं नहीं चाहता कि वह मुझे देखे···इस हालत मे।

एहसास बना रहता है जैसे कि यह शीशे का बना हो, या फिर किसी दूसरे आदमी को अपनी पीठ पर लादे लिए जा रहा हूं। मैं अपने आपको नही जान पाया। मैं नही जानता कि क्या मैं, सचमुच मैं हूं। जैसे ही मैं थोड़ी लेता हूं, बोझ उतर जाता है और मैं अपने आपको पहचानने लगता हूं, मैं सचमुच मैं हो जाता हूं।

जा : यह तो सरासर पागलपन है! बेरांजे साहब, मुझे ही लीजिए। मेरा बोझ आपसे अधिक है फिर भी मैं अपने आपको हलका, हलका, हलका महसूस करता हूं।

(वह अपनी बांहों को फैलाकर ऐसे हिलाता है मानो उड़ने को तैयार हो। बूढ़ा और तर्कशास्त्री मंच पर वापस आकर अपनी बातचीत में तल्लीन कुछ कदम चलते हैं। ठीक इसी समय वे बेरांजे और जां के पास से गुजर रहे हैं। जां की एक बांह बूढ़े को जोर से जा लगती है जिसके कारण वह तर्कशास्त्री की बांहों में जा गिरता है)

तर्कशास्त्री : (चर्चा जारी रखते हुए) सिलोजिज्म का एक उदाहरण··· (उसे टक्कर लगती है।) ओह! ···

बूढ़ा : (जा से) जरा देखकर। (तर्कशास्त्री से) माफ कीजिए।

जा : (बूढ़े से) माफ कीजिए।

तर्कशास्त्री : (जां से) कोई बात नही।

बूढ़ा : (जां से) कोई बात नहीं।

(बूढ़ा और तर्कशास्त्री कॉफी हाउस की एक मेज के पास जाते हैं, जां और बेरांजे के थोड़ा दाईं तरफ तथा पीछे बैठ जाते हैं।)

बेरांजे : (जां से) आपमें ताकत है।

जां : हां, मुझमें ताकत तो है। मुझमे ताकत होने के कई कारण हैं। सबसे पहले मुझमे ताकत है क्योंकि मुझमें ताकत है और दूसरे, मुझमें ताकत है क्योंकि मुझमें कर गुजरने की

ताकत है। मुझमें इसलिए भी ताकत है क्योंकि मैं शराबी नहीं हूं। मैं आपका अपमान नहीं करना चाहता, बेरांजे साहब, लेकिन मुझे कहना ही पड़ेगा कि असल में यह शराब है जो आपकी बेचैनी का कारण है।

तर्कशास्त्री : (बूढ़े आदमी से) सिलोजिज्म का एक सुन्दर उदाहरण पेश है। बिल्ली के चार पंजे होते है। इज़ीदोर और फ़ीको, दोनों के चार-चार पंजे हैं। इसलिए इज़ीदोर और फ़ीको दोनों बिल्लियां हैं।

बूढा : (तर्कशास्त्री से) मेरे कुत्ते के भी चार पंजे हैं।

तर्कशास्त्री : (बूढ़े आदमी से) तब वह भी बिल्ली है।

बेरांजे : (जां से) मेरे पास तो मुश्किल से ज़िंदा रहने के लिए ताकत है। हो सकता है कि इससे ज़्यादा के लिए मैं महसूस भी नहीं करता।

बूढ़ा : (तर्कशास्त्री से, बहुत सोच-विचार के बाद) तब, तर्क के अनुसार मेरा कुत्ता बिल्ली होगा।

तर्कशास्त्री : (बूढ़े से) तर्क के अनुसार, हां। लेकिन इसका उलटा भी सच है।

बेरांजे : (जां से) अकेलापन मुझे काटता है। लोगों का साथ भी।

जां : (बेरांजे से) अपनी बात आप खुद ही काट रहे हैं। आपको अकेलापन काटता है कि भीड़? आप अपने आपको फिलासफर समझते हैं और आपके पास तर्क बिलकुल नहीं।

बूढा : (तर्कशास्त्री से) तर्कशास्त्र है बहुत सुन्दर।

तर्कशास्त्र : (बूढ़े से) यदि इसे बहुत अधिक न खींचा जाए।

बेरांजे : (जां से) जीना एक अजीब क्रिया है।

जां : इसके उलटे इस जैसी कुदरती क्रिया कोई और है नहीं। इसका सबूत है; हर कोई जीता है।

बेरांजे : जीने वालों की अपेक्षा मरे हुओं की संख्या कहीं बहुत ज्यादा है। इनकी संख्या बढ़ रही है। जीने वाले दुर्लभ हैं।

जां : मरे हुए, वे तो होते ही नहीं, हो भी कैसे ! ···हा···

हा ! ··· (ऐसे हंसता है जैसे उसने बहुत बड़ी बात कह दी हो।) तो क्या वे भी आप पर बोझ डाले हुए हैं ? जो हैं ही नहीं, वे आप पर बोझ कैसे डाल सकते हैं ?

बेराजे : मैं खुद हैरान हूं कि क्या मैं जिंदा हूं ?

जां : (बेराजे से) आप जिंदा नहीं हैं, साहब, क्योंकि आप सोचते नहीं ! सोचिए, और आप जीने लगेंगे।

तर्कशास्त्री : (बूढ़े से) एक और सिलोजिज्म सभी बिल्लियां मरणशील हैं। सुकरात मरणशील है । इसलिए सुकरात बिल्ली है।

बूढ़ा : और उसकी चार टांगें हैं। यह सच है। मेरा एक बिलाव है जिसका नाम सुकरात है।

तर्कशास्त्री : देखा आपने···

जां : (बेरांजे से) आप एक जोकर हैं···सचमुच झूठे हैं। आप कहते हैं कि आपको जीने में कोई दिलचस्पी नहीं। फिर भी कोई एक है जो आपको दिलचस्प लग रहा है।

बेरांजे : कौन ?

जां : आपके साथ दफ्तर में काम करने वाली वह छबीली लड़की जो अभी इधर से गुजर कर गई। आप उसे चाहते हैं !

बूढ़ा : (तर्कशास्त्री से) तो फिर, सुकरात एक बिल्ली था।

तर्कशास्त्री : (बूढ़े से) तर्कशास्त्र ने तो हमारे सामने अभी-अभी यही सिद्ध किया है।

जां : (बेरांजे से) आप नहीं चाहते थे कि वह आपको इस बुरी हालत में देखे। (बेरांजे विरोध की मुद्रा में) इससे स्पष्ट है कि आप हरेक चीज से विरक्त नहीं हैं। लेकिन आप कैसे सोचते हैं कि डेज़ी एक पियक्कड़ के जाल में फंस जाएगी ?

तर्कशास्त्री : (बूढ़े से) हम अपनी बिल्लियों पर लौट आएं।

बूढ़ा : (तर्कशास्त्री से) मैं सुन रहा हूं।

बेराजे : (जां से) चाहे कुछ भी हो, मेरा ख्याल है कि उसके दिमाग

मे पहले से ही कोई है।

जां : (बेरांजे से) कौन है वह ?

बेरांजे : ड्यूडार ! दफ्तर मे काम करता है; कानून में एम० ए० है, कानून पर लिखता भी है, कम्पनी मे वह काफी आगे बढ़ेगा, डेज़ी के दिल में भी। मैं उसका कहां मुकाबला कर सकता हूं।

तर्कशास्त्री : (बूढ़े से) इज़ीदोर नाम की बिल्ली की चार टागे है।

बूढ़ा : आपको कैसे मालूम ?

तर्कशास्त्री : हाइपोथीसिस तो यही है।

बेरांजे : (जां से) बड़ा साहब भी उससे खुश रहता है। मैं तो आगे नही बढ पाऊगा ! मैं इतना नहीं पढ़ा हूं। मेरा तो कोई चांस नही।

बूढ़ा : (तर्कशास्त्री से) अच्छा...हाइपोथीसिस से !

जां : (बेरांजे से) तो आप मैदान छोड़ रहे है...इस तरह...

बेरांजे : (जां से) और मैं क्या करूं ?

तर्कशास्त्री : (बूढे से) फ्रीको की भी चार टांगें हैं। इज़ीदोर और फ्रीको की कितनी टागें होंगी ?

बूढ़ा : (तर्कशास्त्री से) इकट्ठी या अलग-अलग ?

जां : (बेरांजे से) जीवन संघर्ष है, न लड़ना कायरता है।

तर्कशास्त्री : (बूढ़े से) इकट्ठे या अलग-अलग; यह निर्भर करता है।

बेरांजे : (जां से) मैं क्या करूं, मेरे पास लड़ने के लिए हथियार नही हैं।

जां : हथियार उठाइए, साहब, हथियार उठाइए।

बूढा : (तर्कशास्त्र से—दिमाग पर काफी ज़ोर डालने के बाद) आठ-आठ टागें।

तर्कशास्त्री : तर्कशास्त्री से आप मन-ही-मन गिनना भी सीख सकते हैं।

बूढ़ा : उसके बहुत पहलू हैं।

बेरांजे : (जां से) हथियार कहा मिलेंगे ?

तर्कशास्त्री : *(बूढ़े आदमी से) तर्कशास्त्र की कोई सीमाएं नहीं हैं !*

जां : आपके अन्दर ! आपकी इच्छा-शक्ति से !

बेराजे : कौन से हथियार ?

तर्कशास्त्री : (बूढ़े से) आप अभी देखेंगे···

जां : (बेराजे से) धैर्य और ज्ञान के हथियार, बुद्धि के हथियार। (बेरांजे···जमुहाई लेता है।) मन की प्रखर और जीवंत शक्ति जगाइए। अपटूडेट बनिए।

बेराजे : (जां से) अपटूडेट कैसे बनते हैं ?

तर्कशास्त्री : (बूढे से) मैं इन बिल्लियों में से दो टांगें निकाल लेता हूं। अब कितनी टांगें रह गईं हरेक के पास ?

बूढा : काफी मुश्किल है।

बेरांजे : (जां से) काफी मुश्किल है।

तर्कशास्त्री : (बूढे से) उलटा, यह आसान है।

बूढ़ा : (तर्कशास्त्री से) हो सकता है कि आपके लिए यह आसान हो, मेरे लिए नहीं।

बेरांजे : (जां से) हो सकता है कि आपके लिए यह आसान हो, मेरे लिए नहीं।

तर्कशास्त्री : (बूढ़े से) चलिए, सोचने की कोशिश कीजिए। दिमाग लगाइए।

जां : (बेराजे से) चलिए, सोचने की कोशिश कीजिए ! दिमाग लगाइए।

बूढा : (तर्कशास्त्री से) मेरी समझ में नहीं आता।

बेरांजे : (जां से) मेरी समझ मे बिलकुल नहीं आता।

तर्कशास्त्री : (बूढे से) आपको एक-एक चीज समझानी पड़ती है।

जां : *(बेरांजे से) आपको एक-एक चीज समझानी पड़ती है।*

तर्कशास्त्री : (बूढे से) एक कागज लीजिए। हिसाब लगाइए। इन दो बिल्लियों की दो टांगें हटा दी जाएं, तब प्रत्येक बिल्ली की कितनी टांगें रह जाएंगी ?

बूढ़ा : जरा रुकिए··· (अपनी जेब से कागज का एक टुकड़ा

निकालता है जिस पर वह हिसाब लगाता है।)

जां : तो सुनिए, आपको क्या करना है, ढंग से कपड़े पहनिए, रोज दाढ़ी बनाइए, साफ कमीज पहनिए।

बेरांजे : (जां से) ड्राइक्लीनिंग…काफी महंगी है।

जां : (बेरांजे से) शराब के पैसे बचाइए। और, बाहर जाने के लिए, हैट, टाई—इस तरह की, बढ़िया सूट, अच्छी तरह पालिश किए जूते!

(जैसे वह इन वस्तुओं की चर्चा करता है वैसे वह आत्मतुष्टिपरक ढंग से अपने हैट, टाई और जूतों की ओर संकेत करता है।)

बूढ़ा : (तर्कशास्त्री से) दो-तीन हल मुमकिन हैं।

तर्कशास्त्री : (बूढ़े से) बताइए।

बेराजे : (जां से) इसके बाद, क्या करना है? बताइए…

तर्कशास्त्री : (बूढ़े से) मैं सुन रहा हूं।

बेराजे : (जा से) मैं सुन रहा हूं।

जां : (बेरांजे से) आप थोड़ा शर्माते हैं लेकिन आपमे कुछ खूबिया भी हैं।

बेरांजे : (जा से) मुझमें? खूबियां?

जां : इनका लाभ उठाइए। समय के साथ चलिए। अपने समय की सांस्कृतिक और साहित्यिक घटनाओं की पूरी-पूरी जानकारी रखिए।

बूढ़ा : (तर्कशास्त्री से) एक हल तो है: एक बिल्ली की चार टांगें हो सकती हैं और दूसरी की दो।

बेरांजे : (जां से) मेरे पास फुर्सत का समय बहुत ही कम है।

तर्कशास्त्री : आप में खूबियां हैं, सिर्फ इनका इस्तमाल करने की जरूरत थी।

जां . जो कोई भी फुर्सत का समय मिलता है उसका फायदा उठाइए। खुद को बह मत जाने दीजिए।

बूढ़ा : इसके लिए समय कहां था? मैं सरकारी नौकर जो था।

तर्कशास्त्री : (बूढ़े से) सीखने के लिए समय हमेशा मिल सकता है।

जां : (बेरांजे से) समय तो हमेशा मिल सकता है।

बेरांजे : (जां से) अब तो समय निकल गया।

बूढ़ा : (तर्कशास्त्री से) अब तो मेरा समय निकल गया।

जां : (बेरांजे से) अभी क्या बिगड़ा है, अभी तो समय है।

तर्कशास्त्री : (बूढ़े से) अभी क्या बिगड़ा है, अभी तो समय है।

जां : (बेरांजे से) आप आठ घंटे रोज काम करते हैं, समय है। जैसे मैं करता हूं, जैसे और सब करते हैं, लेकिन इतवार को, शाम को, या फिर गर्मियों की तीन हफ्तों की छुट्टियों में ? इतना वक्त काफी है, सलीके के साथ।

तर्कशास्त्री : (बूढ़े से) फिर, दूसरे हल कहां हैं ? सलीके से, सलीके से बताइए'''। (बूढ़ा फिर हिसाब-किताब में लग जाता है।)

जां : (बेरांजे से) देखिए, शराब पीने और बीमार पड़ने की बजाए क्या यह अच्छा नहीं कि आप तरोताजा और चुस्त महसूस करें, यहां तक कि दफ्तर में भी ? और आप अपना फुर्सत का समय समझदारी के साथ बिता सकते हैं।

बेरांजे : (जां से) मतलब ?...

जां : (बेरांजे से) म्यूज़ियम में जाइए, साहित्यिक पत्रिकाएं पढ़िए, व्याख्यान सुनिए। इससे आप अपनी परेशानियों से मुक्त हो जाएंगे, इससे आपका मानसिक विकास होगा। चार हफ्ते में आप एक विद्वान आदमी बन सकते हैं।

बेरांजे : (जां से) आप ठीक कहते हैं !

बूढ़ा : (तर्कशास्त्री से) एक बिल्ली की पांच टांगें हो सकती हैं...

जां : (बेरांजे से) आप खुद ही ऐसा कह रहे हैं।

बूढ़ा : (तर्कशास्त्री से) और दूसरी बिल्ली की एक टांग। लेकिन तब, क्या इन्हें बिल्लियां कह सकते हैं ?

तर्कशास्त्री : (बूढ़े से), क्यों नहीं ?

जां : (बेरांजे से) अपनी सारी बचत शराब में उड़ा देने की बजाए क्या कोई दिलचस्प नाटक देखने थियेटर की टिकट खरीदना ज्यादा अच्छा न होगा ? क्या आपको न्यू थियेटर के बारे में कुछ पता है जिसकी आजकल बहुत चर्चा हो रही है ! योनेस्को के नाटक देखे हैं आपने ?

बेरांजे : (जां से) देखे नही, सिर्फ सुना है उनके बारे में।

बूढ़ा : (तर्कशास्त्री से) आठ टांगों में से दो निकाल लेने के बाद, इन दो बिल्लियो मे से···

जां : (बेरांजे से) आजकल उसका एक नाटक चल रहा है। इसका फायदा उठाइए।

बूढ़ा : (तर्कशास्त्री से) हमें एक छह टांगों वाली बिल्ली मिल सकती है···

बेरांजे : यह हमारे समय के कलात्मक जीवन का एक अनूठा परिचय होगा।

बूढ़ा : (तर्कशास्त्री से) और एक बिल्ली एकदम बिना टांगों के।

बेरांजे : आप ठीक कहते हैं, ठीक कहते हैं। जैसा कि आपने कहा, मैं अपने आप को बनाऊंगा।

तर्कशास्त्री : (बूढ़े से) उस हालत में, एक बिल्ली तो किस्मत वाली होगी।

बेरांजे : (जां से) इसका मैं आपको यकीन दिलाता हू।

जां : यकीन तो आप खुद को दिलाइए, असल बात तो यह है।

बूढ़ा : और एक बिल्ली जिसकी कोई टांग नही, बदकिस्मत ?

बेरांजे : मैं पूरी गंभीरता से कसम खाता हूं कि मैं अपना वचन निभाऊंगा।

तर्कशास्त्री : यह इन्साफ नहीं होगा। इसलिए यह तर्कसम्मत नही होगा।

बेरांजे : (जां से) शराब पीने की बजाय मैं अपने मन का विकास करने का फैसला लेता हूं। मैं अभी से ही अच्छा महसूस करने लगा हूं। मेरा दिमाग अभी से ही साफ होने लगा

जां : देखा आपने ?

बूढ़ा : (तर्कशास्त्री से) तर्कसम्मत नहीं होगा ?

बेरांजे : अब दोपहर बाद मैं नगरपालिका के म्यूजियम जाऊंगा। आज शाम के लिए मैं थिएटर की दो टिकटें खरीदता हूं। चलेंगे आप मेरे साथ ?

तर्कशास्त्री : (बूढ़े से) क्योंकि न्याय तर्कशास्त्र ही है।

जां : (बेरांजे से) धीरज रखना पड़ेगा। आपके नेक इरादे चलते रहने चाहिए।

बूढ़ा : (तर्कशास्त्री से) मैं समझ गया। न्याय···

बेरांजे : (जां से) मैं आपको वायदा देता हूं, अपने आप से वायदा करता हूं। दोपहर बाद मेरे साथ म्यूजियम चलिएगा ?

जां : (बेरांजे से) आज दोपहर बाद तो मैं आराम करूंगा, यह मेरे प्रोग्राम में है।

बूढ़ा : (तर्कशास्त्री से) न्याय, यह तर्कशास्त्र का एक और पहलू है।

बेरांजे : (जां से) लेकिन शाम को थिएटर चलना तो मंजूर है न ?

जां : नहीं, आज नहीं।

तर्कशास्त्री : (*बूढ़े से*) *आपका दिमाग रोशन हो रहा है।*

जां : (बेरांजे से) मैं चाहता हूं कि आप अपने नेक इरादों पर डटे रहें। लेकिन आज शाम मुझे कुछ मित्रों से मिलना है, कॉफी बार में।

बेरांजे : बार मे ?

बूढ़ा : (तर्कशास्त्री से) और फिर, एक बिल्ली जिसकी टांगें बिलकुल नहीं हैं···

जां : (*बेरांजे से*) *मैंने वहीं पहुंचने का वायदा किया है। मैं वायदे का पक्का हूं।*

बूढ़ा : (तर्कशास्त्री से) ···इतनी तेजी से नहीं भाग सकेगी कि चूहे पकड़ सके।

बेरांजे : (जां से) वाह, साहब। अब आपकी बारी है बुरा रास्ता

दिखाने की । आप नशा करने जा रहे हैं ।

तर्कशास्त्री : (बूढ़े से) आप तर्कशास्त्र मे काफी अच्छी तरक्की कर रहे है ।

(अब तेज़ी से पास आती हुई एक गैंडे की चौकड़ी भरने की आवाज़, चिंघाड़ने की आवाज़, जल्दी में पैर पटकने की आवाज़, उसकी ज़ोर से चल रही सांस की आवाज़, फिर से सुनाई देने लगती है। लेकिन इस बार ये आवाज़ें उलटी ओर से आ रही हैं, मंच के पिछले हिस्से से मच के अगले हिस्से की ओर, मच के बाईं ओर के पार्श्व मे ।)

जां : (ताव में आकर, बेरांजे से) देखिए साहब, एक-आध बार का मतलब आदत नहीं होता। आपका कोई मुकाबला नही। क्योंकि आप···आप···आपकी बात ही और है···

बेरांजे : (जां से) क्यों, मेरी और बात क्यों है ?

जां : (चिल्लाते हुए ताकि उसकी आवाज़ को पीछे से आते शोर में भी सुना जा सके।) मैं शराबी नहीं हूं, मैं।

तर्कशास्त्री : (बूढ़े से) टांगें न होने की हालत में भी बिल्ली को चूहे तो पकड़ते हैं। यह उसके स्वभाव में है।

बेरांजे : (ज़ोर से चिल्लाकर) मेरा मतलब यह नहीं है कि आप पियक्कड़ हैं, लेकिन इस तरह की हालत मे मैं पियक्कड़ हू और आप नहीं, ऐसा क्यों ?

बूढ़ा : (तर्कशास्त्री से ज़ोर से चिल्लाकर) क्याहै बिल्ली के स्वभाव में ?

जां : (बेरांजे से, उसी आवाज़ मे) क्योंकि सवाल संतुलन का है। मैं एक संतुलित आदमी हू, आपकी तरह नही।

तर्कशास्त्री : (बूढ़े से कान के पीछे हाथ रखकर) आप क्या कह रहे है ? (काफी ऊंचा शोर जो इन बातों पर छा गया है।)

बेरांजे : (कान के पीछे हाथ रखकर, जां से) क्या मेरी तरह नही, क्या, आप क्या कह रहे हैं ?

जां : (गला फाड़ कर) मैं कह रहा हूं कि…

बूढ़ा : (गला फाड़ कर) मैं कह रहा हूं कि…

जां : (शोरगुल के प्रति सचेत होते हुए जो बहुत पास आ गया है।) यह… यह क्या है ?

तर्कशास्त्री : यह…यह क्या हो रहा है ?

जां : (उठता है, और इस प्रक्रिया मे उसकी कुर्सी नीचे गिर जाती है। बाएं पार्श्व में देखता है जहां से भागते हुए गेंडे का शोर आ रहा है।) अरे ! गेंडा।

तर्कशास्त्री : (उठता है, उसकी कुर्सी पीछे गिर जाती है।) अरे गेंडा !

बूढा : (वही अभिनय) अरे ! गेंडा !

बेरांजे : (अभी बैठा है लेकिन इस बार थोड़ा सजग है।) गेंडा ! दूसरी तरफ से।

महिला वेटर : (एक ट्रे में गिलासों के साथ बाहर आकर) यह क्या है ? अरे ! गेंडा !

(उसके हाथ से ट्रे गिर जाती है, सारे गिलास टूट जाते हैं।)

मालिक : (कॉफी हाउस से बार आते हुए) क्या बात है ?

महिला वेटर : (मालिक से) गेंडा !

तर्कशास्त्री : एक गेंडा सामने की पटरी पर फनफनाता जा रहा है !

पंसारी : (अपनी दुकान से बाहर आकर) अरे, गेंडा !

जां : अरे गेंडा !

पंसारी की बीवी : (दुकान के ऊपर की मंजिल की खिड़की से सिर बाहर निकालकर) अरे, गेंडा !

मालिक : (महिला वेटर से) इसका मतलब यह नहीं कि गिलास तोड़ दो।

जां : सीधा भागा जा रहा है पटरी पर रखे सामान से रगड़ खाते हुए !

डेज़ी : (बाईं ओर प्रवेश करते हुए) अरे, गेंडा !

बेरांजे : (डेज़ी को देखकर) अरे, डेज़ी ?

(भागते हुए लोगों का शोर…पहले की तरह 'ओह्', 'आह्' के स्वर)

महिला वेटर : कमाल है !

मालिक : (महिला वेटर से) यह नुकसान आपको भरना पड़ेगा। (बेरांजे छिपने की कोशिश करता है ताकि डेज़ी उसे देख न सके। बूढ़ा, तर्कशास्त्री और पसारी मंच के मध्य में आ जाते हैं और एक साथ कहते हैं, पंसारी की बीवी खिड़की से बोलती है।)

सभी : कमाल है।

ां और बेरांजे : कमाल है !

(दिल को छू लेने वाली बिल्ली की 'म्याऊं' सुनी जाती है, उसके बाद, इसी तरह दिल को छू लेने वाली महिला की चीख।)

सभी : अरे !

(लगभग इसी समय, और जैसे ही शोर तेजी से विलीन हो रहा है, वही घरेलू औरत मंच पर आती है। उसके साथ में टोकरी नहीं है, लेकिन वह अपनी बिल्ली की खून से लथपथ लाश अपनी बांहों मे उठाए हुए है।)

घरेलू औरत : (रुआंसी) मेरी बिल्ली को मार डाला, मेरी बिल्ली को मार डाला।

महिला वेटर : इसकी बिल्ली को मार डाला !

(पसारी की बीवी खिड़की में से, पंसारी, बूढ़ा, डेज़ी और तर्कशास्त्री घरेलू औरत के पास आकर सभी कहते है :)

सभी : बहुत बुरा हुआ, बेचारी बिल्ली !

बूढ़ा : बेचारी बिल्ली !

डेज़ी और
महिला वेटर : बेचारी बिल्ली !

पंसारी
उसकी
बीवी : बेचारी बिल्ली !
बूढा
तर्कशास्त्री :

मालिक : (महिला वेटर से, टूटे हुए गिलासों और गिरी हुई कुर्सियों की ओर संकेत करते हुए) क्या कर रही हैं ? यह सब ठीक कीजिए।

(अब जां और वेराजे घरेलू औरत की ओर जल्दी-जल्दी जाते हैं जो अपनी मरी हुई बिल्ली को बांहो में थामे विलाप कर रही है।)

महिला वेटर : (टूटे गिलास और कुर्सियां उठाने के लिए कॉफी हाउस के बाहर खुली जगह की ओर जाते हुए और साथ ही पीछे मुडकर घरेलू औरत को देखते हुए।) ओह अरे ! बेचारी बिल्ली !

मालिक : (महिला वेटर को टूटे गिलास और गिरी हुई कुर्सियों की ओर संकेत करते हुए।) उधर ! उधर !

बूढा : (पंसारी से) आप इस बारे में क्या कहेंगे ?

बेरांजे : (घरेलू औरत से) रोए नही, मादाम, आप तो हमारा दिल चीर रही हैं।

डेज़ी : (बेरांजे से) बेराजे साहब···आप यहा थे ? आपने देखा ?

बेराजे : (*डेज़ी से*) *हैलो, मिस डेज़ी, मुझे शेव करने का समय नही* मिला, माफ कीजिए कि···

मालिक : (कांच के टुकड़ों की सफाई का निरीक्षण करते हुए और घरेलू औरत को सरसरी निगाह से देखते हुए) बेचारी बिल्ली !

महिला वेटर : (घरेलू औरत की ओर पीठ किए कांच के टुकड़े उठाते हुए) बेचारी बिल्ली ! (ये सभी वाक्य बड़ी तेज़ी से कहे जाने चाहिए, लगभग एक साथ।)

पंसारी की बीवी : (खिड़की से) यह तो अंधेर है !

जा : यह तो अंधेर है !

घरेलू औरत : (विलाप करते हुए तथा मरी बिल्ली को अपने हाथों में झुलाते हुए) मेरी प्यारी मुनमुन, बेचारी मुनमुन !

बूढ़ा : (घरेलू औरत से) अच्छा होता यदि आपसे दुबारा मुलाकात किसी और हालत में होती !

तर्कशास्त्री : (घरेलू औरत से) क्या किया जा सकता है, मादाम, सभी बिल्लियों को एक न एक दिन मरना है। सहन तो करना पड़ता है।

घरेलू औरत : (रोते हुए) मेरी बिल्ली, मेरी बिल्ली, मेरी बिल्ली।

मालिक : (महिला वेटर से जिसके एप्रन की झोली कांच के टुकड़ों से भरी है।) जाइए, इसे कूड़ादान में फेंकिए। (मालिक ने कुर्सियां उठाकर सीधी कर दी हैं।) आपको एक हजार फ्रांक भरने होंगे।

महिला वेटर : (कॉफी हाउस में प्रवेश करते हुए, मालिक से) आप तो हमेशा पैसों की ही सोचते रहते हैं।

पंसारी की बीवी : (घरेलू औरत से, खिड़की से) शान्त हो जाइए, मादाम !

बूढ़ा : (घरेलू औरत से) शांत हो जाइए, मादाम !

पंसारी की बीवी : (खिड़की से) जो भी हो, है तो बड़े दुख की बात !

घरेलू औरत : मेरी बिल्ली, मेरी बिल्ली, मेरी बिल्ली।

डेज़ी : हां, जो भी हो, है तो बड़े दुख की बात।

बूढ़ा : (घरेलू औरत को सहारा देते हुए और उसे पटरी पर पड़ी कॉफी हाउस की एक मेज़ की ओर ले जाते हुए। बाकी सभी उसके पीछे चलते हैं।) यहां बैठ जाइए, मादाम !

जां : (बूढ़े से) आप इस बारे में क्या कहेंगे ?

पंसारी : (तर्कशास्त्री से) आप इस बारे में क्या कहेंगे ?

पसारी की बीवी : (डेज़ी से, खिड़की से) आप इस बारे में क्या कहेंगी ?

मालिक : (महिला वेटर से, जो फिर मंच पर आती है जबकि रोती हुई घरेलू औरत को पटरी पर पड़ी एक कुर्सी पर बिठाया जा रहा है। वह अभी भी अपनी मरी हुई बिल्ली को झुला रही है।) एक गिलास पानी, मादाम के लिए।

बूढ़ा : (घरेलू औरत से) आप बैठ जाइए, मादाम !

जां : बेचारी !

पंसारी की बीवी : (खिडकी से) बेचारी बिल्ली !

बेरांजे : (महिला वेटर से) ब्रांडी देना बेहतर होगा।

मालिक : (महिला वेटर से) एक ब्रांडी ! (बेरांजे की ओर संकेत करते हुए) साहब देंगे इसके पैसे !

(महिला वेटर, कॉफी हाउस में जाते हुए)

महिला वेटर : ठीक है, एक ब्रांडी।

घरेलू औरत : (सिसकियां भरते हुए) मुझे नहीं चाहिए, मुझे नहीं चाहिए !

पंसारी : पहले भी यह गैंडा मेरी दुकान के आगे से गुजर चुका है।

जां : (पंसारी से) यह वह नहीं था !

पंसारी : (जां से) लेकिन···

पंसारी की बीवी : हां, हां वही था।

डेज़ी : क्या यह दूसरी बार है कि यह गैंडा इधर से गुज़रा ?

मालिक : मेरा ख्याल है कि यह वही था।

जां : नहीं, यह वह गैंडा नहीं था। पहले वाले के नाक पर दो सींग थे। वह था एशियाई गैंडा। दूसरे का एक सींग था, यह था अफ्रीकी गैंडा !

(महिला वेटर ब्रांडी का गिलास लिए मंच पर आती है, इसे घरेलू औरत को देती है।)

बूढ़ा : थोड़ी ब्रांडी दीजिए। आप ठीक महसूस करने लगेंगी।
घरेलू औरत : (रोते हुए) नहीं···ईं···ईं···
बेरांजे : (अचानक खीझ कर, जां से) आप बेतुकी बातें करते हैं। सींगों में फर्क आपने कैसे देख लिया? यह जानवर इतनी तेज़ी से गुज़रा था कि इसे कोई ठीक से देख भी नहीं पाया···
डेज़ी : (घरेलू औरत से) ले लीजिए, आपके लिए अच्छी रहेगी!
बूढ़ा : (बेरांजे से) यह सच है, वह तेज़ी से भाग रहा था।
मालिक : (घरेलू औरत से) पीकर तो देखिए, बढ़िया है।
बेरांजे : (जां से) आपके पास सींग गिनने का समय कहां था···
पंसारी की बीवी : (महिला वेटर से, खिड़की से) इसे जबरदस्ती पिलाइए!
बेरांजे : (जां से) और फिर वह उड़ती हुई धूल में घिरा हुआ था···
डेज़ी : (घरेलू औरत से) पी लीजिए, मादाम।
बूढ़ा : (घरेलू औरत से) थोड़ी सी, माई डियर मादाम···हिम्मत रखिए···

(महिला वेटर गिलास को घरेलू औरत के ओठों से लगाकर उसे पिलाती है, घरेलू औरत पहले तो न पीने का नाटक करती है लेकिन बाद में पी लेती है।)

महिला वेटर : शाबाश!
पंसारी की बीवी और डेज़ी : (खिड़की से) शाबाश!
जां : (बेरांजे से) मुझ पर तो कोई कोहरा नहीं छाया हुआ। मैं फौरन हिसाब लगा लेता हूं, मेरा दिमाग बड़ा साफ है।
बूढ़ा : (घरेलू औरत से) पहले से अच्छी हैं न?
बेरांजे : (जां से) क्या बात करते हैं, वह तो सिर झुकाए भाग रहा था।

मालिक : (घरेलू औरत से) अच्छी थी, है न !

जां : (बेरांजे से) तभी तो उसे अच्छी तरह देखा जा सकता था।

घरेलू औरत : (पी लेने के बाद) मेरी बिल्ली !

बेरांजे : (खीझकर, जां से) बकवास ! कोरी बकवास !

पंसारी की बीवी : (घरेलू औरत से, खिड़की से) मेरे पास एक और बिल्ली है, अगर आपको चाहिए।

जां : (बेरांजे से) क्या कहा ? आपका मतलब है कि मैं कोरी बकवास कर रहा हूं ?

घरेलू औरत : (पंसारी की बीवी से) मुझे नहीं चाहिए दूसरी बिल्ली !
(फफक-फफक कर रोती है, बिल्ली को हाथ में झुलाते हुए)

बेरांजे : (जां से) हां, बिल्कुल कोरी बकवास।

मालिक : (घरेलू औरत से) अब तो आपको सब्र करना ही पड़ेगा।

जां : (बेराजे से) मैं कभी बकवास नहीं करता, मैं !

बूढा : (घरेलू औरत से) थोड़ा धीरज से काम लीजिए !

बेराजे : (जा से) और आप हैं सिर्फ हेकड़ीबाज ! (थोड़ी आवाज ऊंची कर) *शेखीबाज*...

मालिक : (जां और बेराजे से) साहब ! साहब !

बेरांजे : (जां से, बात जारी रखे हुए) एक ऐसे शेखीबाज जिन्हें ज्ञान तो है लेकिन पूरी तरह से नहीं क्योंकि पहली बात तो यह है कि यह एशियाई गेंडा है जिसका एक सींग होता है और अफ्रीकी गेंडा होता है दो सींग वाला...
(सभी दूसरे पात्र घरेलू औरत को छोड़ जां तथा बेराजे के पास जमा हो जाते हैं। वे बड़ी ऊंची आवाज मे बहस कर रहे है।

जां : (बेरांजे से) आप गलत कह रहे हैं, जो ठीक है वह इसका उल्टा होता है।

घरेलू औरत : (अकेली) कितनी प्यारी थी !

बेरांजे : शर्त लगाएंगे ?
महिला वेटर : ये शर्त लगाना चाहते हैं।
डेज़ी : (बेरांजे से) ज्यादा गुस्से में न आइए, बेराजे साहब।
जां : (बेराजे से) मैं आपके साथ शर्त नहीं लगाता। अगर किसी के दो सींग हैं तो वे आपके हैं! एशियाई कहीं के!
महिला वेटर : ओह!
पंसारी की बीवी : (खिड़की से, अपने आदमी से) वे लड़ने जा रहे हैं।
पंसारी : (अपनी बीवी से) क्या बकवास करती हो, ये शर्त लगा रहे हैं!
मालिक : (जां और बेरांजे से) यहां कोई गड़बड़ नहीं करना।
बूढ़ा : अच्छा…देखें…किस गैंडे की नाक पर एक ही सींग होता है?
(पंसारी से) आप तो एक व्यापारी हैं, आपको तो पता ही होगा!
पंसारी की बीवी : (खिड़की से, अपने आदमी से) तुम्हें तो पता ही होगा!
बेरांजे : (जां से) मेरे कोई सींग नहीं है। न ही कभी होंगे!
पंसारी : (बूढ़े से) व्यापारी सब कुछ तो नहीं जान सकते!
जां : (बेरांजे से) हां, हैं!
बेरांजे : (जा से) और न ही मैं एशियाई हूं। और वैसे भी, एशियाई लोग दूसरो की ही तरह होते हैं…
महिला वेटर : हां, एशियाई लोग मेरे-आप जैसे ही होते हैं…
बूढ़ा : (मालिक से) सच कहा!
मालिक : (महिला वेटर से) आपसे कोई राय तो नहीं मांग रहा!
डेज़ी : (मालिक से) वह ठीक कहती है। वे हम जैसे ही होते हैं।
(इस सारी चर्चा के दौरान घरेलू औरत अपना विलाप जारी रखती है।)
घरेलू औरत : इतनी मखमली थी, वह हम जैसी ही थी।

जां : (आपे से बाहर होकर) वे पीले रंग के होते हैं!
(तर्कशास्त्री, घरेलू औरत और उस झुंड के बीच में खड़ा है जो जां और बेरांजे के आसपास जमा है। वह बिना कोई भाग लिए उनके वाद-विवाद को ध्यान से सुनता है।)

जा : अलविदा, सज्जनो! (बेराजे से) आपको, आपको मैं अलविदा नही कहूंगा!

घरेलू औरत : (उसी अभिनय मे) वह हमे बहुत प्यार करती थी! (सिसकती है।)

डेज़ी : सुनिए, बेरांजे साहब, सुनिए, जां साहब…

बूढ़ा : मेरे कभी एशियाई दोस्त हुआ करते थे। या शायद वे असली एशियाई नही थे…

मालिक : मेरा कुछ असली एशियाइयों से वास्ता पड़ चुका है।

महिला वेटर : (पंसारी की बीवी से) मेरा कभी एक एशियाई दोस्त हुआ करता था।

घरेलू औरत : (उसी अभिनय में) वह जब मेरे पास आई थी तो बहुत छोटी थी!

जां : (अभी भी आपे से बाहर) वे पीले रंग के होते हैं! पीले रंग के! बहुत पीले रंग के!

बेरांजे : (जां से) चाहे कुछ भी हो, आप तो लाल-सुर्ख हैं!

पंसारी की बीवी और महिला वेटर : (खिड़की से) हो ऽऽऽ!

मालिक : बात बिगड़ रही है।

घरेलू औरत : (उसी अभिनय में) वह बड़ी साफ-सुथरी थी! इधर-उधर गन्दगी नहीं डालती थी!

जां : (बेरांजे से) अगर यही बात है तो आज के बाद आप मेरा मुंह नही देखेंगे! आप जैसे बेवकूफ के साथ मैं अपना समय ही बरबाद कर रहा हूं।

घरेलू औरत : (उसी अभिनय में) वह अपनी बात समझा लेती थी !

(जां गुस्से में भरा हुआ बड़ी तेजी के साथ दाईं ओर से मंच से चला जाता है। जाने से पहले वह एक बार पीछे मुड़ता है।)

बूढ़ा : (पंसारी से) कई और एशियाई भी होते हैं—सफेद रंग के, काले रंग के, और नीले और कुछ हम जैसे भी।

जा : (बेरांजे से) पियक्कड़ कहीं का !

(सभी अवाक् होकर उसे देखते हैं।)

बेरांजे : (जां की दिशा में) आपको इस तरह बोलने का कोई हक नहीं !

सभी : (जां की दिशा में देखते हुए) होऽऽ।

घरेलू औरत : (उसी अभिनय में) सिर्फ बोल नहीं सकती थी। वैसे कोई दिक्कत नहीं थी !

डेज़ी : (बेरांजे से) आपको उसे इतना गुस्सा नहीं दिखाना चाहिए था।

बेरांजे : (डेज़ी से) इसमें मेरी कोई गलती नहीं...

मालिक : (महिला वेटर से) जाइए, इस बेचारी के लिए एक छोटा ताबूत ले आइए...

बूढ़ा : (बेरांजे से) मेरा ख्याल है कि आप ठीक कहते हैं। यह दो सींगों वाला एशियाई गैंडा होता है, एक सींग वाला अफ्रीकी...

पंसारी : वह साहब तो उलटा कह रहे थे।

डेज़ी : (बेरांजे से) आप दोनों ही गलत हैं।

बूढ़ा : (बेरांजे से) तो भी आप ठीक ही कह रहे थे।

महिला वेटर : (घरेलू औरत से) आइए, मादाम, हम इसे ताबूत में रख दें।

घरेलू औरत : (बुरी तरह सिसकियां भरते हुए) कभी नहीं ! कभी नहीं !

पंसारी : माफ कीजिए, मैं समझता हूं कि जां साहब ठीक कहते हैं

डेजी : (घरेलू औरत की ओर देखते हुए) थोड़ा समझ से काम लीजिए, मादाम।

(डेजी और महिला वेटर घरेलू औरत को उसकी बिल्ली के साथ कॉफी हाउस के दरवाजे की ओर ले जाती हैं।)

बूढ़ा : (डेजी और महिला वेटर से) मैं चलूं आपके साथ ?

पंसारी : एशियाई गेंडे का एक सींग होता है, अफ्रीकी के दो। और इसके उलटे भी सही है।

डेजी : (बूढ़े से) आप तकलीफ न कीजिए।

(डेजी और महिला वेटर घरेलू औरत को कॉफी हाउस ले जाती हैं। घरेलू औरत अब भी विलाप कर रही है।)

पंसारी की बीवी : (पंसारी से, खिड़की से) तुम भी कमाल हो। तुम्हारी बातें तो जग से न्यारी होती हैं।

बेरांजे : (थोड़ा अलग हटकर अपने आप से जबकि बाकी सब गेंडे के सींगों की चर्चा जारी रखे हैं।) डेजी ठीक कहती है, मुझे उसकी बात नहीं काटनी चाहिए थी।

मालिक : (पंसारी की बीवी से) आपका आदमी ठीक कहता है, एशियाई गेंडे के दो सींग होते हैं, अफ्रीकी के दो होंगे और इसका उल्टा भी सही है।

बेरांजे : (अपने आप से) विरोध तो उसे सहन नहीं। बात जरा सी काटी नहीं कि आग-बबूला हो उठता है।

बूढ़ा : (मालिक से) आप गलत कह रहे हैं, साहब।

मालिक : (बूढ़े से) माफ कीजिए, मैं ठीक कह रहा हूं! ...

बेरांजे : (अपने आप से) उसमें एक ही कमी है, गुस्सा बहुत आता है।

पंसारी की बीवी : (खिडकी से, बूढ़े, मालिक और पंसारी से) हो सकता है दोनों एक जैसे हों।

बेरांजे : (अपने आप से) वैसे देखा जाए, उसका दिल सोने जैसा

है। मुझ पर उसने बड़े उपकार किए हैं।

मालिक : (पंसारी की बीवी से) दूसरे के सिर्फ एक सींग होगा अगर पहले वाले के दो होते हैं।

बूढा : हो सकता है कि पहले वाले के एक हो, और दूसरे के दो।

बेरांजे : (अपने आप से) मुझे खेद है कि मैंने शांति से काम नही लिया। लेकिन वह इतना ज़िद्दी क्यों है? मैं उसे गुस्सा नही दिलाना चाहता था। (दूसरे पात्रों से) वह हमेशा ऊट-पटांग बातें करता है! हमेशा अपने ज्ञान से दूसरों पर रौब जमाना चाहता है। वह कभी नही मानता कि उससे गलती हो सकती है।

बूढा : (बेरांजे से) आप के पास सबूत हैं ?

बेराजे : किस बात के ?

बूढा : इस बात के जो आप ने थोड़ी देर पहले कही थी जिसके कारण आप और आप के दोस्त में बेकार की तू तू-मैं मैं शुरू हो गई।

पंसारी : (बेराजे से) हा, आप के पास सबूत है ?

बूढा : (बेरांजे से) आप कैसे जानते हैं कि इन दोनों गैंडों में एक के दो सींग होते हैं और दूसरे के एक ? और किसके कितने ?

पंसारी की बीवी : यह हमसे ज्यादा क्या जानता होगा।

बेराजे : पहले तो हमें यह नही पता कि ये दो गैंडे थे या एक। मैं तो यह समझता हूं कि यह सिर्फ एक गैंडा था।

मालिक : चलो मान लिया कि ये दो थे। तो एक सींग वाला कौन होगा, एशियाई गैंडा ?

बूढ़ा : नही। यह अफ्रीकी गैंडा है दो सींग वाला। मैं तो यही समझता हूं।

मालिक : दो सींग वाला कौन ?

पंसारी : वह अफ्रीकी नहीं है।

पंसारी की बीवी : इस बात पर सहमत होना आसान नहीं है।

बूढ़ा : फिर भी मसला तो सुलझना ही चाहिए।

तर्कशास्त्री : (अपनी चुप्पी तोड़ते हुए) सज्जनो, बीच में पड़ने के लिए माफी चाहता हूं। मसला यह नहीं है। इजाज़त हो तो मैं अपना परिचय दू...

घरेलू औरत : (रोते-रोते) ये तर्कशास्त्री हैं!

मालिक : अच्छा! तर्कशास्त्री हैं।

बूढ़ा : (तर्कशास्त्री का बेरांजे से परिचय कराते हुए) मेरे दोस्त, तर्कशास्त्री!

बेरांजे . आप से मिलकर खुशी हुई, साहब।

तर्कशास्त्री : (बात जारी रखते हुए)...प्रोफेशनल तर्कशास्त्री...यह रहा मेरा कार्ड।

(अपना कार्ड दिखाता है।)

बेराजे : मेरा सौभाग्य है, साहब कि आपसे मुलाकात हुई।

पसारी : यह हमारा सौभाग्य है, साहब।

मालिक : तो तर्कशास्त्री जी, आप बतलाएगे कि अफ्रीकी गैंडा एक सीग वाला होता है...

बूढा : या दो सीग वाला...

पंसरी की बीवी : और, कि एशियाई गैंडा दो सीग वाला होता है।

पसारी : या एक सींग वाला।

तर्कशास्त्री : दरअसल, सवाल यह नहीं है। यही बात तो है जो मुझे स्पष्ट करनी है।

पंसारी : लेकिन यही बात तो है जिसे हम जानना चाहते है।

तर्कशास्त्री : मुझे बोलने दीजिए, साहब।

बूढ़ा : इन्हें बोलने दें।

पंसारी की बीवी : (पंसारी से, खिड़की से) इन्हें बोलने दीजिए न।

मालिक : हम सुन रहे हैं, साहब।

तर्कशास्त्री : (बेरांजे से) यह बात मैं खास तौर से आप से कहने जा रहा हूं। दूसरों से भी, जो यहां मौजूद हैं।

पंसारी : हमसे भी···

तर्कशास्त्री : तो बात यह है कि यह चर्चा एक मसले को लेकर शुरू हुई थी जिससे न चाहते हुए भी आप दूर हट गए हैं। शुरू में आप इस बात से परेशान थे कि जो गेंडा अभी गया है वह क्या सचमुच पहले वाला गेंडा ही था या कि कोई और। जवाब तो इस सवाल का देना है।

बेरांजे : कैसे ?

तर्कशास्त्री : ऐसे हो सकता है कि आप ने दोनों बार वही एक गेंडा देखा हो जिसके एक ही सींग था···

पंसारी : (दोहराते हुए मानो अच्छी तरह समझना चाहता है।) दोनो बार वही एक गेंडा···

मालिक : (उसी अभिनय में) जिसके एक ही सींग था···

तर्कशास्त्री : *(बात जारी रखते हुए)* ···*या हो सकता है कि आपने दोनों* बार वही गेंडा देखा हो जिसके दो सींग थे।

बूढा : (दोहराते हुए) वही एक गेंडा जिसके दो सींग थे। दोनों बार···

तर्कशास्त्री : बिलकुल ठीक। या फिर, हो सकता है कि आपने पहला गेंडा एक सींग वाला देखा हो, फिर एक दूसरा देखा हो वह भी एक ही सींग वाला।

पंसरी की बीवी : *(खिड़की से) अच्छा, अच्छा*···

तर्कशास्त्री : या फिर पहला गेंडा दो सींग वाला रहा हो, और दूसरा गेंडा भी दो सींग वाला रहा हो।

मालिक : यही बात है।

तर्कशास्त्री : अब अगर आप ने देखा होता···

पंसारी : अगर हमने देखा होता···

बूढ़ा : हां, अगर हमने देखा होता···
तर्कशास्त्री : अगर पहली बार आप ने दो सींग वाला गेंडा देखा होता...
मालिक : दो सींग वाला ।
तर्कशास्त्री : ···दूसरी बार एक सींग वाला गेंडा···
पंसारी : एक सींग वाला ।
तर्कशास्त्री : ···तो भी इससे बात किसी नतीजे पर न पहुंचती ।
बूढ़ा : बात किसी नतीजे पर न पहुंचती ।
मालिक : क्यों?
पंसारी की बीवी : हे राम···अपने पल्ले तो कुछ नही पड़ा ।
पंसारी : अच्छा ! अच्छा । (पंसारी की बीवी कन्धे भटकती है और खिड़की से पीछे हट जाती है ।)
तर्कशास्त्री : क्योंकि, यह मुमकिन है कि पहली बार गुजरने के बाद इस गेंडे ने अपना एक सींग खो दिया हो और इस बार का गेंडा पहली बार का गेंडा ही हो ।
बेराजे : मैं समभता हूं, लेकिन···
बूढ़ा : (बेरांजे की बात काटते हुए) बात नही काटिए ।
तर्कशास्त्री : यह भी मुमकिन है कि दो-दो सीगों वाले गेंडों ने एक-एक सींग खो दिया हो ।
बूढ़ा : यह मुमकिन है ।
मालिक : हां, यह मुमकिन है ।
पंसारी : क्यों नही !
बेरांजे : हां, लेकिन···
बूढ़ा : (बेरांजे से) बात नही काटिए ।
तर्कशास्त्री : अगर आप यह सिद्ध कर सकें कि पहली बार आप ने एक एक सींग वाला गेंडा देखा, चाहे एशियाई या अफ्रीकी···
बूढ़ा : एशियाई या अफ्रीकी···
तर्कशास्त्री : दूसरी बार एक दो सींग वाला गेंडा···
बूढ़ा : दो सींग वाला !

तर्कशास्त्री : ···चाहे कोई भी···अफ्रीकी या एशियाई···

पंसारी : अफ्रीकी या एशियाई···

तर्कशास्त्री : (अपने तर्क को जारी रखते हुए)···तब, उस समय, हम इस नतीजे पर पहुंच सकते है कि हम दो अलग-अलग गेंडों की बात कर रहे हैं क्योंकि यह संभावना बहुत कम है कि कुछ क्षणों में किसी गेंडे की नाक पर एक दूसरा सींग इतना अधिक उग आए कि दिखाई दे सके··

बूढा : सम्भावना बहुत कम है।

तर्कशास्त्री : (अपने तर्क-प्रतिपादन से प्रसन्न होते हुए)···ऐसा होने पर एशियाई या अफ्रीकी गेंडा···

बूढा : एशियाई या अफ्रीकी···

तर्कशास्त्री : ···अफ्रीकी या एशियाई में बदल जाता।

मालिक : अफ्रीकी या एशियाई···

पंसारी : अच्छा, अच्छा !

तर्कशास्त्री : ···लेकिन अच्छे तर्क के अनुसार यह संभव नहीं। क्योंकि एक ही जीव एक समय पर दो स्थानो पर जन्म नही ले सकता।

बूढा : और न ही कुछ समय के बाद दूसरे स्थान पर।

तर्कशास्त्री : (बूढे से) यही तो है जिसे सिद्ध करना है।

बेरांजे : (तर्कशास्त्री से) यह बात तो मुझे साफ दिखती है लेकिन इससे मसला सुलझा नही।

तर्कशास्त्री : (बेरांजे से, ज्ञान के दभ से प्रेरित मुस्कान के साथ) ज़ाहिर है, साहब, लेकिन इस प्रकार मसला ठीक से पेश तो हो गया है।

बूढ़ा : यह पूरी तरह से तर्क-सम्मत है।

तर्कशास्त्री : (सिर से हैट उठाते हुए) अच्छा, मैं चलता हूं, नमस्कार। (वह पीछे मुड़ता है, फिर बाईं ओर से बाहर चला जाएगा। बूढ़ा आदमी इसके पीछे जाएगा।)

बूढ़ा : अच्छा, मैं चलता हू, नमस्कार। (वह अपना हैट सिर से

उठाता है और तर्कशास्त्री के पीछे जाता है।)

पंसारी : यह शायद तर्क-सम्मत है लेकिन···

(इसी क्षण, घरेलू औरत कॉफी हाउस से बाहर आती है। उसने शोक के प्रतीक में सभी कुछ काला पहन रखा है। वह ताबूत उठाए है। उसके पीछे डेज़ी और महिला वेटर ऐसे चल रही हैं जैसे कोई जनाज़ा जा रहा हो। वे तीनों दाईं ओर से बाहर चली जाती हैं।)

पंसारी : (बात जारी रखते हुए)···यह शायद तर्कसम्मत है लेकिन क्या हम यह मानने को तैयार हैं कि हमारी बिल्लियां हमारी ही आंखों के सामने एक सींग वाले गैंडे या दो सींग वाले गैंडे द्वारा रौंदी जाएं, चाहे ये गैंडे एशियाई हों या अफ्रीकी ?

(वह बड़े नाटकीय ढंग से जनाज़े की ओर संकेत करता जा रहा है।)

मालिक : यह ठीक कहते हैं, बात सही है ! हम मानने को तैयार नहीं कि हमारी बिल्लियां इस तरह से गैंडों द्वारा या किसी और चीज़ द्वारा रौंदी जाएं !

पंसारी : हम इसकी इजाज़त नहीं दे सकते !

पंसारी की बीवी : (दुकान के दरवाजे में से झांककर, अपने पति से) तो फिर अंदर आ जाओ ! ग्राहक आने वाले हैं !

पंसारी : (दुकान की ओर जाते हुए) नहीं, हम इसकी इजाज़त नहीं दे सकते !

बेरांजे : मुझे जां के साथ झगड़ना नहीं चाहिए था ! (मालिक से) मेरे लिए एक गिलास ब्रांडी लाइए ! बड़ा वाला !

मालिक : अभी लाया। (वह ब्रांडी का गिलास लाने कॉफी हाउस जाता है।)

बेरांजे : (अकेला) मुझे झगड़ना नहीं चाहिए था, नहीं झगड़ना चाहिए था। (एक बड़ा गिलास हाथ में लिए मालिक कॉफी

हाउस से बाहर आता है।) मेरा दिल इतना भरा हुआ है कि अब म्यूजियम जाने को मन नहीं करता। अपने बौद्धिक स्तर को मैं फिर कभी ऊंचा उठाऊंगा। (गिलास उठाता है और पीता है।)

पर्दा गिरता है

अंक दो

पहला दृश्य

मंच सज्जा :

एक सरकारी कार्यालय या किसी प्राइवेट कम्पनी का कार्यालय, जैसे, कोई बड़ा विधि प्रकाशन संस्थान। मंच के पिछले भाग के बीचोंबीच दो पल्लों वाला एक बड़ा दरवाजा जिसके ऊपर सेक्शन अफसर का बोर्ड लगा है। मंच के पिछले भाग के बाईं ओर सेक्शन अफसर के दरवाजे के पास डेज़ी की छोटी मेज पड़ी है जिस पर एक टाइपराइटर रखा है। बाईं दीवार के पास सीढ़ियों की ओर जाते हुए दरवाजे और डेज़ी की टेबल के बीच एक और टेबल रखी है जिस पर हाजिरी का रजिस्टर रखा है। इसमें कर्मचारियों को दफ्तर आने पर दस्तखत करने होते हैं। इसके बाद, बाईं ओर कुछ आगे, सीढ़ियों को जाने वाला दरवाजा। सबसे ऊपर की कुछ सीढ़ियां, जंगले का ऊपरी हिस्सा और एक छोटी चौकी देखी जा सकती है। मंच के आगे एक टेबल, दो कुर्सियों के साथ। टेबल के ऊपर छपाई के प्रूफ, एक दवात, पेन-होल्डर। यही मेज है जहां बोटार और बेरांजे बैठकर काम करते हैं। बेरांजे बाईं कुर्सी पर बैठेगा और बोटार दाईं पर। दाईं ओर की दीवार के पास एक और बड़ी आयताकार टेबल पड़ी है। यह भी कागजों के प्रूफों आदि-आदि से लदी हुई। इस मेज

के दोनों छोरों पर दो कुर्सियां आमने-सामने पड़ी हैं जो ज्यादा सुन्दर और ज्यादा रौबदार हैं। यह मेज ड्यूडार और मिस्टर बीफ की है। ड्यूडार दीवार के पास रखी कुर्सी पर बैठेगा, दूसरे कर्मचारी उसकी ओर मुंह करके बैठेंगे। वह डिप्टी सेक्शन अफसर है। मंच के पिछले भाग के दरवाजे और दाईं ओर की दीवार के बीच एक खिड़की है।

यदि मंच के आगे वाद्यवृन्द के बैठने की जगह बनी हुई है तो यह खिड़की सिर्फ एक चौखट के रूप में मंच के आगे बिल्कुल बीचोंबीच होनी चाहिए। दाईं तरफ के कोने में, मंच के पिछले भाग में एक कोट स्टैंड जिस पर कुछ पुराने कोट टंगे हैं। यदि चाहें तो इस कोट स्टैंड को दाईं दीवार के बिलकुल पास मंच के अगले हिस्से में भी रखा सकते हैं।

दीवारों में किताबों की कतारें और धूल भरी फाइलें। मंच के पिछले भाग की दीवार पर बाईं तरफ शेल्फों के ऊपर, 'न्यायशास्त्र', 'न्याय संहिता' के छोटे-बड़े बोर्ड लगे हैं। दाईं ओर की दीवार पर, जो कुछ तिरछी हो सकती है, बोर्ड लगे हैं : 'ऑफिशियल जरनल' और 'टैक्सेशन नियम'। सेक्शन अफसर के दरवाजे के ऊपर एक घड़ी नौ बजकर तीन मिनट बजा रही है।

जब पर्दा उठता है, ड्यूडार अपनी कुर्सी के पास खड़ा है। उसका चेहरा मंच की बाईं दीवार की ओर है। मेज के दूसरी ओर बोटार है। उसका चेहरा ड्यूडार की ओर है। उनके बीच उसी मेज के पास और दर्शकों की ओर देखते हुए सेक्शन अफसर खड़ा डेप्टी सेक्शन अफसर के पास थोड़ा पीछे

खड़ी है। उसके हाथ में टाइप किये हुए कुछ कागज हैं। जिस टेबल के आसपास ये तीन पात्र खड़े हैं, वहां छपाई के प्रूफों के ऊपर एक अखबार खुला पड़ा है।

पर्दा उठने के बाद कुछ क्षणों के लिए ये पात्र बिना हिले-डुले खड़े रहेंगे—ऐसी मुद्रा में जहां संवाद की पहली पंक्ति कहने की स्थिति होगी। वे एक जीती-जागती तस्वीर लगेंगे। अंक एक के प्रारम्भ में भी ऐसी ही *सजीव झांकी का निर्देशन होगा।* सेक्शन अफसर कोई पचास का है, कपड़े बड़ी अच्छी तरह से पहने हुए: गहरा नीला, सूट, एक विशिष्ट सेवा मैडल, कलफ लगा एक नकली कालर, काली टाई, काफी भूरी मूंछें। इसका नाम है मिस्टर पैपियों।

ड्यूडार : पैंतीस साल का। सलेटी सूट, अपने कोट की हिफाजत के लिए चमकीले रेशमी कपड़े के बने कवर बाजुओं पर चढ़ा रखे हैं। चाहे तो चश्मा पहन सकता है। इसका कद लम्बा है। एक ऐसा कर्मचारी जिसका भविष्य उज्ज्वल है। यदि सेक्शन अफसर डिप्टी डायरेक्टर बन जाए तो ड्यूडार को उसका स्थान मिल जाएगा। बोटार को ड्यूडार अच्छा नहीं लगता।

बोटार : रिटायर्ड स्कूल मास्टर, अपने आपको कुछ समझने वाला, छोटी सफेद मूछें। लगभग साठ वर्ष का लेकिन काफी चुस्त। वह सोचता है कि उसे सब-कुछ आता है, सब-कुछ समझता है। वह गोल चपटी टोपी पहने है। काम के लिए यह एक सलेटी रंग का चोगा पहनता है। नाक कुछ मोटी जिस पर चश्मा। कान के पीछे एक पेंसिल खोंसे है। काम करते समय वह कोट की आस्तीनों पर चमकीले रेशमी कपड़े के कवर पहन लेता है।

डेज़ी : युवती, सुनहरे बालों वाली।

बाद में प्रवेश करने वाली मिसेज बीफ चालीस और पचास के बीच की एक भारी शरीर की महिला, रुआंसी और सांस फूली हुई।

पर्दा उठने पर सभी पात्र दाईं ओर पड़ी मेज़ के चारों ओर बिना हिले-डुले खड़े हैं। सेक्शन अफसर अपनी उंगली द्वारा अखबार की ओर संकेत कर रहा है। ड्यूडार अपने हाथ को बोटार की ओर किए है, शायद वह कह रहा हो : 'देख लिया न !' बोटार अपने हाथ चोगे की जेब में डाले, अविश्वास व्यक्त करती मुस्कान के साथ, मानो कहना चाहता हो : 'मुझे उल्लू नहीं बना सकते !' डेज़ी टाइप किए हुए कागज़ों को हाथ में लिए हुए अपने चेहरे से ऐसे प्रतीत होती है मानो वह ड्यूडार का समर्थन कर रही है। कुछ क्षणों के बाद बोटार बोलना शुरू करता है।

बोटार : यह सब कोरी बकवास है, कोरी बकवास।

डेज़ी : मैंने देखा है, मैंने देखा है यह गेंडा !

ड्यूडार : यह अखबार में छपा है, साफ-साफ छपा है, आप इससे इनकार नहीं कर सकते।

बोटार : (तिरस्कार भरे स्वर में) हुंह !

ड्यूडार : छपा है, यहां छपा है, इधर····'मर गया-लुट गया' कालम में। आप खुद पढ लीजिए, चीफ साहब।

पैंपियों : "कल, रविवार, हमारे नगर के चर्च चौक मे बारह बजे के आसपास एक बिल्ली को किसी मोटी चमड़ी वाले जानवर ने अपने पैरों तले रौंद कर मार डाला।"

डेज़ी : यह घटना ठीक चर्च चौक में नहीं हुई।

पैंपियों : सिर्फ इतना ही। और कुछ नहीं दिया।

बोटार : हुंह !

ड्यूडार : और क्या चाहिए ? बिलकुल साफ तो है ।

बोटार : मुझे अखबार वालों में विश्वास नही । सभी अखबार वाले झूठे होते है । मैं जानता हूं कि मुझे कहां विश्वास करना है । मैं तो केवल उसी में विश्वास करता हूं जिसे मैं खुद अपनी आखों से देखता हूं । एक पुराना स्कूल मास्टर होने के नाते मुझे ऐसी चीजें पसद हैं जो स्पष्ट हों, जो वैज्ञानिक दृष्टि से सिद्ध हो सकें । मेरा दिमाग कायदापसंद है, साफ है ।

ड्यूडार : कायदापसंद दिमाग का इससे क्या संबंध ?

डेज़ी : (बोटार से) बोटार साहब, मैं समझती हूं कि यह खबर बिलकुल साफ है ।

बोटार : आप इसे बिलकुल साफ कहती हैं ? क्या बात करती हैं ? यह मोटी चमड़ी वाला जानवर कौन है ? 'मर गया लुट गया' कालम का संपादक मोटी चमड़ी वाले जानवर से क्या समझता है ? इस पर वह कुछ नही कहता । और फिर बिल्ली से वह क्या समझता है ?

ड्यूडार : हर कोई जानता है कि बिल्ली क्या होती है ।

बोटार : उसका मतलब नर बिल्ली से है कि मादा बिल्ली से ? और उसका रंग ? और जाति ? मैं रंग-भेद नीति का समर्थक नही हूं । मैं तो इसका विरोधी ही हूं ।

पैपियो : लेकिन, बोटार साहब, सवाल यह नही है, रंग-भेद नीति का यहां क्या काम ?

बोटार : माफ कीजिए, चीफ साहब । आप इस बात से इनकार नही कर सकते कि रंग-भेद इस सदी की बहुत बड़ी बुराइयों में से एक है ।

ड्यूडार : ठीक है, हम सब मानते हैं, लेकिन यहा तो चर्चा यह नही है कि…

बोटार : ड्यूडार साहब, इस मामले को ऐसे ही नही टाला जा सकता । इतिहास की घटनाओं ने हमें साफ-साफ दिखा

दिया है कि रंग-भेद···

ड्यूडार : मैं कहता हूं कि सवाल यह नहीं···

बोटार : ऐसा लगता नहीं है···

पैपियों : रंग-भेद के सवाल को हमने नहीं उठाया।

बोटार : हमें इसकी भर्त्सना का कोई मौका हाथ से नहीं जाने देना चाहिए।

डेज़ी : लेकिन हम कह तो रहे हैं कि यहां कोई भी रेसिस्ट नहीं है। आप मामले को उलझा रहे हैं। सवाल तो सिर्फ इतना है कि एक बिल्ली एक मोटी चमड़ी वाले जानवर के पैरों तले रौंदी गई। एक गैंडे द्वारा, अगर साफ-साफ कहें।

बोटार : मैं तो दक्षिण का नहीं हूं। दक्षिण के रहने वाले कहानियां गढ़ने में बड़े चुस्त होते हैं। क्या पता यह कोई पिस्सू हो जिसे किसी चूहे ने पैरों तले कुचल डाला हो। लोग भी तिल का पहाड़ बना लेते हैं।

पैपियों : (ड्यूडार से) तो इस मसले को गौर से देखने की कोशिश करें। हां, तो आपने देखा था, अपनी आंखों से देखा था उस गैंडे को जो शहर की गलियों में टहल रहा था।

डेज़ी : वह टहल नहीं रहा था, भाग रहा था।

ड्यूडार : अगर आप मुझसे पूछें तो मैंने इसे कुछ नहीं देखा। लेकिन कुछ लोग जिनकी बात पर भरोसा किया जा सकता है···

बोटार : (बात काटते हुए) तो आपने देखा कि यह सब बनावटी है। आप अखबारों पर, जनता की [illegible] कर लेते हैं जो अपने बड़े अखबारों को बेचने के लिए, और अपने [illegible] को खुश करने के लिए, [illegible] बना-बना [illegible] सकते हैं! [illegible]

[illegible]

डेज़ी : लेकिन मैंने इसे देखा है, [illegible]

[illegible]

बोटार : क्या हो गया है आपको ! मैं तो आपको एक समझदार लड़की समझता था ।

डेज़ी : बोटार साहब, मेरी आंखों को साफ-साफ दिखाई देता है। और मैं वहां अकेली नहीं थी, मेरे साथ और लोग भी थे जो देख रहे थे ।

बोटार : उंह। ज़ाहिर है कि वे किसी और चीज़ को देख रहे थे। कुछ मटरगश्ती करते लोग, कुछ ऐसे जिनके पास न कोई काम न काई काज, कुछ एकदम आवारा !

ड्यूडार : यह कल की बात है। कल इतवार था।

बोटार : मैं तो इतवार को भी काम करता हूं। मैं तो उन पादरियों की बात नहीं सुनता जो आपको चर्च आने के लिए मजबूर करते हैं और इस प्रकार आपको अपना काम करने से और गाढ़ा पसीना बहाकर रोटी कमाने से रोकते हैं।

पैपियों : (जैसे कोई धक्का लगा हो) ओह !

बोटार : माफ कीजिए, मैं आपको परेशान नहीं करना चाहता। अगर मुझे धर्म से नफरत है तो इसका मतलब यह नहीं कि मैं इसे मानता नहीं। (डेज़ी से) सबसे पहले, क्या आप जानती हैं कि गेंडा क्या होता है ?

डेज़ी : यह एक···यह एक बहुत मोटा जानवर है, गंदा !

बोटार : और आपको बड़ा नाज़ है अपने ज्ञान पर ! मिस डेज़ी, गेंडा होता है ··

पैपियों : अब आप गेंडे पर लेक्चर झाड़ना न शुरू करें। हम पाठशाला में नहीं बैठे।

बोटार : बड़े अफसोस की बात है।

(बहस के अंतिम दौर में बेराजे को आखिरी सीढ़िया बड़े ध्यान के साथ चढ़ते हुए देखा जा सकता है। वह दफ्तर का दरवाज़ा धीरे से खोलता है। अब वह ऐसा करता है तब दरवाज़े पर लगा साइन बोर्ड 'विधि प्रकाशन' देखा जा सकता है।)

पैंपियों : (डेज़ी से) अच्छा ! नौ से ऊपर हो गए हैं, मिस डेज़ी, हाजिरी का रजिस्टर हटा लीजिए। देर से आने वालों का कोई इलाज नहीं।

(डेज़ी बाईं ओर पड़ी छोटी मेज, जिस पर हाजिरी का रजिस्टर रखा है, की ओर ठीक उसी समय जाती है जिस समय बेरांजे प्रवेश करता है।)

बेरांजे : (प्रवेश कर, डेज़ी से, जबकि बाकी सभी बातचीत जारी रखे हैं) नमस्कार, मिस डेज़ी। मुझे देर तो नहीं हुई ?

बोटार : (ड्यूडार और मिस्टर पैंपियों से) मैं जहां अज्ञान देखता हूं वहीं युद्ध छेड़ देता हूं।

डेज़ी : (बेरांजे से) बेरांजे साहब, जल्दी कीजिए।

बोटार : ···चाहे महल मे, चाहे झोंपड़ी मे।

डेज़ी : (बेरांजे से) जल्दी दस्तखत कीजिए रजिस्टर पर।

बेरांजे : ओह, शुक्रिया। साहब आ चुके है ?

डेज़ी : (बेरांजे से, ओठों पर उंगली रखते हुए)। शऽऽऽ। हां, आ चुके हैं।

बोटार : आ चुके हैं ? इतनी जल्दी ?

(वह जल्दी से रजिस्टर में दस्तखत करने जाता है।)

बोटार : (बात जारी रखते हुए) हर जगह। प्रकाशन कार्यालयो में भी।

पैंपियों : (बोटार से) बोटार साहब, मैं समझता हूं कि···

बेरांजे : (दस्तखत करते हुए, डेज़ी से) लेकिन अभी नौ दस नही हुए···

पैंपियो : (बोटार से) मैं समझता हूं कि आप हद से बाहर जा रहे हैं।

ड्यूडार : (मिस्टर पैंपियो से) मैं भी यही समझता हूं, सर।

पैंपियों : (बोटार से) क्या आप यह भी कहेंगे कि मेरे एसिस्टेंट और आपके कोलीग ड्यूडार साहब, जो कानून के ग्रेजुएट और एक फर्स्ट क्लास मुलाज़िम हैं, मूर्ख हैं ? क्यों ?

बोटार : मैं इस बात का दावा तो नहीं करूंगा लेकिन फिर भी युनिवर्सिटियां, फैकल्टियां, ये सब इतनी अच्छी नहीं हैं जितने हमारे सरकारी स्कूल।

पैंपियों : *(डेज़ी से) हां, तो हाजिरी का रजिस्टर !*

डेज़ी : (पैंपियो से) यह रहा, सर। (रजिस्टर उसके सामने पेश करती है।)

पैंपियो : (बेरांजे से) लो, बेरांजे साहब आ गए।

बोटार : *(ड्यूडार से) युनिवर्सिटी के लोगों में जो कमी होती है,* वह है : साफ सोचना, साफ देखना, सूझबूझ।

ड्यूडार : (बोटार से) वाह ! वाह !

बेरांजे : नमस्कार, मिस्टर पैंपियों।

(बेरांजे इन तीनों से नज़र बचाते हुए सेक्शन अफसर के पीछे रखे कोट स्टैंड की ओर जा रहा था। वहां से वह दफ्तर में काम करने वाला अपना पुराना कोट उठाएगा और इसकी जगह बाहर पहनने वाला कोट टांग देगा। कोट स्टैंड के पास वह कोट बदलेगा, मेज़ की ओर जाएगा, जिसके खाने में से वह आस्तीन पर पहनने वाला काला कवर निकालेगा, आदि-आदि।) नमस्कार, मिस्टर पैंपियों माफ कीजिए, देर होते-होते बची। नमस्कार, ड्यूडार ! नमस्कार, बोटार साहब।

पैंपियों : आप बताओ, बेराजे, आपने भी कोई गेंडे देखे ?

बोटार : (ड्यूडार से) यूनिवर्सिटी के लोग कोरे बुद्धिजीवी होते हैं, जिंदगी के बारे में वे कुछ नहीं जानते।

ड्यूडार : (बोटार से) एकदम बकवास !

बेरांजे : (बड़े जोश के साथ अपने काम करने की चीज़ों को मेज़ पर सजाते हुए मानो देर से जाने का नुकसान भर रहा हो। मिस्टर पैंपियो से, स्वाभाविक स्वर में) हां, हां, क्यों नहीं, मैंने उसे देखा है !

बोटार : *(पीछे मुड़ते हुए) हुंह !*

डेज़ी : तो देखा आपने, मैं पागल थोड़े हूं।

बोटार : (फब्ती कसते हुए) ओह, बेरांजे साहब ने इसलिए कहा क्योंकि वे महिलाओं की ज्यादा परवाह करते हैं हालांकि वे ऐसे लगते नहीं।

ड्यूडार : क्या यह महिलाओं की परवाह करना है कि कोई कहे कि उसने गैंडा देखा है ?

बोटार : ज़रूर। खास तौर पर जब मिस डेज़ी की बात का समर्थन करना हो। हर आदमी मिस डेज़ी का बड़ा ध्यान रखता है, इसे समझना मुश्किल नहीं।

पैपियों : होशियार बनने की कोशिश न करें, बोटार साहब, बेरांजे साहब ने तो बहस मे हिस्सा ही नहीं लिया है। वह अभी तो आए हैं।

बेरांजे : (डेज़ी से) आपने इसे देखा ? है न ? हमने देखा।

बोटार : हुंह ! मुमकिन है बेरांजे साहब ने यह सोच लिया हो कि उन्होंने एक गैंडा देखा।

(बेरांजे की पीठ के पीछे बोटार एक अभिनय करता है जिसका अर्थ है कि बेरांजे पीता है।) इन्हें बहुत बड़े-बड़े ख्याल आते है। इनके साथ हर बात मुमकिन है।

बेरांजे : मैं अकेला नहीं था जब मैंने उस गैंडे को देखा। या उन दोनों गैंडों को।

बोटार : यहां तो इतना भी नहीं पता कि इन्होंने कितने देखे।

बेरांजे : मैं अपने मित्र जां के साथ था।...और लोग भी थे।

बोटार : (बेरांजे से) यह बिलकुल बकवास है।

डेज़ी : यह एक सींगवाला गैंडा था।

बोटार : हुंह ! इन दोनों ने सांठ-गांठ की हुई हैं हमे उल्लू बनाने के लिए !

ड्यूडार : (डेज़ी से) जो कुछ मैंने सुना है उससे तो लगता है कि उसके दो सींग थे।

बोटार : तो फिर फैसला करना चाहिए।

पैंपियों : (घड़ी देखकर) इस बात को खत्म करें, साहब, समय बेकार जा रहा है।

बोटार : आपने, बेरांजे साहब, आपने एक गेंडा देखा या कि दो ?

बेरांजे : अ•• बात यह है कि•••

बोटार : आपको पता नहीं। मिस डेज़ी ने एक गेंडा देखा है—एक सींग वाला। आपका गेंडा, बेरांजे साहब, अगर यह सचमुच था, एक सींग वाला था कि दो सींग वाला ?

बेराजे : देखिए, सारा मसला यही तो है।

बोटार : यह सब गड़बड़झाला है।

डेज़ी : होऽऽ•••?

बोटार : मैं आपका अपमान नहीं करना चाहता। लेकिन मुझे आपकी कहानी में यकीन नहीं ! आज तक इस इलाके में गेंडे नहीं देखे गए !

ड्यूडार : एक बार देखना भी तो काफी है !

बोटार : इन्हें कभी नहीं देखा गया। सिवाय स्कूल की किताबों में छपी इनकी तस्वीरों के। आपके गेंडे सिर्फ औरतों के दिमाग की उपज हैं।

बेरांजे : एक गेंडे के लिए 'उपज' शब्द का प्रयोग मुझे थोड़ा अजीब सा लगता है।

ड्यूडार : ठीक कहा आपने।

बोटार : (बात जारी रखते हुए) आपका गेंडा कोरी कल्पना है।

डेज़ी : कोरी कल्पना ?

पैंपियों : सुनिए, साहब, मैं समझता हूं अब दफ्तर का काम शुरू कर देना चाहिए।

बोटार : (डेज़ी से) कोरी कल्पना, उड़न तश्तरियों की तरह !

ड्यूडार : फिर भी, एक बिल्ली को रौंद कर मार दिया गया, इससे इनकार नहीं किया जा सकता !

बेराजे : मैं तो इसका गवाह हूं।

ड्यूडार : (बेरांजे की ओर संकेत करते हुए) इस घटना के गवाह भी हैं।

बोटार : इस तरह के गवाह !

पँपियों : सुनिए, सुनिए !

बोटार : (ड्यूडार से) यह कलेक्टिव साइकॉसिस है, ड्यूडार साहब, कलेक्टिव साइकॉसिस ! यह भी धर्म के समान है—जनता की अफीम !

डेज़ी : अगर यही बात है तो मुझे उड़न तश्तरियों में विश्वास है !

बोटार : हुंह !

पँपियों : (दृढ़ता के साथ) बहुत हो गया, बहुत ज्यादा हो गया। काफी गप-शप हो ली। गेंडे हैं या नहीं, उड़न तश्तरियां हैं या नहीं, काम जरूर होना चाहिए। कंपनी आपको इसलिए पैसे नहीं देती कि आप अपना वक्त इन जानवरों पर बहस में बरबाद करें, चाहे वे असली है, चाहे ख्वाबी !

बोटार : ख्वाबी !

ड्यूडार : असली !

डेज़ी : एकदम असली !

पँपियों : देखिए, मैं एक बार फिर आपको याद दिला दूं कि ये आपके काम करने के घंटे हैं। मुझे इस बेकार के झगड़े को यहीं खत्म करने की इजाजत दीजिए···

बोटार : (आहत और व्यंग्यपूर्ण) ठीक है, मिस्टर पँपियों। आप हमारे चीफ जो हैं। चूंकि आप हुक्म दे रहे हैं, हमें मानना ही पड़ेगा।

पँपियों : चलिए, सब अपने-अपने काम पर चलिए। मैं नहीं चाहता कि मुझे आपके वेतन से कटौती करने पर मजबूर होना पड़े। ड्यूडार साहब, नशाबन्दी कानून की आपकी रिपोर्ट का क्या हुआ ?

ड्यूडार : बस, इसे अंतिम रूप दे रहा हूं, चीफ साहब।

पँपियों : जल्दी खत्म करने की कोशिश कीजिए। यह अर्जेण्ट है।

और आप बेरांजे साहब, और बोटार साहब, क्या आपने 'मदिरा नामकरण अधिनियमों' के प्रूफ देखने का काम पूरा कर लिया है ?

बेरांजे : अभी नहीं, पैंपियो साहब। लेकिन काफी हिस्सा तो हो चुका है।

पैंपियों : दोनों मिलकर इसे खत्म कीजिए। प्रेस वाले इन्तज़ार कर रहे हैं। आप, मिस डेज़ी, आप चिट्ठियां साइन करवाने मेरे कमरे में आएंगी। इन्हें जल्दी-जल्दी टाइप कीजिए।

डेज़ी : ठीक है, मिस्टर पैंपियों।

(डेज़ी अपनी छोटी मेज़ की ओर जाती है और टाइप शुरू करती है। ड्यूडार अपनी मेज़ पर बैठता है और काम शुरू करता है। बेरांजे और बोटार अपनी-अपनी छोटी मेज़ों पर बैठते हैं। बेरांजे का मुंह और बोटार की पीठ सीढ़ियों की ओर है। बोटार गुस्से में प्रतीत होता है। बेरांजे सुस्त और ढीला है। बेरांजे मेज़ पर प्रूफ बिछाता है और पांडुलिपि बोटार की ओर खिसकाता है। बोटार बुड़बुड़ाते हुए बैठ जाता है जबकि मिस्टर पैंपियों दरवाज़ा खटाक से बंद करते हुए जाता है।)

पैंपियों : थोड़ी देर में आऊंगा।

(वह जाता है।)

बेरांजे : (पढ़ते हुए और सही करते हुए जबकि बोटार पेन के साथ पांडुलिपि की जांच करता है।) मदिरा नामकरण (वह सही करता है।) नामकरण में, ण (वह सही करता है।) अधिनियम···ध को छोटी इ, अधिनियम···। मदिरा नामकरण अधिनियम के अंतर्गत बोरदो प्रदेश की मदिराएं, ऊपरी ढलानों के निचले भागों···

बोटार : (ड्यूडार से) मेरे पास यह नही है। एक लाइन गायब है।

बेरांजे : मैं दुबारा पढता हूं। मदिरा नामकरण अधिनियम के अंतर्गत···

ड्यूडार : (बेराजे और बोटार से) मेहरबानी कर थोड़ा धीरे पढ़िए। आपके सिवाय और कुछ सुनाई ही नही दे रहा, आप मेरे काम में खलल डाल रहे हैं।

बोटार : (ड्यूडार से, बेरांजे के सिर के ऊपर से, वही बहस फिर शुरू करते हुए—जब कि बेरांजे, कुछ क्षणो के लिए अपने आप गलतियां सही करता रहता है—पढ़ते हुए वह अपने ओठों को हिलाता है) यह सब भांसापट्टी है।

ड्यूडार : क्या भांसापट्टी है ?

बोटार : वही आपकी गेंडे की कहानी, और क्या ! यह आपका प्रचार है जिसकी वजह से सारी अफवाहें फैल रही है।

ड्यूडार : (अपना काम रोकते हुए) कैसा प्रचार ?

बेराजे : (दखल देते हुए) यह प्रचार नही है···

डेजी : (टाइप करने का काम छोडकर) मैं फिर कहती हू मैंने देखा है···मैंने देखा है···हमने देखा है।

ड्यूडार : (बोटार से) आप भी अजीब बातें करते है !···प्रचार ! किसके लिए ?

बोटार : (ड्यूडार से) छोड़िए साहब···आप इस बारे मे मुझसे ज्यादा जानते हैं। आप भोले बनने की कोशिश न कीजिए।

ड्यूडार : (गुस्से मे आकर) कुछ भी कहिए, बोटार साहब, कम से कम मुझे किसी खुफिया एजेंसी से पैसे नही मिलते।

बोटार : (गुस्से से लाल, मेज पर हाथ मारते हुए) यह तो सरासर अपमान है। यह नहीं चलेगा···

(बोटार उठता है।)

बेरांजे : (बीच बचाव करते हुए) बोटार साहब, जाने दीजिए···

डेजी : ड्यूडार साहब, जाने दीजिए···

बोटार : मैं कहता हूं यह सरासर अपमान है…

(बड़े साहब के कमरे का दरवाज़ा अचानक खुलता है। बोटार और ड्यूडार जल्दी-जल्दी बैठ जाते हैं। बड़े साहब के हाथ मे हाज़िरी का रजिस्टर है। उसके सामने आते ही सब खामोश हो जाते हैं।)

पैंपियों : मिस्टर बीफ आज नही आए ?

बेरांजे : (अपने आस-पास देखकर) आप ठीक कहते हैं वह नही आए।

पैंपियों : ठीक इसी वक्त ही तो मुझे उसकी जरूरत थी ! (डेज़ी से) क्या उसका कोई मैसेज आया कि वह बीमार है या कोई और परेशानी है ?

डेज़ी : मुझे तो उसने कुछ नही कहा।

पैंपियों : (दरवाज़ा पूरी तरह से खोलकर और अन्दर आकर) अगर ऐसे ही चलता रहा तो मैं उसे निकाल दूंगा। ऐसा वह पहली बार थोड़े ही कर र : है। अब तक तो मैं आंखें बद किये रहा लेकिन अब यह नहीं चलेगा…आप में से किसी के पास उसकी मेज़ की चाबी है ?

(ठीक इसी समय मिसेज़ बीफ प्रवेश करती है। पैंपियों के अंतिम वाक्य के बीच में उसे जितना हो सकता है, उतनी तेज़ी के साथ अंतिम सीढ़ियों से ऊपर आते देखा जा सकता है। वह झटके के साथ दरवाज़ा खोल अंदर आती है। उसकी सांस फूली है, वह घबराई हुई है।)

बेरांजे : अरे, मिसेज़ बीफ।

डेज़ी : नमस्कार, मिसेज बीफ।

मिसेज़ बीफ : नमस्कार, मिस्टर पैंपियो ! नमस्कार ! नमस्कार !

पैंपियों : हां, तो आपका पति ! क्या हुआ है उसे, क्या वह यहां नही आना चाहता ?

मिसेज़ बीफ : (फूली सास की हालत में) मेहरबानी कर आप उन्हें माफ

कर दीजिए, मेरे पति को माफ कर दीजिए·· इस वीक एंड को वह अपने गांव गए थे। उन्हें थोड़ा-सा फ्लू हो गया है।

पैंपियों : अच्छा ! थोड़ा सा फ्लू हो गया है !

मिसेज बीफ : (मिस्टर पैंपियों को एक कागज थमाती हुई) लीजिए, अपने तार में उन्होने यही लिखा है । उनका ख्याल है कि वह बुधवार को लौट आएंगे······ (जैसे बेहोश हो जाएगी) एक गिलास पानी दीजिए···और एक कुर्सी···(बेरांजे अपनी कुर्सी उसके पास मंच के मध्य मे ले आता है जिस पर वह लुढ़क जाती है।)

पैंपियों : (डेज़ी से) इसे एक गिलास पानी दीजिए।

डेज़ी : अभी लाई- (अगले संवादों के दौरान डेज़ी एक गिलास लाती है, उसे पिलाती है।)

ड्यूडार : (चीफ से) जरूर यह दिल की मरीज होगी।

पैंपियों : यह सचमुच बहुत बुरी बात है कि मिस्टर बीफ हाजिर नही है। लेकिन इसका मतलब यह तो नहीं कि आप अपने हाथ-पांव छोड़ दें !

मिसेज बीफ : (मुश्किल के साथ) बात यह है···बात यह है···कि घर से यहा तक सारे रास्ते एक गेंडा मेरे पीछे पड़ा रहा···

बेरांजे : एक सींग वाला था कि दो सींग वाला ?

बोटार : (ठहाका मारकर) क्या बात की आपने ?

ड्यूडार : (थोड़ा गुस्से मे) इन्हें बोलने तो दीजिए।

मिसेज बीफ : (ठीक-ठीक वर्णन के लिए काफी कोशिश करते हुए और सीढ़ियों की ओर सकेत करते हुए) उधर है, नीचे सीढ़ियों के पास। ऐसा लगता है मानों वह सीढ़ियां चढ़ ऊपर आना चाहता हो।

(ठीक इसी समय, एक शोर सुनाई देता है। सीढ़ियों को किसी बहुत भारी चीज के नीचे दबकर टूटते हुए सुना जा सकता है। सीढ़ियों के नीचे से

से दर्दभरी चिंघाड़ को सुना जा सकता है। सीढ़ियों के गिरने से जो धूल ऊपर उड़ रही है उसमें से सीढ़ियों की चौकी हमें हवा में लटकती हुई दिखाई देगी।)

डेज़ी : हे भगवान !…

मिसेज़ बीफ : (कुर्सी पर बैठे हुए, अपना हाथ अपने दिल पर रखे) हाय ! हाय !

(बेरांजे मिसेज़ बीफ को संभालने के लिए तत्परता दिखाता है, उसके गाल थपथपाता है, उसे पानी पीने को देता है।)

बेरांजे : धीरज रखिए ! (इसी बीच, मिस्टर पैंपियों, ड्यूडार और बोटार बाईं ओर दौड़ते हैं, दरवाजा खोलने की क्रिया में एक दूसरे के साथ कंधे रगड़ते हैं और स्वयं को सीढ़ियों की चौकी पर धूल में लिपटते हुए पाते हैं। चिंघाड़ना लगातार सुनाई दे रहा है।)

डेज़ी : (मिसेज़ बीफ से) आप बेहतर महसूस कर रही हैं, मिसेज़ बीफ ?

पैंपियो : (चौकी पर खड़े हुए) यह रहा ! यहां नीचे ! यह एक है !

बोटार : मुझे तो कुछ भी दिखाई नहीं देता। यह सिर्फ वहम है।

ड्यूडार : हां, हां, उधर, नीचे, अपने ही चारों ओर चक्कर काट रहा है।

पैंपियों : हां, साहब। इसमें कोई शक नहीं। वह अपने ही चारों ओर चक्कर काट रहा है।

ड्यूडार : वह ऊपर नहीं आ पाएगा। सीढ़ियां तो अब हैं नहीं।

बोटार : बड़ी अजीब बात है। इसका क्या मतलब हो सकता है ?

ड्यूडार : (बेरांजे की ओर मुड़कर) यहां आकर देखिए। यहां आकर उसे देखिए, अपने गेंडे को।

बेरांजे : आ रहा हूं। (बेरांजे चौकी की ओर जल्दी-जल्दी आता है,

उसके पीछे डेज़ी मिसेज़ बीफ को छोड़कर आ जाती है।)

पैपियो : (वेरांजे से) आइए, साहब। आप तो गैंडों के विशेषज्ञ हैं। आप ज़रूर देखिए।

वेरांजे : मैं गैंडों का विशेषज्ञ नहीं हूं...

डेज़ी : अरे ! ...देखिए...कैसे चक्कर काट रहा है यह ! लगता है दर्द से परेशान है...क्या चाहता है यह ?

ड्यूडार : लगता है जैसे यह किसी को ढूंढ रहा है। (बोटार से) आप इसे देख रहे हैं अब ?

बोटार : (चिढ़कर) हां हां, देख रहा हूं।

डेज़ी : (बोटार से) शायद हम सबकी आंखें धोखा दे रही हैं ? और आपकी भी...

बोटार : मेरी आंखें कभी धोखा नहीं देतीं। लेकिन ज़रूर कुछ न कुछ बात है।

ड्यूडार : (बोटार से) कुछ न कुछ क्या ?

पैपियों : (वेरांजे से) यह सचमुच गैंडा है, है न ? यह बिलकुल वही है जिसे आपने पहले देखा था ? (डेज़ी से) और आपने भी ?

डेज़ी : बिलकुल नहीं।

वेरांजे : इसके दो सींग हैं। यह अफ्रीकी गैंडा है, नहीं, नहीं, एशियाई। ओह ! मुझे याद नहीं रहा कि अफ्रीकी गैंडे के दो सींग होते हैं कि एक।

पैपियो : इसने सारी सीढ़ियां तोड़ डाली हैं, चलो, अच्छा ही हुआ, ऐसा होना भी था ! न जाने कब से मैं मैनेजमेंट को इन घुन लगी पुरानी सीढ़ियों की जगह सिमेंट की सीढ़ियां बनवाने के लिए कह रहा हूं।

ड्यूडार : पिछले ही हफ्ते मैंने एक रिपोर्ट फिर भेजी है, चीफ साहब।

पैंपियों : यह तो होना ही था, यह तो होना ही था। यह तो साफ-साफ दिखाई दे रहा था। मैं ठीक ही कहता था।

डेज़ी : (मिस्टर पैंपियो से, ताना देते हुए) हमेशा की तरह।

बेरांजे : (ड्यूडार से और मिस्टर पैंपियों से) क्या हो गया, क्या हो गया मुझे, क्या दो सींग का होना एशियाई गैंडे का लक्षण है कि अफ्रीकी का ? एक सींग का होना अफ्रीकी गैंडे का लक्षण है कि एशियाई का ?...

डेज़ी : बेचारा, चिंघाड़ता ही जा रहा है, और चक्कर पर चक्कर काट रहा है। इसे क्या चाहिए ? अरे, यह हमारी ओर देख रहा है। (गैंडे से) म्याऊं, म्याऊं, म्याऊं...

ड्यूडार : कहीं आप इसे सहलाने न लग जाना, यह पाला हुआ नहीं होगा...

पैंपियों : जो कुछ भी हो, इसका पास आना नामुमकिन है। (गैंडा भीषण रूप से चिंघाड़ता है।)

डेज़ी : बेचारा !

बेरांजे : (बात जारी रखे हुए, बोटार से) आप, जो बहुत कुछ जानते हैं, क्या आप ऐसा नहीं समझते कि इसके उलटे दो सींग का होना...?

पैंपियों : आप गड़बड़ कर रहे हैं, बेरांजे साहब, आपका दिमाग ठीक से काम नहीं कर रहा। बोटार साहब ठीक कहते हैं।

बोटार : लेकिन यह हो कैसे सकता है, एक सभ्य देश में...

डेज़ी : (बोटार से) ठीक है, ठीक है। लेकिन यह है कि नहीं ?

बोटार : यह एक घिनौनी साजिश है ! (श्रोताओं के सामने एक वक्ता के हावभाव के साथ, ड्यूडार को संकेत करते हुए, और अपनी नज़र से उसे धमकाते हुए) यह सब आपका कसूर है।

ड्यूडार : मेरा क्यों, आपका क्यों नहीं ?

बोटार : (गुस्से में) मेरा ? दोष तो हमेशा छोटे लोगों का ही लगता है। अगर मेरा बस चलता...

पैंपियो : अजीब मुसीबत मे फसे हैं हम.. सीढियां ही नहीं है।

डेज़ी : (बोटार और ड्यूडार से) शांत हो जाइए, यह समय झगड़ने का नहीं है।

पैंपियों : यह मैनेजमेंट का कसूर है।

डेज़ी : हो सकता है। लेकिन हम नीचे कैसे जाएंगे ?

पैंपियों : (रसिकों का-सा मज़ाक करते हुए और डेज़ी के गाल को हल्का-सा छू कर) मैं आपको अपनी बांहों में ले लूंगा और हम दोनों इकट्ठे कूद जाएंगे।

डेज़ी : (चीफ के हाथ को पीछे हटाते हुए) परे हटाइए अपना खुरदरा हाथ, मोटी चमड़ी वाले कहीं के !

पैंपियों : मैं तो मज़ाक कर रहा था।

(इसी बीच, जब गेंडा अपना चिंघाड़ना जारी रखे हुए था, मिसेज़ बीफ उठकर दूसरों के पास जा मिली थी। चक्कर काटते हुए गेंडे को वह बड़ी होशियारी के साथ कुछ क्षणों के लिए टकटकी लगाते हुए देखती है। अचानक वह बुरी तरह से चीख उठती है।)

मिसेज़ बीफ : हे भगवान ! क्या यह हो सकता है ?

बेरांजे : (मिसेज़ बीफ से) क्या हुआ ?

मिसेज़ बीफ : यह तो मेरा पति है ! बीफ, मेरे प्यारे बीफ, तुम्हें क्या हुआ है ?

डेज़ी : (मिसेज़ बीफ से) आप यकीन से कह सकती हैं ?

मिसेज़ बीफ : मैं उसे पहचानती हूं, मैं उसे पहचानती हू। (गेंडा ज़ोर से लेकिन बड़े प्यार के साथ चिंघाड़कर इसका उत्तर देता है।)

पैंपियों : अब तो बर्दाश्त से बाहर है ! अब तो इसकी हमेशा के लिए छुट्टी !

ड्यूडार : क्या उसने बीमा करवा रखा है ?

बोटार : (अपने आप से) मेरी समझ मे सब कुछ आ रहा है···

डेज़ी : ऐसी हालत में बीमे का पैसा कैसे मिल सकता है ?

मिसेज़ बीफ : (बेरांजे की बांहों में बेहोश होते हुए) हाय ! हे भगवान !

बेरांजे : ओह !

बेरांजे : (ड्यूडार से और मिस्टर पैंपियों से) क्या हो गया, क्या हो गया मुझे, क्या दो सींग का होना एशियाई गैंडे का लक्षण है कि अफ्रीकी का ? एक सीग का होना अफ्रीकी गैंडे का लक्षण है कि एशियाई का ?…

डेज़ी : बेचारा, चिंघाड़ता ही जा रहा है, और चक्कर पर चक्कर काट रहा है। इसे क्या चाहिए ? अरे, यह हमारी ओर देख रहा है। (गैंडे से) म्याऊ, म्याऊं, म्याऊ…

ड्यूडार : कहीं आप इसे सहलाने न लग जाना, यह पाला हुआ नहीं होगा…

पैंपियो : जो कुछ भी हो, इसका पास आना नामुमकिन है। (गैंडा भीषण रूप से चिंघाड़ता है।)

डेज़ी : बेचारा !

बेरांजे : (बात जारी रखे हुए, बोटार से) आप, जो बहुत कुछ जानते हैं, क्या आप ऐसा नही समझते कि इसके उलटे दो सीग का होना…?

पैंपियों : आप गड़बड़ कर रहे हैं, बेरांजे साहब, आपका दिमाग ठीक से काम नहीं कर रहा। बोटार साहब ठीक कहते हैं।

बोटार : लेकिन यह हो कैसे सकता है, एक सभ्य देश में…

डेज़ी : (बोटार से) ठीक है, ठीक है। लेकिन यह है कि नही ?

बोटार : यह एक घिनौनी साजिश है ! (श्रोताओ के सामने एक वक्ता के हावभाव के साथ, ड्यूडार को संकेत करते हुए, और अपनी नज़र से उसे धमकाते हुए) यह सब आपका कसूर है।

ड्यूडार : मेरा क्यो, आपका क्यों नही ?

बोटार : (गुस्से में) मेरा ? दोष तो हमेशा छोटे लोगो का ही लगता है। अगर मेरा बस चलता…

पैंपियों : अजीब मुसीबत मे फसे हैं हम…सीढियां ही नही है।

डेज़ी : (बोटार और ड्यूडार से) शांत हो जाइए, यह समय झगड़ने का नही है।

पैंपियों : यह मैनेजमेंट का कसूर है।

डेज़ी : हो सकता है। लेकिन हम नीचे कैसे जाएंगे ?

पैंपियों : (रसिकों का-सा मज़ाक करते हुए और डेज़ी के गाल को हल्का-सा छू कर) मैं आपको अपनी बांहो में ले लूंगा और हम दोनों इकट्ठे कूद जाएंगे !

डेज़ी : (चीफ के हाथ को पीछे हटाते हुए) परे हटाइए अपना खुरदरा हाथ, मोटी चमडी वाले कहीं के !

पैंपियों : मैं तो मज़ाक कर रहा था।

(इसी बीच, जब गैंडा अपना चिंघाडना जारी रखे हुए था, मिसेज़ बीफ उठकर दूसरों के पास जा मिली थी। चक्कर काटते हुए गैंडे को वह बडी होशियारी के साथ कुछ क्षणों के लिए टकटकी लगाते हुए देखती है। अचानक वह बुरी तरह से चीख उठती है।)

मिसेज़ बीफ : हे भगवान ! क्या यह हो सकता है ?

बेरांजे : (मिसेज़ बीफ से) क्या हुआ ?

मिसेज़ बीफ : यह तो मेरा पति है ! बीफ, मेरे प्यारे बीफ, तुम्हें क्या हुआ है ?

डेज़ी : (मिसेज़ बीफ से) आप यकीन से कह सकती हैं ?

मिसेज़ बीफ : मैं उसे पहचानती हू, मैं उसे पहचानती हूं। (गैंडा जोर से लेकिन बड़े प्यार के साथ चिंघाड़कर इसका उत्तर देता है।)

पैंपियों : अब तो बर्दाश्त से बाहर है ! अब तो इसकी हमेशा के लिए छुट्टी !

ड्यूडार : क्या उसने बीमा करवा रखा है ?

बोटार : (अपने आप से) मेरी समझ में सब कुछ आ रहा है···

डेज़ी : ऐसी हालत मे बीमे का पैसा कैसे मिल सकता है ?

मिसेज़ बीफ : (बेरांजे की बांहों में बेहोश होते हुए) हाय ! हे भगवान !

बेरांजे : ओह !

डेज़ी : इसे उठाएं।

(ड्यूडार और डेज़ी की सहायता से बेरांजे मिसेज बीफ को खींचकर उसकी कुर्सी पर बिठाता है।)

ड्यूडार : (उसे ले जाने के दौरान) घबराइए नहीं, मिसेज बीफ।

मिसेज बीफ : हाय ! हाय !

डेज़ी : सब ठीक हो जाएगा…

पैंपियों : (ड्यूडार से) कानून की दृष्टि से क्या किया जा सकता है ?

ड्यूडार : लीगल डिपार्टमेंट से बात करनी पड़ेगी।

बोटार : (समूह के पीछे चलते हुए, अपने हाथ आकाश की ओर उठाकर) सरासर पागलपन है ! क्या हो गया है लोगों को !

(मिसेज बीफ को घेरकर उसके गाल थपथपाए जाते हैं, वह आंखें खोलती है, 'आह' करती है, और आंखें फिर बन्द कर लेती है, फिर से उसके गाल थपथपाए जाते हैं, जब कि बोटार बात कर रहा है।)

चाहे कुछ भी हो, इतना यकीन रखिए कि मैं अपनी एक्शन कमेटी को सब कुछ बता दूंगा। मैं एक जरूरतमन्द साथी को अकेले नहीं छोड़ूंगा। सब कुछ बता दूंगा।

मिसेज बीफ : (होश में आते हुए) बेचारा बीफ डार्लिंग, मैं इसे ऐसे नहीं छोड़ सकती, मेरा बीफ डार्लिंग। (चिंघाड़ सुनाई देती है।) वह मुझे बुला रहा है। (प्यार से) वह मुझे बुला रहा है।

डेज़ी : आप पहले से अच्छा महसूस कर रही हैं, मिसेज बीफ ?

ड्यूडार : थोड़ा होश में तो आ रही हैं।

बोटार : (मिसेज बीफ से) हमारी एक्शन कमेटी की सहायता पर आप यकीन रख सकती हैं। क्या आप इस कमेटी का मेंबर बनना पसंद करेंगी ?

पैंपियों : काम मे फिर देर हो जाएगी। मिस डेज़ी, डाक का क्या हुआ?

डेज़ी : पहले तो यह पता लगना चाहिए कि यहां से वाहर कैसे निकल पाएंगे।

पैंपियो : परेशानी तो होगी। खिड़की में से।

(मिसेज वीफ, जो अपनी कुर्सी में लुढ़की पड़ी है, और वोटार के अलावा सभी खिड़की के पास जाते हैं। ये दोनों मंच के मध्य मे विद्यमान रहते है।)

वोटार : मैं जानता हूं यह सब क्या है।

डेज़ी : (खिड़की के पास) यह बहुत ऊंची है।

वेरांजे : शायद हमें फायर ब्रिगेड बुलाना पड़े, वे सीढ़ियां लेकर आएंगे!

पैंपियों : मिस डेज़ी, मेरे कमरे मे जाइए और फायर ब्रिगेड को फोन कीजिए।

(मिस्टर पैंपियों ऐसे चलता है मानो वह उसके पीछे-पीछे जाएगा। डेज़ी मंच के पिछले भाग मे जाकर अदृश्य हो जाती है। टेलीफोन उठाने और 'हैलो', 'हैलो', 'फायर ब्रिगेड' की आवाजें सुनी जा सकती हैं। इसके वाद फोन पर बातचीत के अस्पष्ट स्वर सुनाई देते हैं।)

मिसेज बीफ : (अचानक उठते हुए) मैं उसे इस हालत में नही छोड़ सकती, मैं उसे इस हालत में नहीं छोड़ सकती।

पैंपियों : अगर आप उसे तलाक देना चाहती हैं...यह एक अच्छा बहाना है।

ड्यूडार : निश्चित रूप से गलती उसी की मानी जाएगी।

मिसेज बीफ़ : नही। वेचारा! यह मौका नहीं है, मैं अपने पति को इस हालत में नही छोड़ सकती।

बेरांजे : आप एक अच्छी बीवी हैं।

ड्यूडार : (मिसेज वीफ से) लेकिन आप करने क्या जा रही है?

(मिसेज बीफ बाईं ओर को चौकी की तरफ भागती है।)

वेरांजे : जरा देखकर !

मिसेज बीफ : मैं उसे नहीं छोड़ सकती, उसे नहीं छोड़ सकती।

ड्यूडार : इसे पकड़ो।

मिसेज बीफ : मैं उसे घर ले जा रही हूं !

पैपियो : यह क्या करने जा रही है ?

मिसेज बीफ : (कूदने की तैयारी करते हुए, चौकी के किनारे पर) मैं आ रही हूं डार्लिंग, मैं आ रही हूं।
रही हूं डार्लिंग, मैं आ रही हूं।

बेरांजे : यह छलांग लगाने जा रही है।

बोटार : यह उसका फर्ज है।

ड्यूडार : यह मरेगी नहीं।

(डेजी को छोड़, जो अब भी फोन पर बात कर रही है, हर कोई उसके पास चौकी पर पहुच जाता है। मिसेज बीफ छलांग लगाती है। बेरांजे उसे रोकने की कोशिश करता है लेकिन उसके हाथ में मिसेज बीफ की स्कर्ट रह जाती है।)

बेराजे : मैं उसे रोक नहीं पाया।

(नीचे से गैंडे की बड़े प्यार से चिंघाड़ने की आवाज सुनाई देती है।)

मिसेज बीफ : मैं आ गई, डार्लिंग, मैं आ गई।

ड्यूडार : वह सीधा उसकी पीठ पर जा गिरी है।

बोटार : बड़ी अच्छी सवार लगती है ?

मिसेज बीफ की आवाज : घर चलो, डार्लिंग, आओ घर चलें।

ड्यूडार : दोनों चौकड़ी भरते हुए जा रहे हैं।

(ड्यूडार, बेराजे, बोटार, मिस्टर पैपियों मंच पर वापस आते हैं और खिड़की की ओर जाते हैं।)

बेरांजे : काफी तेज जा रहे है।

ड्यूडार : (मिस्टर पैपियो से) आपने कभी घुड़सवारी की है ?

पैपियों : बहुत पहले···थोड़ी सी···(मंच के ऊपरी भाग की ओर मुड़कर ड्यूडार से) अभी उसने फोन खत्म नहीं किया !

बेरांजे : (गैंडे का आंखों से पीछा करते हुए) अब दोनों काफी दूर निकल गए। अब तो वे दिखाई ही नहीं देते।

डेजी : (कमरे से बाहर आते हुए) फायर ब्रिगेड का नम्बर काफी मुसीबत से मिला···

बोटार : (जैसे वह अपने आप से बात करना समाप्त कर रहा हो) क्या बेशर्मी है !

डेजी : ···फायर ब्रिगेड का नम्बर काफी मुसीबत से मिला।

पैपियों : क्या सब जगह आग लगी हुई है ?

बेरांजे : मैं मिस्टर बोटार से सहमत हूं। मिसेज बीफ ने जो कुछ किया है वह सचमुच दिल को छू लेने वाला है। उसका दिल अच्छा है।

पैपियों : मेरा एक कर्मचारी कम हो गया। उसकी जगह एक नया आदमी रखना पड़ेगा।

बेरांजे : आप क्या सचमुच यह सोचते हैं कि वह अब हमारे लिए किसी काम की नहीं ?

डेजी : नहीं, आग तो कहीं नहीं लगी, फायर ब्रिगेड को दूसरे गैंडों के लिए बुलाया गया है।

बेरांजे : दूसरे गैंडो के लिए ?

ड्यूडार : क्या, दूसरे गैंडों के लिए ?

डेजी : हां, दूसरे गैंडों के लिए। सारे शहर में इधर-उधर उनके होने की खबर है। सुबह वे सात थे, अब सत्तरह।

बोटार : देखा, मैंने क्या कहा था !

डेजी : (बात जारी रखते हुए) उनका कहना है कि ये बत्तीस होंगे। अभी तो यह सरकारी खबर नहीं है लेकिन जल्दी ही इसकी पुष्टि हो जाएगी।···

बोटार : (पूरी तरह आश्वस्त न होते हुए) हुंह ! ऐसे ही नम्बर बढ़ाए चले जाते हैं।

पैंपियों : क्या वे हमें यहां से निकालने के लिए आएंगे ?

बेराजे : मुझे तो भूख लग रही है ! ...

डेज़ी : हां, वे आएंगे, फायर ब्रिगेड चल पड़ी है !

पैंपियों : फिर काम का क्या होगा !

ड्यूडार : मैं समझता हूं कि यह मजबूरी की हालत है।

पैंपियों : काम का जो वक्त बरबाद हुआ है उसे पूरा करना पड़ेगा।

ड्यूडार : अब कहिए, बोटार साहब, क्या अब भी आप गेंडीय वास्तविकता से इनकार करते हैं ?

बोटार : हमारी यूनियन आपके द्वारा मिस्टर बीफ को बिना नोटिस दिए बर्खास्त करने के खिलाफ है।

पैंपियों : उसका फैसला करना मेरा काम नहीं, हम देखेंगे कि छानबीन कमेटी किस नतीजे पर पहुंचती है।

बोटार : *(ड्यूडार से)* नहीं, ड्यूडार साहब, मैं गेंडीय वास्तविकता से इनकार नहीं करता। मैंने इनकार तो कभी नहीं किया।

ड्यूडार : आप बात बदल रहे हैं।

डेज़ी : हां ! आप बात बदल रहे हैं।

बोटार : मैं फिर कहता हूं कि मैंने कभी इनकार नहीं किया। मैं तो सिर्फ यह देखना चाहता था कि यह बात कहां तक जा सकती है। जहां तक मेरा संबंध है, मैं जानता हूं कि क्या सोचना ठीक है। मैं जो हो रहा है, उसे सिर्फ देखता ही नहीं हूं। मैं उसे समझता हूं और उसे समझा सकता हूं। कम से कम मैं इसे समझा सकता हूं अगर...

ड्यूडार : तो फिर हमें समझाइए।

डेज़ी : इसे समझाइए, बोटार साहब।

पैंपियों : इसे समझाइए, क्योंकि आपके साथी पूछ रहे हैं।

बोटार : मैं समझाऊंगा...

ड्यूडार : हम सुन रहे हैं।
डेज़ी : मैं उतावली हो रही हूं।
बोटार : मैं समझाऊंगा··· किसी न किसी दिन।
ड्यूडार : अब क्यों नहीं ?
बोटार : (मिस्टर पैंपियों से, धमकाते हुए) जल्दी ही हम दोनों आपस में खुलकर बातें करेंगे। (सब से) मैं इन बातों के 'क्यों' और 'कैसे' को जानता हूं, इनकी तहों को जानता हूं···
डेज़ी : कौन-सी तहें ?
बेरांजे : कौन-सी तहें ?
ड्यूडार : मैं इन्हें जानना पसंद करूंगा, इन तहों को···
बोटार : (बात जारी रखते हुए, धमकाने की मुद्रा में) और मैं इसके लिए सभी ज़िम्मेदार लोगों के नाम भी जानता हूं। दगाबाज़ों के नाम। मैं बेवकूफ नहीं हूं। मैं इस शरारत के मकसद और मतलब के बारे में आपको बताऊंगा ! मैं इन भड़काने वाले लोगों को बेनकाब कर दूंगा।
बेरांजे : किन्हें पड़ी होगी कि···?
ड्यूडार : (बोटार से) आप बहक रहे हैं, बोटार साहब।
पैंपियों : अच्छा हो जो हम बहकें नहीं !
बोटार : मैं, मैं बहक रहा हूं, मैं बहक रहा हूं ?
डेज़ी : कुछ देर पहले, आप हम सब पर इलज़ाम लगा रहे थे कि हमारी आंखें हमें धोखा दे रही हैं।
बोटार : थोड़ी देर पहले, हां। अब इस धोखे ने आवेश का रूप ले लिया है।
ड्यूडार : आपके मुताबिक यह परिवर्तन कैसे हुआ ?
बोटार : यह एक राज़ है जो राज़ है ही नहीं, साहब ! सिर्फ बच्चे ही इसे नहीं समझ सकते। सिर्फ पाखंडी लोग इसे न समझने का बहाना करते हैं।

(फायर ब्रिगेड की एक गाड़ी के इंजिन और सायरन

की आवाज सुनी जाती है। ठीक खिड़की के नीचे अचानक ब्रेकें लगने की आवाज आती है।)

डेजी : फायर ब्रिगेड आ पहुंचा !

बोटार : कुछ करना पड़ेगा, ऐसे तो नही चलेगा।

ड्यूडार : इन बातों में कुछ नही रखा, बोटार साहब। गेंडे होते ही हैं, बस, इसमे और कुछ मतलब नही रखा।

डेजी : (खिड़की पर, नीचे देखते हुए) इधर ऊपर, भाई साहब ! (नीचे से आता हुआ फायर ब्रिगेड के काम की तैयारी का शोर सुना जा सकता है।)

फायरमैन की आवाज : सीढ़ी लगाओ !

बोटार : (ड्यूडार से) इन घटनाओं की कुंजी मेरे पास है, इनको समझाने का एक ऐसा तरीका जो फेल नही हो सकता।

पैपियों : फिर भी दुपहर बाद काम पर वापस लौट आना चाहिए। (सीढ़ी को खिड़की के साथ लगाते हुए देखा जा सकता है।)

बोटार : दफ्तर का कुछ नही बिगड़ेगा, मिस्टर पैपियों।

पैपियो : मैनेजमेंट क्या कहेगी ?

ड्यूडार : यह एक एक्सेप्शनल केस है।

बोटार : (खिड़की की ओर सकेत करते हुए) इस रास्ते से ऊपर आने को कोई हमें मजबूर नहीं कर सकता। सीढ़ियों की मरम्मत होने तक हमे रुकना पड़ेगा।

ड्यूडार : अगर किसी की टांग टूट गई तो मैनेजमेंट के लिए मुसीबत खड़ी हो सकती है।

पैपियो : यह सही है।

(एक फायरमैन का टोप दिखाई देता है, उसके बाद फायरमैन।)

बेरांजे : (डेज़ी से खिड़की की ओर सकेत करते हुए) पहले आप, मिस डेज़ी।

फायरमैन : चलिए, मादाम !

(डेज़ी को खिड़की पार करते हुए फायरमैन अपनी बांहों मे उठा लेता है, और उसके साथ अदृश्य हो जाता है।)

ड्यूडार : अलविदा, मिस डेज़ी। जल्दी मिलेंगे।

डेज़ी : (अदृश्य होते हुए) अलविदा, मिलेंगे !

पैंपियों : (खिड़की पर) कल सुबह मुझे फोन करना, मिस डेज़ी। आप मेरे घर आकर चिट्ठियां टाइप करेंगी।

(बेरांजे से) बेरांजे साहब, मैं आपका ध्यान इस बात की ओर दिलाना चाहता हूं कि हमें छुट्टियां नहीं हैं, और जितनी जल्दी हो सकेगा, काम शुरु हो जाएगा। (बाकी दोनों से) आप दोनों ने सुन लिया न।

ड्यूडार : ठीक है, मिस्टर पैंपियों।

बोटार : हां, यहां तो खून का आखिरी कतरा भी चूसकर ही छोड़ेंगे !

फायरमैन : (खिड़की पर फिर से प्रकट होकर) अब कौन चलेगा ?

पैंपियों : (तीनों से) आप लोग चलिए।

ड्यूडार : पहले आप, मिस्टर पैंपियों।

बेरांजे : पहले आप, चीफ साहब।

बोटार : हां, पहले आप।

पैंपियो : (बेरांजे से) मिस डेज़ी के पास कुछ फाइलें थीं, उन्हें उठा लाओ। वहां मेज पर।

(बेरांजे फाइलें लेने जाता है, और लाकर पैंपियों को देता है।)

फायरमैन : जल्दी कीजिए। हमारे पास ज्यादा समय नही है। और भी कई हैं जो हमें बुला रहे हैं।

बोटार : मैंने कहा था न !

(मिस्टर पैंपियों, बगल में फाइलें दबाए, खिड़की पार करता है।)

पैंपियों : (फायरमैन से) फाइलों को जरा ध्यान से। (ड्यूडार, बोटार, बेरांजे की ओर मुड़कर) आप सब को अलविदा।

ड्यूडार : अलविदा, मिस्टर पैंपियों।

बेराजे : अलविदा, मिस्टर पैंपियों।

पैंपियो : (वह अब दिखाई नही दे रहा, उसकी आवाज़ सुनाई देती है।) ध्यान से, फाइलें !

पैंपियों की आवाज़ : ड्यूडार, ताले लगा देना !

ड्यूडार : (चिल्ला कर) चिंता न कीजिए, मिस्टर पैंपियों। (बोटार से), पहले आप, बोटार साहब।

बोटार : ठीक है, मैं जा रहा हूं। मैं फौरन संबंधित अधिकारी को मिलने जा रहा हूं। मैं इस रहस्य को सुलझा कर ही रहूंगा जो कि रहस्य नहीं है।

(वह खिड़की पार करने के लिए इसके पास जाता है।)

ड्यूडार : (बोटार से) मैं तो सोचता था कि आपको ये सब बातें साफ हो चुकी हैं !

बोटार : (खिड़की पार करते हुए) आपके इस ताने का मुझ पर कोई असर नहीं है। जो मैं चाहता हूं वह यह कि मैं आपकी साज़िश के सबूत और दस्तावेज़—हां—आपकी साज़िश के सबूत पेश करूं।

ड्यूडार : बेकार की बात···

बोटार : आप मेरा अपमान···

ड्यूडार : (उसकी बात काटते हुए) अपमान तो आप मेरा कर रहे हैं···

बोटार : (अदृश्य होते हुए) मैं अपमान नहीं करता। मैं साबित करता हूं।

फायरमैन की आवाज़ : चलिए, चलिए···

ड्यूडार : (बेरांजे से) आज दुपहर बाद आपका क्या प्रोग्राम है ? कुछ पीना-पिलाना हो जाए।

बेरांजे : माफ कीजिए। मैं दुपहर बाद की छुट्टी का फायदा अपने दोस्त जां से मिलने के लिए उठाऊंगा। कुछ भी हो, मैं उससे सुलह करना चाहता हूं। हम झगड पड़े। कसूर कुछ-कुछ मेरा था।

(फायरमैन का सिर खिड़की पर फिर दिखाई देता है।)

फायरमैन : चलिए, चलिए...

बेरांजे : (खिड़की की ओर संकेत करते हुए) पहले आप।

ड्यूडार : (बेरांजे से) पहले आप।

बेरांजे : (ड्यूडार से) नहीं ! पहले आप।

ड्यूडार : (बेरांजे से) नहीं, साहब ! पहले आप।

बेरांजे : (ड्यूडार से) चलिए भी, पहले आप, पहले आप।

फायरमैन : जल्दी कीजिए, जल्दी कीजिए।

ड्यूडार : (बेरांजे से) पहले आप, पहले आप।

बेरांजे : (ड्यूडार से) पहले आप, पहले आप।

(वे दोनों खिड़की इकट्ठे पार करते हैं। फायरमैन दोनों के नीचे जाने में उनकी मदद करता है, जबकि पर्दा गिर रहा है।)

दृश्य की समाप्ति

अंक दो

दूसरा दृश्य

मंच सज्जा

(जां का घर। मंच सज्जा लगभग वैसी ही है जैसे दूसरे अंक के पहले दृश्य के लिए थी अर्थात् मंच दो हिस्सों में बंटा हुआ है। दाईं ओर जां का बेडरूम है जो मंच के आकार के अनुसार तीन-चौथाई या पांच में से चार हिस्से स्थान ले रहा है। मंच के पिछले हिस्से में, दीवार के साथ, जां का बिस्तर जिस पर वह लेटा हुआ है। मंच के मध्य में एक कुर्सी या आरामकुर्सी जिस पर बेरांजे आकर बैठेगा। दाईं ओर, बीच में, जां के बाथरूम को जाता दरवाजा। जब जां नहाने के लिए जाएगा तब नल के बहने और फव्वारे का शोर सुनाई देगा। बेडरूम के बाईं ओर एक पार्टीशन मंच को दो हिस्सों में बांटता है। पार्टीशन के बीचोबीच सीढ़ियों को जाने का दरवाजा। यदि मंच यथार्थ से थोड़ा भिन्न रखना चाहें तो इसे आप कल्पना-प्रधान सज्जा से सज्जित कर सकते हैं। जैसे दरवाजा बिना पार्टीशन के भी प्रस्तुत किया जा सकता है। मंच के बाईं ओर सीढ़ियां हैं जिनका ऊपर का हिस्सा दिखाई दे रहा है और जो जां के फ्लैट को जा रही हैं। जंगला और चौकी भी दिखाई दे रहे हैं। मंच के पिछले हिस्से में चौकी के स्तर पर पड़ोसी के फ्लैट को जाने का दर-वाजा है जो दर्शकों के सामने पड़ता है। इस दरवाजे

से कुछ सीढ़ियां नीचे एक शीशे के दरवाजे का ऊपरी भाग दिखाई दे रहा है जिस पर 'केयरटेकर' लिखा है।

जब पर्दा उठता है, जां कंबल लपेटे बिस्तर पर लेटा है। उसकी पीठ श्रोताओं की ओर है। उसे खांसते हुए सुना जाएगा। कुछ क्षणों के बाद बेरांजे ऊपर की सीढ़ियां चढ़ता हुआ दिखाई देता है। वह दरवाजा थपथपाता है, जां जवाब नहीं देता। बेरांजे फिर से थपथपाता है।

बेरांजे : जां ! (दरवाजा फिर से थपथपाता है।) जां !
(पड़ोसी का दरवाजा थोड़ा-सा खुलता है और एक दुबला-पतला सफेद बकरी दाढ़ीवाला बूढ़ा बाहर झांकता है।)

बूढ़ा : क्या बात है ?

बेराजे : मैं जां से मिलने आया हूं, जां साहब से, मेरा दोस्त।

बूढ़ा : मैंने समझा कि आप मुझे बुला रहे हैं। मेरा नाम भी जां है, तो यह दूसरा जां है।

बूढ़े की पत्नी की आवाज़ : (कमरे के अदर से) यह हमारे लिए है ?

बूढ़ा : (अपनी पत्नी, जो दिखाई नहीं देती, की ओर मुड़कर) यह दूसरे के लिए है।

बेरांजे : (थपथपाते हुए) जा।

बूढ़ा : मैंने उसे बाहर जाते नहीं देखा। कल शाम मैंने उसे देखा था। ऐसा लगता था कि उसका मूड खराब है।

बेरांजे : मैं जानता हूं क्यों, दोष मेरा है।

बूढ़ा : हो सकता है कि वह दरवाज़ा खोलना नहीं चाहता। एक बार फिर कोशिश कर देखिए।

बूढ़े की पत्नी की आवाज़ : जां ! गप्पें मारना बंद करो, जा।

बेरांजे : (थपथपाते हुए) जां !

बूढा : (अपनी पत्नी से) एक सेकंड । क्या मुसीबत···!
(वह दरवाजा बंद कर अदृश्य हो जाता है।)

जां : (अभी भी लेटे हुए, अपनी पीठ दर्शकों की ओर किए हुए, गुस्सैली आवाज में) क्या बात है ?

बेरांजे : मैं आप से मिलने आया हूं, जां साहब ।

जां : कौन है ?

बेरांजे . मैं, बेरांजे । मैं आपको परेशान तो नही कर रहा ?

जां : अच्छा ! यह आप हैं ? अंदर आ जाइए !

बेरांजे : (दरवाजा खोलने की कोशिश करते हुए) दरवाजा बद है ।

जां : एक सेकंड । क्या मुसीबत···! (जां काफी गुस्से मे उठता है । उसने हरे रंग का नाइट सूट पहन रखा है, उसके बाल उलझे हुए हैं ।)एक सेकंड । (वह बिस्तर पर वापस चला जाता है और अपने ऊपर पहले की तरह कंबल डाल लेता है ।) आ जाइए ।

बेरांजे : (अंदर आते हुए) हेलो, जां ।

जां : (बिस्तर मे) क्या बजा है ? आप दफ्तर नही गए ?

बेरांजे : आप अभी भी बिस्तर मे पड़े हैं, आप दफ्तर नही गए ? माफ कीजिए, कहीं मैं परेशान तो नही कर रहा ?

जां : (अब भी पीठ दर्शको के सामने मोड़े हुए) कमाल है, मैं आपकी आवाज ही नही पहचान पाया ।

बेराजे : मैं भी आपकी आवाज नहीं पहचान पाया ।

जां : (अभी भी अपनी पीठ मोड़े हुए) बैठिए ।

बेरांजे : आप बीमार हैं ? ¦(जां अनमने मन से 'हूं' कहता है) बात यह है, जां, कि इस तरह के मामले पर आपके साथ नाराज होना मेरी बेवकूफी थी ।

जां : कैसा मामला ?

बेराजे : कल···

जां : कब कल ? कहां कल ?

वेरांजे : आप भूल गए हैं ? यह उस गैंडे के बारे में था, उस बेचारे गैंडे के बारे मे।

जां : कौन-सा गैंडा ?

वेरांजे : वह गैंडा या फिर वे बेचारे दो गैंडे जिन्हें हमने देखा है।

जां : अच्छा, याद आया···किसने बताया आपको कि ये गैंडे बेचारे थे ?

वेरांजे : बात तो ऐसे ही की जाती है।

जां : ठीक है। बात खत्म करें।

वेरांजे : आप बहुत अच्छे हैं।

जां : तो फिर ?

वेरांजे : फिर भी मैं यह कहना चाहूंगा कि मुझे अफसोस है इस तरह अपनी बात पर अड़े रहने का···जिद के साथ, बेशर्मी के साथ···गुस्से के साथ···हां, थोड़े में कहूं···यह मेरी बेवकूफी थी।

जां : इसमें तो कोई हैरान होने की बात नही।

वेरांजे : मुझे माफ कर दीजिए।

जां : मेरी तबियत बहुत अच्छी नहीं है। (खासता है।)

वेरांजे : तभी आप बिस्तर में लेटे हैं। (बात का लहज़ा बदलते हुए) बात यह है, जां साहब, कि हम दोनों ही ठीक थे।

जां : किस बारे में ?

वेरांजे : इस बारे में···उसी बारे में। एक बार फिर उसी विषय पर वापस आने के लिए माफी चाहता हूं। मैं बात को लम्बा नही करूंगा। मैं यह कहना चाहता हूं, जां साहब, कि हम दोनों अपनी-अपनी जगह ठीक थे। अब यह बात साफ हो गई है। शहर में कुछ दो सींग वाले गैंडे हैं और इसी तरह से कुछ एक सींग वाले भी हैं।

जां : यही तो मैं आपसे कह रहा था ! खैर, कोई बात नही।

वेरांजे : हां, बात तो कोई नहीं।

जां : या फिर बात है, निर्भर करता है।

बेरांजे : (बात जारी रखते हुए) ये कहा से आए हैं, वे कहां से आए हैं, या फिर वे कहां मे आए हैं, ये कहां से आए हैं, असल में इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। मेरी नजरों में सिर्फ एक बात अहमियत रखती है, वह है गैंडों का अपने आप में होना, क्योंकि···

जां : (मुड़कर और अपने अस्त-व्यस्त बिस्तर पर बैठते हुए, बेरांजे के सामने) मेरी तबियत ठीक नहीं है, मेरी तबीयत ठीक नही है !

बेरांजे : अच्छा ! क्या हुआ है आपको ?

जा · ठीक से कहना मुश्किल है, कोई गड़बड़, थोड़े से चक्कर···

बेराजे : कोई कमजोरी ?

जां : बिलकुल नहीं। इसके उलटे मैं धधक रहा हूं।

बेराजे : मेरा मतलब है···कोई छोटी-मोटी कमजोरी। ऐसा तो किसी के साथ भी हो सकता है।

जां : मेरे साथ कभी नही।

बेरांजे . तब, हो सकता है ताकत बहुत ज्यादा हो। बहुत ज्यादा ताकत, यह भी बुरा होता है कभी-कभी। यह नर्वस सिस्टम का संतुलन बिगाड देती है।

जां : मेरा संतुलन बिलकुल ठीक है। (जां की आवाज उत्तरोत्तर रूखी होती जा रही है।) मैं शरीर से और मन से स्वस्थ हूं। मेरा खानदान···

बेरांजे : ठीक है, ठीक है। फिर भी, शायद आपको सर्दी लग गई है। आपको बुखार है ?

जां : पता नही। हा, थोड़ा बुखार होगा। मेरे सिर मे दर्द है।

बेराजे : हां, थोड़ा सिर दर्द ही होगा। मैं चला जाता हूं अगर आप कहें तो।

जां : बैठे रहिए। आप मुझे परेशान नही कर रहे।

बेरांजे : आपकी आवाज भी बैठी हुई है।

जां : बैठी हुई।

बेरांजे : हां, थोड़ी बैठी हुई। यही वजह है कि मैं आपकी आवाज़ नहीं पहचान पाया।

जां : मेरी आवाज़ क्यों बैठने लगी ? मेरी आवाज़ नही बदली है, यह तो आपकी आवाज़ है जो बदली हुई है।

बेरांजे : मेरी ?

जां : क्यों नही ?

बेरांजे : हो सकता है। मेरा ध्यान नहीं गया।

जां : किन-किन चीज़ों पर आपका ध्यान जा सकता है ? (अपने माथे पर हाथ रखते हुए) ठीक बात तो यह है कि दर्द माथे में हो रहा है। कहीं टक्कर लगी होगी, और क्या !
(उसकी आवाज़ और अधिक भर्रा जाती है।)

बेरांजे : कब लगी होगी यह टक्कर ?

जां : पता नहीं। मुझे याद नहीं।

बेरांजे : दर्द तो हुआ होता।

जां : शायद सोते में टक्कर लग गई हो।

बेरांजे : झटके से आपकी नींद खुल गई होती। तब तो ज़रूर आपने सपने में ही यह टक्कर खाई होगी।

जां : मैं सपने नहीं देखा करता···

बेरांजे : (बात जारी रखते हुए) सोते में ही आपका सिर दर्द शुरू हुआ होगा, लेकिन आपको याद नहीं कि आपने कोई सपना देखा, या फिर यह कहना बेहतर होगा कि आपको अनकांशसली याद है !

जां : मुझे, अनकांशसली ? मैं अपने विचार-प्रवाह का स्वामी हूं, मैं स्वयं को भटकने नहीं देता। मैं सीधा जाता हूं, हमेशा सीधा जाता हूं।

बेरांजे : मैं जानता हूं। मैं अपनी बात समझा नहीं पाया।

जां : बात साफ-साफ किया करें। ऐसी जली-कटी बातें कहने का कोई फायदा नहीं।

बेरांजे : जब किसी को सिरदर्द होता है तो आमतौर पर उसे ऐसा

लगता है कि जैसे उसने कहीं चोट खाई हो। (जां के समीप आते हुए) अगर आपको चोट लगी होती तो कोई न कोई टिप्पा ज़रूर पड़ा होता।

(जां को देखते हुए) अरे, हा, यह रहा, यह रहा टिप्पा, सच !

जां : टिप्पा ?

बेरांजे : एक छोटा-सा।

जां : कहां ?

बेरांजे : (जां के माथे की ओर संकेत करते हुए) यह रहा, आपकी नाक के ठीक ऊपर, यह उठता हुआ।

जां : मेरे कोई टिप्पा नहीं हो सकता। हमारे खानदान में कभी किसी को टिप्पा नहीं हुआ।

बेरांजे : आपके पास शीशा है ?

जां : अरे, यह क्या ! (अपने माथे को टटोलते हुए) कुछ तो लगता है। मैं अभी देखता हूं, बाथरूम में। (वह फौरन उठ खड़ा होता है और बाथरूम की ओर जाता है। बेरांजे की आंखें उसके पीछे-पीछे जाती हैं। बाथरूम में से) यह सच है, एक टिप्पा पड़ गया है। (वह वापस आता है, उसकी त्वचा कुछ हरी हो गई है।) देखा आपने, मुझे सच-मुच चोट लगी है।

बेरांजे : आप ठीक नज़र नहीं आ रहे, आपका रंग कुछ हरा-पीला पड गया है।

जां : मुझे जली-कटी बातें कहने में आपको मज़ा आता है। और आप, आपने कभी अपने-आपको देखा ?

बेरांजे : माफ कीजिए, मैं आपको ठेस नहीं पहुंचाना चाहता।

जां : (चिढ़कर) ऐसा लगता तो नहीं है।

बेरांजे : आपकी सांस बड़े ज़ोर से चल रही है। क्या आपका गला खराब है ? (जां बिस्तर पर फिर से बैठने के लिए जाता

है।) क्या आपका गला खराब है? हो सकता है कोई इन्फेक्शन हो।

जां : मुझे इन्फेक्शन क्यों होगा?

बेरांजे : यह कोई अपमानजनक बात तो नहीं, मुझे भी कई बार ऐसा इन्फेक्शन हुआ है। इजाजत हो तो आपकी नाड़ी देखूं।

(बेरांजे उठता है, जा की नाड़ी देखने के लिए जाता है।)

जां : (और अधिक भर्राई आवाज़ में) रहने दीजिए।

बेरांजे : आपकी नाडी तो बिलकुल ठीक है। आप घबराइए नहीं।

जां : मैं बिलकुल नहीं घबराया हुआ, मैं घबराऊं किसलिए?

बेरांजे : आप ठीक कहते हैं। कुछ दिन आराम के बाद सब ठीक हो जाएगा।

जां : आराम के लिए मेरे पास समय नहीं है। मुझे अपने खाने की तलाश करनी होती है।

बेरांजे : अगर आपको भूख लग रही है तो फिर आपके साथ कोई खास गड़बड नहीं। तो भी आपको कुछ दिन आराम करना चाहिए। इसी मे अक्लमंदी है। आपने डाक्टर को बुलाया है?

जां : मुझे डाक्टर की ज़रूरत नहीं।

बेरांजे : डाक्टर को बुलवाना ही चाहिए।

जां : आप डाक्टर को नहीं बुलाएगे क्योंकि मैं डाक्टर को नहीं बुलाना चाहता। मैं अपना इलाज खुद कर लेता हूं।

बेरांजे : डाक्टरी इलाज में यकीन न रखना आपकी गलती है।

जां : डाक्टर ऐसी बीमारियों को जन्म देते हैं जो होती ही नहीं।

बेराजे : उनकी नियत बुरी नहीं। ऐसा वे लोगों का इलाज करने की खुशी मे करते हैं।

जां : वे बीमारियों को जन्म देते हैं, वे बीमारियों को जन्म देते हैं।

बेरांजे : शायद देते हों। लेकिन जन्म देने के बाद वे इनका इलाज भी कर देते हैं।

जा : मुझे सिर्फ जानवरों के डाक्टरों में विश्वास है।

बेरांजे : (जिसने जां की कलाई छोड़ दी थी, अब फिर से इसे पकड़ लेता है।) आपकी नाड़ियां फूलती मालूम होती हैं। ये बाहर आ रही हैं।

जां : यह ताकत की पहचान है।

बेरांजे : ज़रूर, यह सेहत और ताकत की पहचान है। लेकिन··· (जां के न चाहते हुए भी बेरांजे उसके बाजू को बड़े गौर से देखता है। जां झटककर अपना हाथ पीछे कर लेता है।)

जां : यह आप क्या देख रहे हैं, जैसे मैं किसी चिड़ियाघर से आया हूं?

बेरांजे : आपकी त्वचा···

जां : मेरी त्वचा से आपको क्या काम है! क्या मैं आपकी त्वचा के बारे में कुछ कहता हू?

बेरांजे : लगता है···हां, लगता है कि यह देखते-देखते रंग बदल रही है। यह थोड़ी हरी-हरी हो रही है। (वह जां का हाथ फिर से पकड़ने की कोशिश करता है।) यह सख्त भी होती जा रही है।

जां : (अपना हाथ फिर से पीछे करते हुए) मुझे इस तरह छुएं नहीं। आखिर आपको हुआ क्या है? आप तो मेरे नाक में दम कर रहे हैं।

बेरांजे : (अपने आप से) लगता है, इसकी बीमारी उससे कहीं ज्यादा गंभीर है जैसा कि मैंने सोचा था। (जा से) डाक्टर को बुलाना चाहिए।

(वह टेलीफोन की ओर जाता है।)

जां : टेलीफोन मत छेड़िए। (वह बेराजे की ओर तेज़ी से जाता है और उसे पीछे धकेलता है। बेरांजे लड़खड़ाता है।)

आप अपने काम से वास्ता रखिए।

वेरांजे : ठीक है, ठीक है। यह तो आपकी भलाई के लिए था।

जां : (खांसते हुए और जोर-जोर से सांस लेते हुए) मैं अपनी भलाई आपसे बेहतर जानता हूं।

वेरांजे : आप आराम से सास नही ले पा रहे हैं।

जां : सांस तो कोई वैसे ही लेता है जैसे वह ले सकता है! आपको मेरा सास लेने का तरीका अच्छा नही लगता, मुझे आपका अच्छा नही लगता। आप तो इतना धीमे-धीमे सांस लेते हैं कि सुनाई भी नहीं देता, लगता है आप किसी भी पल मरने वाले हैं।

वेरांजे : मुमकिन है मुझ में आप-सी ताकत न हो।

जां : तो क्या मैं आपको डाक्टर के पास भेजता हू ताकि वह आपको कुछ ताकत दे दे? हर आदमी को यह आजादी है कि वह जो चाहे, करे!

वेरांजे : आप इस तरह नाराज न हों मेरे साथ। आप तो जानते है कि मैं आपका दोस्त हूं।

जां : दोस्ती है ही कहां! मुझे आपकी दोस्ती मे विश्वास नहीं।

वेरांजे : आप मुझे चोट पहुंचा रहे है।

जां : आपको परेशान होने की कोई जरूरत नही।

वेरांजे : मेरे जां साहब…

जां : नही हूं मैं आपका जां साहब।

वेरांजे : आज आप सचमुच इंसानियत के दुश्मन हो रहे हैं।

जां : हां, मैं इंसानियत का दुश्मन हूं, इंसानियत का दुश्मन, इंसानियत का दुश्मन, मुझे इंसानियत का दुश्मन होना अच्छा लगता है।

वेरांजे : तो इसका मतलब है कि आप अब भी कल के हमारे बेकार के झगड़े पर मुझ से नाराज हैं। दोष मेरा था, मैं मानता हूं। और तभी तो मैं आया हूं माफी मांगने…

जां : किस झगड़े की आप बात कर रहे हैं?

बेरांजे : मैंने अभी आपको याद दिलाया था। आपको पता है, वह गैंडा !

जां : (बेरांजे को सुने बिना) साफ बात तो यह है कि मुझे इंसानों से नफरत नहीं है, बस, मेरे लिए वे कोई मतलब नहीं रखते, या फिर मुझे उनसे चिढ़ होने लगी है। लेकिन उन्हें मेरे रास्ते मे नही आना चाहिए, वरना मैं उन्हें कुचल दूंगा।

बेरांजे : आप तो जानते ही हैं कि मैं आपके लिए कभी कोई अड़चन नही बनूंगा···

जां : मेरा एक लक्ष्य है, मेरा। मैं सीधा उसी की ओर चल रहा हूं।

बेरांजे : आपने ठीक कहा, बेशक ! लेकिन, मैं समझता हूं कि आप एक नैतिक संकट से गुजर रहे हैं। (कुछ देर से जा पिंजरे में पड़े एक जानवर के समान कमरे की एक दीवार से दूसरी दीवार तक तेजी से कदम बढाता हुआ चला जा रहा है। बेरांजे उसे ध्यान से देखता है, कभी-कभी उससे बचने के लिए थोड़ा एक तरफ हट जाता है। जा की आवाज उत्तरोत्तर भर्राती जाती है।) ज्यादा गुस्से में न आइए, ज्यादा गुस्से में न आइए।

जां : मैं कपड़ो में परेशान हो रहा था, अब मेरा नाइट सूट भी परेशान कर रहा है मुझे !
(जां अपनी कमीज के ऊपर के एक-दो बटन खोलकर हवा लेता है।)

बेरांजे : अरे···यह आपकी त्वचा को क्या हो रहा है ?

जां : फिर मेरी त्वचा ? यह मेरी त्वचा है, मैं निश्चित रूप से इसे आपकी त्वचा के साथ नहीं बदलूगा।

बेरांजे : यह चमड़े की तरह लग रही है।

जां : यह ज्यादा मजबूत है। मैं बुरे मौसम का मुकाबला कर सकता हूं।

बेरांजे : आप हरे पर हरे होते जा रहे हैं।

जां : आज आप पर रंगों का पागलपन छाया हुआ है। आपका दिमाग ठिकाने नहीं है, आप फिर पीकर आए हैं।

बेरांजे : पी तो मैंने कल थी, आज बिलकुल नही।

जां : यह सब आपकी पिछली अय्याशी का नतीजा है।

बेरांजे : मैंने आपसे वायदा किया है अपने आपको बदलने का, आप जानते ही हैं, क्योंकि मैं, मैं आप जैसे दोस्तों की सलाह पर गौर करता हूं। मैं बेइज्जत महसूस नही करता, बिलकुल नहीं।

जां : तो मैं क्या करूं ! बर्र्र्र्र्…

बेरांजे : आप क्या कह रहे हैं ?

जां : मैं कुछ नही कह रहा हूं। मैं तो बर्र्र्र्र्…कहता हूं। मुझे अच्छा लगता है।

बेरांजे : (जां की आखों में आंखें डाल देखते हुए) आप जानते हैं बीफ़ के साथ क्या हुआ है ? वह गेंडा बन गया है।

जां : बीफ़ को क्या हुआ है ?

बेरांजे : वह गेंडा बन गया है।

जां : (अपनी कमीज के पल्लों से हवा करते हुए) बर्र्र्र्…

बेराजे : चलिए, अब मजाक छोड़िए।

जां : मुझे सांस तो लेने दीजिए। यह मेरा हक है। मैं अपने घर मे हू।

बेरांजे : मैं मना तो नही कर रहा।

जां : यह अच्छा है कि आप मुझे मना नही कर रहे। मुझे गर्मी लग रही है, मुझे गर्मी लग रही है। बर्र्र्र्र्…एक सेकड। मैं थोड़ा तरो-ताजा होकर आता हूं।

बेरांजे : (जबकि जां बाथरूम की ओर तेज़ी से जा रहा है।) यह सब बुखार की वजह से है। (जां बाथरूम में है, उसकी हांफने की आवाज सुनी जा सकती है, और नल का पानी गिरने की भी।)

जां : (बाथरूम में से) बर्र्र्र्र्...

बेरांजे : इसे कंपकंपी लग गई है। यह चाहे कुछ भी कहे, मैं डाक्टर को बुलाता हूं।

(वह फिर से टेलीफोन की ओर जाना शुरू करता है लेकिन जां की आवाज़ सुनते ही फौरन रुक जाता है।)

जां : तो हमारा बीफ गेंडा बन गया है। हा ! हा ! हा ! ... उसने आप सबको उल्लू बनाया है, उसने अपना भेस बदल लिया है। (जां बाथरूम के दरवाज़े से अपना सिर बाहर निकालता है। वह बहुत अधिक हरा लग रहा है। उसके नाक के ऊपर का टिप्पा थोड़ा और बड़ा हो गया है।) उसने अपना भेस बदल लिया है।

बेरांजे : (कमरे में टहलते हुए, जा को देखे बिना) मैं आपको *विश्वास दिलाता हूं कि यह सब कुछ असली लग रहा था।*

जां : तो फिर यह उसका अपना सिरदर्द है।

बेरांजे : (जां की ओर मुड़कर जो बाथरूम मे गायब हो जाता है।) *उसने जानबूझ कर ऐसा नहीं किया होगा। यह परिवर्तन* उसकी मर्जी के खिलाफ हुआ है।

जां : (बाथरूम में से) आप कैसे कह सकते हैं ?

बेरांजे : कम से कम, जो कुछ हुआ उससे तो इसी नतीजे पर पहुंचते हैं।

जां : और अगर उसने ऐसा जानबूझ कर किया होता तो ?

बेरांजे : मुझे तो हैरानगी होती। कम से कम मिसेज़ बीफ से तो यही लगता था कि वह कुछ नहीं जानती ...

जा : (भर्राई आवाज़ के साथ) हा ! हा ! हा ! वह मोटी-मुटल्ली मिसेज़ बीफ ! बिलकुल गधी है।

बेरांजे : गधी है या नहीं...

जा : (तेज़ी से अन्दर आता है, कमीज़ उतारता है और उसे बिस्तर पर फेंकता है जबकि बेरांजे अपनी नज़र शिष्टा-

चारवश दूसरी ओर कर लेता है। जां, जिसकी पीठ और छाती अब हरी हैं, बाथरूम में वापस चला जाता है।
(कमरे में आते हुए और वापस जाते हुए) बीफ अपनी बीवी को अपने इरादों के बारे में कभी कुछ नहीं बताता था···

बेरांजे : आप गलत कह रहे हैं, जां साहब। इसके उलटे, इस जोड़ी की आपस में खूब बनती थी।

जां : खूब बनती थी, आप ऐसा समझते हैं? हूं, हूं! बर्र्र्र्र्र···

बेरांजे : (बाथरूम की ओर जाते हुए, लेकिन जैसे ही वह इसके समीप पहुंचता है, जां अचानक दरवाजा बंद कर देता है।) खूब बनती थी। सबूत यह है कि···

जां : (अन्दर से) बीफ की अपनी एक निज की जिन्दगी भी थी। एक गुप्त कोना उसने अपने दिल की गहराइयों मे रखा हुआ था।

बेरांजे : मुझे आपको बात नही करने देनी चाहिए, लगता है इससे आपको दर्द होता है।

जां : इसके उलटे, मुझे इससे आराम मिलता है।

बेरांजे : तो भी मुझे डाक्टर को बुलाने दीजिए, मेरी मानिए।

जां : मैं आपको सख्ती से मना करता हूं। मुझे जिद्दी लोग अच्छे नही लगते। (जां बेडरूम में वापस आता है। बेरांजे थोड़ा डर कर पीछे हटता है क्योंकि जां ज्यादा हरा हो गया है, और बड़ी मुश्किल से बोल पाता है। उसकी आवाज बिलकुल नही पहचानी जाती।) खैर, चाहे वह अपनी मर्जी मे गेंडा बना है या अपनी मर्जी के खिलाफ, वह शायद उसके लिए अच्छा साबित हो।

बेरांजे : आप यह क्या कह रहे हैं, जां साहब? आप कैसे कह सकते हैं कि···

जां : आपको हर जगह बुराई ही दिखाई देती है। जाहिर है कि

गैंडा बनने में उसे खुशी मिली है! इसमे कोई खास बात कहां है?

बेरांजे : ठीक है कि इसमें कोई खास बात नही। फिर भी मुझे शक है कि इस में उसे इतनी खुशी मिली होगी।

जां : वह कैसे?

बेरांजे : इस 'कैसे' का जवाब देना तो मुश्किल है। यह महसूस करने की बात है।

जां : मैं आपको बता रहा हूं कि यह इतना बुरा नही है! आखिरकार, गैंडे भी हम जैसे ही जीवधारी होते हैं, और उन्हें जीने का उतना ही अधिकार है जितना कि हमें!

बेरांजे : इस शर्त पर कि वे हमारा जीवन बरबाद न करें। आपने कभी विचार किया है कि हमारे और इनके सोचने के तरीकों में कितना फर्क है?

जां : (कमरे में टहलते हुए, बाथरूम के अन्दर और बाहर आते-जाते हुए) क्या आप समझते हैं कि हमारा तरीका बेहतर है?

बेरांजे : कम से कम हमारे पास हमारी नैतिकता है जो, मैं समझता हूं, इन जानवरों की नैतिकता से मेल नहीं खाती।

जां : नैतिकता! अगर नैतिकता की बात करते हैं तो मैं नैतिकता से तंग आ गया हूं! जवाब नही इस नैतिकता का! नैतिकता को छोड़ना होगा!

बेरांजे : इसके बदले आप क्या लाएंगे?

जां : (उसी अभिनय में) प्रकृति!

बेरांजे : प्रकृति?

जां : (उसी अभिनय में) प्रकृति के अपने नियम हैं। नैतिकता प्रकृति-विरोधी है।

बेरांजे : अगर मैं ठीक समझ रहा हूं, आप नैतिक नियमों को जंगल के नियमों से बदलना चाहते हैं!

जां : मेरे लिए ठीक रहेगा, मेरे लिए ठीक रहेगा।

बेरांजे : कहना आसान है। लेकिन सच तो यह है कि कोई नहीं...

जां : (बात काटते हुए और कमरे मे टहलते हुए) हमें अपने जीवन के आधारों का पुनर्निर्माण करना है। हमें मूल ईमानदारी की ओर लौटना पडेगा ।

बेरांजे : मैं आप से बिलकुल सहमत नहीं ।

जां : (ज़ोर-ज़ोर से हांफते हुए) मुझे सांस चाहिए।

बेरांजे : जरा सोचिए, यह तो आप मानेंगे कि हमारी एक फिलासफी है जो इन जानवरों के पास नहीं, मूल्यों का एक अनोखा विधान भी है। मानव-सभ्यता के सैकड़ों वर्षों ने इसका निर्माण किया है।...

जां : (बाथरूम के अंदर से) इस सब का नाश कर दें, हम बेहतर महसूस करेंगे।

बेरांजे : मैं आपको सीरियस्ली नहीं ले रहा। आप मज़ाक कर रहे हैं, आप शायरी कर रहे हैं।

जां : बर्र्र्र्र्...

(वह लगभग चिंघाड़ता है।)

बेरांजे : मुझे नहीं पता था कि आप शायर भी हैं।

(वह फिर से चिंघाड़ता है।)

बेरांजे : मैं आपको इतना जानता हूं कि मुझे विश्वास नहीं होता कि यह आपके अपने विचार हैं। क्योंकि, मैं जानता हूं और आप भी जानते हैं कि मनुष्य...

जा : (बात काटते हुए) मनुष्य...यह शब्द फिर मत कहिए !

बेरांजे : मेरा मतलब है मानव, मानवतावाद...

जां : मानवतावाद के दिन लद गए ! आप तो बिलकुल पुराने किस्म के नाजुक मिजाज इंसान हैं। (बाथरूम के अन्दर जाता है।)

बेरांजे : लेकिन, कम से कम, मन...

जां : (बाथरूम में से) पिटी-पिटाई बातें ! आप मुझे बकवास सुना रहे हैं।

बेरांजे : बकवास !

जां : (बाथरूम में से एक बड़ी भर्राई आवाज में, जिसे मुश्किल से समझा जा सकता है) बिलकुल।

बेरांजे : आपके मुंह से ऐसा सुन मुझे बड़ी हैरानगी हुई है, जां साहब ! क्या आपका दिमाग बस में नहीं ? तो क्या आप खुद गैंडा बनना चाहेंगे ?

जा : क्यों नहीं ! मुझ में आप जैसा कंप्लैक्स नही है।

बेरांजे : थोड़ा साफ-साफ बोलिए। मुझे समझ नहीं आ रहा। आप ठीक से उच्चारण नहीं कर रहे हैं।

जां : (बाथरूम के अन्दर से) कान खोलकर रखिए !

बेरांजे : क्या ?

जां : कान खोलकर रखिए। मैंने कहा, गैंडा बनने में बुराई क्या है ? मुझे परिवर्तन अच्छे लगते हैं।

बेरांजे : इस तरह की बातें आपके मुंह से···

(बेरांजे अचानक रुक जाता है क्योंकि जां एक भयानक रूप में कमरे के अन्दर आता है। वह सच-मुच पूरी तरह से हरा बन गया है। उसके माथे का टिप्पा अब लगभग एक गैंडे का सींग बन गया है।) अरे-रे-रे, आप तो सचमुच पागल हो गए लगते हैं ! (जा बिस्तर की ओर लपकता है, कंबल उठाकर फर्श पर फेंक दता है, कुछ समझ मे न आने वाले तथा गुस्से से भरे शब्दों का उच्चारण करता है, बड़ी अजीब ध्वनियां निकालता है।) इतना गुस्से में न आइए, शांत हो जाइए ! मैं तो अब आपको पहचान भी नहीं पा रहा।

जां : (लगभग न समझ आनेवाले शब्दों मे) गर्मी···बहुत गर्मी। इन सबका नाश कर देना चाहिए, कपड़े, खुजली हो रही

है, कपड़े, खुजली हो रही है।

(वह अपना पाजामा नीचे गिरा देता है।)

बेरांजे : यह आप क्या कर रहे हैं ? मैं तो अब आपको पहचान भी नहीं पा रहा ! आप, जो आमतौर पर बड़े तहज़ीब-पसंद हैं !

जा : दलदल ! दलदल !···

बेरांजे : मेरी ओर देखिए ! लगता है आप मुझे देख नही पा रहे ! लगता है आप मुझे सुन नहीं पा रहे !

जां : मैं आपको अच्छी तरह सुन सकता हूं। मैं आपको अच्छी तरह देख सकता हूं।

(वह बेरांजे की ओर तेज़ी से भागता है, सिर नीचा किए। बेरांजे रास्ते से हट जाता है।)

बेरांजे : सभल कर !

जां : (बुरी तरह से हांफते हुए) मांफ कीजिए !

(फिर वह बड़ी तेज़ी के साथ बाथरूम में चला जाता है।)

बेरांजे : (बचकर निकलने के लिए बाईं ओर के दरवाजे से जाने लगता है, तब बीच में ही मुड़कर वापस लौटता है, और जां के पीछे बाथरूम मे जाता है, यह कहते हुए, मै इसे इस तरह नही छोड सकता, यह मेरा दोस्त है ! (बाथरूम में से) मैं डाक्टर को बुला रहा हू। यह बहुत जरूरी है, ज़रूरी है, मेरी बात मानिए।

जां : (बाथरूम मे से) नहीं।

बेरांजे : (बाथरूम में से) हां, बुला रहा हूं। शांत हो जाइए, जा साहब ! आपने तो हद कर दी। अरे, आपका सीग तो लंबे पर लम्बा हुआ जा रहा है।···आप गेंडा बन गए।

जा : (बाथरूम में से) मैं तुम्हें रौंद दूगा, मैं तुम्हें रौंदकर रख दूगा।

(बाथरूम से बहुत शोरगुल, चिंघाड़ने की आवाज़,

चीज़ें गिरने और एक शीशा टूटने की आवाज़ें। तब बेरांजे मंच पर आता है। वह बहुत डरा हुआ है। बाथरूम का दरवाज़ा वह बड़ी मुश्किल से बन्द करने की कोशिश कर रहा है क्योंकि अन्दर से बहुत ज़ोर लगाया जा रहा है।)

बेरांजे : (दरवाज़े को धकेलते हुए) वह गैंडा बन गया, वह गैंडा बन गया!

(बेरांजे दरवाज़ा बन्द करने में सफल हो गया है। उसके कोट में गैंडे के सीग ने छेद कर दिया है। जिस समय बेरांजे दरवाज़ा बन्द करने में सफल हुआ था उसी समय गैंडे के सीग ने दरवाज़े में छेद कर दिया था। इस जानवर द्वारा लगातार दरवाज़े को धकेले जाने के कारण दरवाज़ा हिलने लगता है। बाथरूम मे शोरगुल जारी है और चिंघाड़ने के साथ अनेक और अस्पष्ट रूप से बोले गए शब्द जैसे— मुझे आग लगी है, साला, हरामी इत्यादि, इत्यादि सुनाई देते हैं यह सब जब चल रहा है, बेरांजे दाएं दरवाज़े की ओर तेज़ी से बढ़ता है।)

मैंने कभी नही सोचा था कि वह ऐसा भी करेगा!
(वह सीढ़ियों का दरवाज़ा खोलता है और इस मंज़िल के दूसरे दरवाज़े को ज़ोर से खटखटाने जाता है।) बिल्डिंग में एक गैंडा है! पुलिस बुलाइए!

बूढ़ा : (अपना सिर बाहर निकालते हुए) क्या है?

बेरांजे : पुलिस बुलाइए! बिल्डिंग मे एक गैंडा है!

बूढ़े की बीवी की आवाज़ : क्या बात है, जा? यह शोर किसलिए मचा रहे हो?

बूढ़ा : (अपनी बीवी से) मेरी समझ में नही आ रहा कि यह क्या कह रहा है! उसने एक गैंडा देखा है।

बेरांजे : हां, बिल्डिंग में पुलिस बुलाइए !

बूढ़ा : आप कहना क्या चाहते है ? आपको क्या हो गया है जो इस तरह लोगों को परेशान कर रहे हैं ? यह कोई तरीका है !

(जोर से दरवाज़ा बन्द कर लेता है।)

बेरांजे : (दो-तीन सीढ़ियां तेज़ी के साथ उतरकर) केयरटेकर, केयरटेकर, मकान मे एक गैंडा है, पुलिस बुलाओ ! केयर-टेकर ! (केयरटेकर के कमरे का ऊपर का हिस्सा खुलता हुआ दिखाई देता है। एक गैंडे का सिर दिखाई देता है।) एक और ! (बेरांजे बड़ी तेजी मे सीढ़िया चढ़ता है। वह जा के कमरे में जाना चाहता है, लेकिन ठिठक जाता है, तब वह फिर से बूढ़े के दरवाजे की ओर जाता है। इसी क्षण दरवाजा खुलता है और दो गैंडों के छोटे-छोटे सिर सामने दिखाई देते हैं।) हे राम ! हे भगवान् !

(बेरांजे जां के कमरे में जाता है जबकि बाथरूम का दरवाजा अब भी बुरी तरह से हिल रहा है। बेरांजे मंच के अगले हिस्से पर दर्शकों के सामने विद्यमान खिड़की की ओर जाता है जो सिर्फ एक चौखटे के रूप में है। उसका बहुत बुरा हाल है। लगता है जैसे बेहोश हो जाएगा। वह बुद-बुदाता है :) हे भगवान, हे भगवान ? (वह बड़ी मुश्किल से एक बड़ा डग भरकर दर्शकों के सामने की खिड़की पार करने लगता है। लेकिन पैर रखने के साथ ही फौरन वापस हो जाता है क्योंकि उसी समय, वाद्यवृन्द की बैठक की जगह में एक बड़ी संख्या में गैंडों के सींग तेजी से एक कतार मे चलते दिखाई देते हैं। बेरांजे जितनी जल्दी हो सकता है वापस लौट आता है और कुछ देर के लिए खिड़की से झांकता है।) अब गली में भी उनका एक बड़ा झुण्ड है ! गैंडों की फौज, गली में जैसे उनकी बाढ़ आ गई है ! ··· (वह अपने चारों ओर देखता है) कहां से निकले : मैं

निकलूं ! ··· काश, मैं सड़क के बीचोंबीच चलते ! ये तो पटरियों पर भी दौड़ रहे हैं, कहां से निकलूं, कहां से भागूं ! (भयभीत हो, वह एक दरवाजे से दूसरे दरवाजे और खिड़की की ओर जाता है, जबकि दूसरी ओर बाथ-रूम का दरवाजा अब भी बुरी तरह से हिल रहा है और जां का चिघाड़ना और उसकी समझ में न आती हुई गालियां सुनाई दे रही हैं। इस अभिनय के अतिरिक्त यह अभिनय भी कुछ देर जारी रहता है : बचकर निकलने के लिए जब-जब बेरांजे बूढ़ा-बूढ़ी के दरवाजे के सामने या सीढ़ियों में आता है तब-तब चिघाड़ते हुए गेंडों के सिर उसके सामने आ जाते हैं और वह डरकर पीछे हट जाता है। वह एक बार फिर खिड़की के पास जाता है, बाहर झांकता है।) गेंडों का इतना बड़ा झुण्ड ! और कहा जाता था कि गेंडा अकेला रहना पसन्द करता है। यह गलत है, इस विश्वास को बदलना पड़ेगा ! गली के सारे बेंचों को इन्होंने तबाह कर दिया है। (वह परेशानी में अपने हाथ को दबाता है।) अब क्या किया जाए ? (एक बार फिर वह सभी निकासों की ओर जाता है लेकिन गेंडों को देखते ही रुक जाता है। जब वह दुबारा बाथरूम के दरवाजे के पास आता है, यह बिलकुल गिरने की हालत में आ चुका है। बेरांजे डर के मारे पिछली दीवार से जा टकराता है जो टूट जाती है; पृष्ठभूमि में सड़क दिखाई देती है। वह चिल्लाते-चिल्लाते भाग निकलता है।) गेंडे ! गेंडे ! (शोरगुल···बाथरूम का दरवाजा दबाव के कारण गिरने ही वाला है।)

पर्दा गिरता है।

अंक 3

पहला दृश्य

मंच-सज्जा

(पिछले दृश्य से मिलती-जुलती दृश्य-सज्जा। यह बेरांजे का बेडरूम है जो काफी हद तक जां के बेडरूम से मेल खाता है। केवल एक-दो अतिरिक्त चीजें ही सिद्ध करेंगी कि यह एक अलग बेडरूम है। बाईं ओर सीढ़ियां, चौकी। चौकी के पीछे दरवाजा। केयर टेकर का बोर्ड नहीं लगा है। बेडरूम के पिछले भाग में एक दीवान जिस पर बेरांजे दर्शकों की ओर पीठ किये लेटा है। एक आराम कुर्सी, एक छोटी मेज जिस पर टेलीफोन पड़ा है। चाहे तो एक मेज और रख सकते हैं, एक कुर्सी भी। कमरे के पिछले भाग में एक खुली खिड़की। मंच के अगले भाग में खिड़की का सिर्फ एक चौखटा। बेरांजे आम कपड़े पहने है। उसके सिर पर पट्टी बंधी है। लगता है कि वह बुरे सपने देख रहा है क्योंकि नींद में वह काफी हिल-डुल रहा है।)

बेरांजे : नही। (कुछ देर का मौन।) सींग, ध्यान से, सींग! (मौन। अच्छी खासी सख्या में गेंडों का शोर सुना जा सकता है जो कमरे की पिछली खिड़की के नीचे से होकर गुजर रहे हैं।) नही! (सपने मे किसी से लड़ते हुए वह नीचे आ गिरता है और जाग जाता है। वह अपना हाथ माथे पर रखता है, डरा हुआ दिखाई देता है, तब शीशे के पास जाकर पट्टी को थोड़ा-सा ऊपर हटाता है जबकि शोर कम

होता जाता है। वह चैन की सांस लेता है जब उसे पता चलता है कि उसके कोई टिप्पा नही है। वह थोड़ा रुकता है, दीवान की ओर जाता है, लेटता है, और अचानक उठ खड़ा होता है। वह मेज़ की ओर जाता है जहां से वह ब्रांडी की बोतल और एक गिलास उठाता है, ब्रांडी डालना ही चाहता है कि कुछ क्षणों के मौन अंतर्द्वंद्व के बाद वह बोतल और गिलास को वापस रख देता है।) इच्छा-शक्ति, इच्छा-शक्ति। (वह दीवान पर दुबारा जाना चाहता है लेकिन पिछली खिड़की से गेंडों का शोर फिर सुनाई देने लगा है। बेरांजे अपना हाथ दिल पर रखता है।) ओह! (वह पिछली खिड़की पर जाता है, कुछ देर बाहर देखता है, तब खीझकर खिड़की बंद कर लेता है। गेंडों का शोर बन्द हो जाता है, वह छोटी मेज के पास जाता है, थोड़ी देर सकुचाता है, तब ऐसी मुद्रा में जिसका अर्थ है: "क्या फर्क पड़ता है!" वह ब्राडी से पूरा गिलास भर एक ही घूट मे पी जाता है। बोतल और गिलास को मेज पर रखता है। खासता है। अपनी खांसी उसे चिंतित करती प्रतीत होती है, वह फिर खांसता है और अपनी खांसी को ध्यान से सुनता है। खांसते हुए एक बार फिर वह अपने को एक क्षण के लिए शीशे मे देखता है, पिछली खिड़की खोलने जाता है। अब गेंडो के सांस लेने का शोर और भी साफ सुना जा सकता है, वह फिर खांसता है।) नही। यह वैसी नही! (वह थोड़ा शांत हो जाता है, खिड़की बंद करता है, पट्टी के ऊपर माथे पर अपने हाथ से कुछ टटोलता है, दीवान पर जाता है, सोने का अभिनय करता है। ड्यूडार को अंतिम सीढ़ियां पार कर चौकी पर पहुंचने और बेरांजे के दरवाज़े पर दस्तक करते देखा जा सकता है।)

बेरांजे : (चौंक कर) क्या बात है?

द्यूडार : आपसे मिलने आया हूं, बेरांजे साहब, आपसे मिलने आया हूं।

बेरांजे : कौन है ?

द्यूडार : यह मैं हूं, मैं !

बेरांजे : कौन मैं ?

द्यूडार : मैं, द्यूडार।

बेरांजे : अच्छा, आप हैं, आ जाइए।

द्यूडार : कहीं आपको डिस्टर्ब तो नहीं किया ?

(वह दरवाजा खोलने की कोशिश करता है।) दरवाजा बन्द है।

बेरांजे : एक सेकिंड। क्या मुसीबत···; (वह दरवाजा खोलता है, द्यूडार अन्दर आता है।)

द्यूडार : नमस्कार, बेरांजे साहब।

बेरांजे : नमस्कार, द्यूडार साहब, क्या बजा होगा ?

द्यूडार : तो आप यहीं हैं, घर में मोर्चाबन्दी किये हुए। कहिए, साहब, तबीयत पहले से बेहतर तो है ?

बेरांजे : माफ कीजिए, मैं आपकी आवाज नहीं पहचान पा रहा था। (बेरांजे खिड़की खोलने जाता है।) हां, लगता है पहले से थोड़ा बेहतर हूं !

द्यूडार : मेरी आवाज तो नहीं बदली। मैंने आपकी आवाज पहचान ली थी।

बेरांजे : माफ कीजिए, मुझे लगा कि···आप ठीक कहते हैं, आपकी आवाज बिलकुल पहले सी है। मेरी आवाज भी नहीं बदली है, ठीक है न ?

द्यूडार : भला यह बदलेगी क्यों ?

बेरांजे : मेरा गला ज़रा···ज़रा बैठा तो नहीं है ?

द्यूडार : मुझे तो बिलकुल नहीं लगता।

बेरांजे : वाह ! यह सुनना मुझे अच्छा लगा।

द्यूडार : वैसे बात क्या है ?

बदल जाएगा। अपने से ज्यादा मुझे उस पर भरोसा था ! ...मेरे साथ ऐसा करना, मेरे साथ !

ड्यूडार : इतना पक्का है कि यह सब उसने खास आपको परेशान करने के लिए नहीं किया।

बेराजे : लेकिन लगता तो बिलकुल ऐसा ही था। अगर आपने उसकी हालत देखी होती...उसका चेहरा...

ड्यूडार : ऐसा इसलिए कि उस समय आप ही वहां मौजूद थे। आपकी जगह कोई और होता तो भी बात एक ही होती।

बेराजे : हमारी पुरानी दोस्ती को देखते हुए कम से कम मेरे सामने तो वह अपने आपको काबू में रख सकता था।

ड्यूडार : आप समझते हैं कि आप एक बहुत ऊंची चीज हैं, और जो कुछ भी होता है उसका आपके साथ कोई न कोई संबंध है ! दुनिया का निशाना आप ही नहीं हैं।

बेरांजे : शायद आप ठीक हैं। मैं अपने आपको समझाने की कोशिश करूंगा। लेकिन फिर भी, यह सब अपने आप में परेशान करनेवाला है। सच कहूं तो उसने मेरा बुरा हाल कर दिया है। इसे कैसे समझा जाए ?

ड्यूडार : अभी तक मैं भी इसे ठीक से नहीं समझ पाया। मैं तथ्यों का निरीक्षण करता हूं, उनका संग्रह करता हूं। ऐसा हुआ, इसलिए इसका कोई-न-कोई कारण होगा। कोई प्रकृति का रहस्य, कोई बेतुकापन, कोई पागलपन, कोई खेल, कौन कह सकता है ?

बेराजे : जा अपने आपको बहुत ऊंचा समझता था। मैं ऐसा नहीं हूं। मैं अपने हाल पर खुश हू।

ड्यूडार : हो सकता है कि उसे ताजी हवा, शहर से दूर खुली जगह पसंद थी...हो सकता है उसे आराम की जरूरत थी। ऐसा मैं उसके बर्ताव को माफ करने के लिए नहीं कह रहा...

बेराजे : मैं आपकी बात समझता हूं, समझने की कोशिश कर रहा

हूं। लेकिन अगर मुझ पर कोई यह इलजाम लगाए कि मेरा दिमाग तंग है या मैं एक मामूली-सा बुर्जुआ हू जो अपनी ही दुनिया में बंद है, तो भी मैं वैसा ही रहूंगा जैसा अब हूं।

ड्यूडार : हम सब वैसे ही रहेंगे जैसे अब हैं, जाहिर है। फिर आप इन दो चार गैंडारोग के पीड़ितों से इतने परेशान क्यों है ? यह एक बीमारी भी तो हो सकती है।

बेरांजे : यही तो बात है, मैं इस छूत से डरता हूं।

ड्यूडार : अरे ! आप इतना क्यों सोचते हैं ? दरअसल, आप इस बात को ज्यादा तूल दे रहे है। *जां की बात सब पर तो* लागू नहीं हो सकती, आपने खुद ही कहा कि जा अपने आपको बहुत ऊंचा समझता था। मेरे विचार में, माफ कीजिए आपके मित्र की बुराई कर रहा हूं, वह जल्दी आवेश मे आ जाता था, कुछ-कुछ जंगली था, सनकी था, इस तरह *के लोगों पर अपनी राय नही बनाते। राय औसत दर्जे के* लोगो के आधार पर बनती है।

बेरांजे : तो फिर, बात साफ होने लगी है। देखिए, आप यह सब ढंग से तो नही समझा पाए, लेकिन अभी-अभी आपने एक संभव व्याख्या तो दे ही दी है। हां, अपने आपको इस हालत में लाने के लिए *वह अवश्य ही पागलपन के दौर से गुजरा* होगा···लेकिन, तो भी वह अच्छी दलीलें दे रहा था, ऐसा लगता था कि उसने समस्या पर काफी सोच रखा था, कि उसने सोच-समझकर फैसला किया है···लेकिन बीफ के बारे में···क्या बीफ भी पागल था ?···और दूसरे, और दूसरे···?

ड्यूडार : अभी महामारी का सिद्धात बाकी है। यह फ्लू की तरह है। महामारियां पहले भी कई बार देखी जा चुकी है।

बेरांजे : *वे इस तरह की* नही थीं। और कहीं ऐसा तो नहीं कि यह अफ्रीका से आई हो ?

ड्यूडार : चाहे कुछ भी हो, आप यह नहीं कह सकते कि बीफ ने, और बाकी के लोगों ने भी, जो कुछ किया है या ये जो कुछ बन गए हैं, यह सब उन्होंने आपको जानबूझ कर तंग करने के लिए किया है। ये अपने आपको इतना कष्ट नहीं देते।

बेरांजे : सच है, आप जो कह रहे हैं, वह समझदारी की बात है, दिल को जंचती है···या फिर, शायद यह और भी परेशान करती है ? (पिछली खिड़की के नीचे से चौकड़ी भरते हुए गेंडों की आवाज़ आती है।) ठहरिए, आपने सुना ? (वह खिड़की की ओर तेज़ी से जाता है।)

ड्यूडार : जाने दीजिए उन्हें ! (बेरांजे खिड़की बंद करता है।) भला आपका वे क्या बिगाड़ रहे हैं ? सचमुच ये आपके दिमाग पर छा गए हैं। यह अच्छी बात नहीं। आप अपना बुरा हाल कर रहे हैं। आपको एक बार सदमा लग चुका है, मानता हूं। कम-से-कम और से तो बचिए। अब सिर्फ ठीक महसूस करने की कोशिश कीजिए।

बेरांजे : कह नहीं सकता कि मैं इस बीमारी से बचा रहूंगा कि नहीं !

ड्यूडार : कुछ भी हो, यह जानलेवा नहीं है। कुछ बीमारियां अच्छी होती हैं। मुझे विश्वास है कि यदि कोई ठीक होना चाहे तो इसका इलाज है। आप देख लेना, वे सभी ठीक हो जाएंगे।

बेराजे : लेकिन यह कोई-न-कोई निशान छोड़कर ही जाएगी ! शरीर में इस प्रकार का विकार बिना कोई निशान छोड़े जाता नहीं···

ड्यूडार : यह कुछ देर के लिए ही है, आप घबराइए नहीं।

बेराजे : आपको पक्का विश्वास है ?

ड्यूडार : मुझे विश्वास है, हां, मैं ऐसा सोचता हूं।

बेराजे : लेकिन अगर कोई सचमुच इसे नहीं चाहता, क्यों, अगर कोई सचमुच इसे नहीं चाहता, इसे जो कि एक मानसिक बीमारी है, तब यह लगती नहीं, लगती नहीं ! ···क्या

आप एक गिलास ब्रांडी लेंगे ?

(वह उस टेबल की ओर जाता है जहां बोतल पड़ी है।)

ड्यूडार : आप तकलीफ न करें, मैं नहीं लूगा। शुक्रिया। अगर आप लेना चाहते हैं तो लीजिए, मेरी चिंता न करें, लेकिन इतना सोच लीजिए कि इसके बाद आपका सिरदर्द बढ़ जाएगा।

बेरांजे : शराब महामारियों के लिए अच्छी होती है! यह मुझे बीमारियों से बचाती है। उदाहरण के तौर पर; यह फ्लू के भारतीय वायरस को मारती है।

ड्यूडार : हो सकता है कि यह सभी वायरसों को न मारती हो। रिनोसेराइटिस यानी गेंडारोग के लिए अभी कुछ कहा नहीं जा सकता।

बेरांजे : जा ने कभी नहीं पी। यह उसका दावा था। शायद उसी वजह से वह'''शायद यही वजह है जो उसके बर्ताव को स्पष्ट करती है। (वह एक गिलास भरकर ड्यूडार के आगे बढ़ाता है।)

ड्यूडार : नहीं, नहीं, लंच से पहले कभी नहीं। शुक्रिया।

(बेरांजे इसी गिलास को खाली करता है, इसे और बोतल को अपने हाथों में थामे रहता है। वह खांसता है।)

ड्यूडार : देखा, देखा, आपको यह सूट नहीं करती। इससे आपको खांसी लग जाती है।

बेरांजे : (चिंतित) हां, इसने मेरी खांसी छेड़ दी। मैं खांसा कैसे था ?

ड्यूडार : हर उस आदमी की तरह जो थोड़ी तेज पी लेने पर खांसता है।

बेरांजे : (गिलास और बोतल मेज पर वापस रखने जाते हुए) क्या यह खांसी कुछ अजीब खांसी थी ? क्या यह आदमियों की खांसी थी ?

ड्यूडार : आप क्या बात कर रहे हैं ? यह आदमियों की खांसी ही थी। वैसे और किस तरह की खांसी हो सकती थी यह ?

बेरांजे : पता नहीं···जानवरों की खांसी, शायद···क्या गैंडा खांस सकता है ?

ड्यूडार : आप भी अजीब बात करते हैं, बेरांजे साहब, आप तो अपने लिए नई मुसीबतें खड़ी कर रहे हैं। आप बड़े बेहूदे सवाल कर रहे हैं···आपको याद दिलाऊं, आपने खुद ही कहा था कि इस चीज से बचने का सबसे अच्छा तरीका इच्छा-शक्ति का होना है।

बेरांजे : हां, जरूर।

ड्यूडार : तो फिर दिखाइए कि आपके पास है।

बेरांजे : आपको विश्वास दिलाता हूं कि मेरे पास कुछ तो है···

ड्यूडार : ···विश्वास तो अपने आपको दिलाइए। तो फिर ब्रांडी पीना बंद कीजिए···इससे आप में और अधिक आत्म-विश्वास आएगा।

बेरांजे : आप मुझे समझना नहीं चाहते। मैं फिर दोहराता हूं कि मैं इसलिए पीता हूं क्योंकि यह अब भी मुझे कुछ हौसला देती है। हां, ऐसा मैं जानबूझ कर करता हूं। जब महामारी नहीं रहेगी, मैं पीना बंद कर दूंगा। मैंने तो इस घटना से पहले ही यह फैसला कर लिया था। बस, कुछ ही देर के लिए मैं इस पर अमल नहीं कर रहा हूं !

ड्यूडार : आप बहानेबाजी कर रहे हैं।

बेरांजे : अच्छा, आपको ऐसा लगता है ?···जो कुछ भी हो, शराब का इस बीमारी से कोई संबंध नहीं है।

ड्यूडार : कौन कह सकता है ?

बेरांजे : (डरे हुए) आप सचमुच ऐसा सोचते हैं ? आप समझते हैं कि सारी मुसीबत इस तरह शुरू होती है ! मैं पियक्कड़ नहीं हूं। (वह शीशे के सामने जाता है और अपनी जांच करता है।) कहीं ऐसा तो नहीं कि···(वह अपने हाथ

चेहरे पर रखता है, अपने पट्टी बंधे माथे को थपथपाता है।) कुछ नहीं बदला, इससे कुछ नहीं बिगड़ा, जाहिर है कि इसमें कुछ फायदा ही है···या फिर, कम-से-कम कोई नुकसान नहीं।

ड्यूडार : जाने दीजिए, बेराजे साहब, मैं तो मजाक कर रहा था। आप तो हर चीज़ के बुरे पहलू को ही देखते है। संभल कर रहिए, कहीं आप निराशावादी न बन जाएं। जब आप पूरी तरह इस सदमे और डिप्रैशन के असर से मुक्त हो जाएगे और बाहर जाकर ताज़ी हवा में सांस ले पायेंगे, तब आप काफी अच्छे महसूस करेंगे, आप खुद ही देख लेंगे। आपकी *सारी निराशाएं दूर हो जाएंगी।*

बेरांजे : बाहर जाना ? जाना तो पड़ेगा। मैं उस क्षण से डरता हूं। *ज़रूर मेरी एक या दो से मुलाकात होगी !*

ड्यूडार : तो क्या ? आपको उनके रास्ते में नहीं आए, बस ! वैसे वे बहुत ज्यादा हैं नहीं।

बेरांजे : मैं सिर्फ उन्हे ही देखता हू। आप कहेंगे कि यह पागलपन है।

ड्यूडार : वे मारते नहीं। अगर आप उन्हें कुछ नही कहते, तो वे आपकी ओर देखते भी नही। सच तो यह है कि वे खतरनाक नहीं है। मैं तो यह भी कहूंगा कि उनमें एक प्रकार का कुदरती भोलापन भी होता है, हा, एक प्रकार का सीधापन। सच तो यह है कि मैं स्वयं सारा रास्ता पैदल चलकर आया हूं। आपने देखा, मैं बिलकुल ठीक-ठाक हू, मुझे कोई परेशानी नही हुई।

बेराजे : उनको देखते ही मैं परेशान हो उठता हू। यह मेरे काबू से बाहर है। मुझे गुस्सा नहीं आता, नहीं, गुस्से मे आना नही चाहिए, गुस्सा जाने क्या करवा बैठे, मैं इससे दूर रहता हूं, लेकिन कुछ-न-कुछ मेरे साथ ज़रूर होता है यहा (वह

अपने दिल की ओर संकेत करता है), मेरा दिल हिल उठता है।

ड्यूडार : कुछ हद तक तो आप का परेशान होना ठीक ही है। लेकिन आप कुछ ज्यादा ही परेशान हो उठे हैं। आप में हंसी-मजाक की कमी है, यही आपकी गलती है, आप में हंसी-मजाक की कमी है। इन चीजों को हंसते-हंसते लेना चाहिए, थोड़ा विरक्ति के साथ।

बेरांजे : जो कुछ हो रहा है, मैं खुद को उसका एक हिस्सा समझता हूं। मैं उसमें भाग लेता हू, मैं उससे अलग नहीं हो सकता।

ड्यूडार : अगर आप नहीं चाहते कि आपको कोई परखे तो आप भी दूसरों को न परखें। और अगर कोई हर हो रही बात के लिए परेशान होने लगता है तो उसका जीना दूभर हो जाता है।

बेरांजे : अगर यह घटना कहीं और हुई होती, किसी और देश में और हमने अखबार में इसके बारे में पढ़ा होता, तो इस पर आराम से चर्चा हो सकती थी, सभी दृष्टिकोणों से इस समस्या की जांच-पड़ताल की जा सकती थी, हम बिना किसी पक्षपात के किसी नतीजे पर पहुंच सकते थे। हम विचार-गोष्ठियों का आयोजन करते जिनमें भाग लेने के लिए विद्वानों, लेखकों, कानूनदानों, विदुषियों, कलाकारों को निमंत्रण देते। आम आदमी को भी। ऐसा करना बहुत ही अच्छा, दिलचस्प, शिक्षा देने वाला होता। लेकिन जब कोई खुद ही इसमें फंसा हो, जब कोई अचानक अपने आप को इस बर्बर सच्चाई में घिरा पाए, तब इसके सीधे असर को महसूस किए बिना नहीं रहा जा सकता, एक ऐसा जबरदस्त झटका लगता है कि दिल पर काबू नहीं रहता। मैं, मैं हैरान हूं, हैरान हूं, हैरान हूं! मेरे दिमाग से तो यह बात जाती ही नहीं।

ड्यूडार : मैं भी हैरान हुआ हूं, आप ही की तरह। या फिर, हैरान

हुआ था। अब तो आदत सी होने लगी है।

बेरांजे : आपका नर्वस सिस्टम मेरे नर्वस सिस्टम से ज्यादा संतुलित है। इसके लिए मैं आपको बधाई देता हूं। लेकिन क्या आप को नही लगता कि यह बड़े दुख की बात है कि···

ड्यूडार : (बात बीच में काटते हुए) मैं यह तो नही कहता हूं कि यह कोई अच्छी बात है। और आप यह न सोचें कि मैं पूरी तरह से गेंडों के पक्ष हूं···

(दौड़ते हुए गेंडो का नया शोरगुल, इस बार मंच के अगले भाग मे लगे खिड़की के चौखटे के नीचे।)

बेरांजे : (चौंककर) वे फिर आ गए! वे फिर आ गए! नही, नही, बिलकुल नही, मैं इन्हें सहन नही कर सकता। हो सकता है कि मैं गलत हूं। बड़ी कोशिश करने पर भी ये मेरे दिमाग मे इस तरह घुस गए हैं कि रात को मुझे सोने नही देते। मुझे नींद न आने की बीमारी हो गई है। थकान के मारे मैं दिन में सुस्ती तोड़ता रहता हूं।

ड्यूडार : कुछ नींद की गोलियां लीजिए।

बेरांजे : यह कोई इलाज नही है। जब मैं सोता हूं तो और भी बुरा होता है। रात को मुझे उन के सपने आते हैं। मुझे डरावने सपने आते हैं।

ड्यूडार : बहुत ज्यादा सोचने से ऐसा ही होता है। अपने आपको सताना आपको अच्छा लगता है, यह तो आपको मानना पड़ेगा।

बेराजे : मैं कसम खाकर कहता हूं कि मुझे अपने आपको सताने में कोई मजा नहीं आता।

ड्यूडार : तो फिर इसे मानिए और इससे छुटकारा पाइए। चूंकि यह इस तरह से है, इसका मतलब है कि यह किसी और तरह नही हो सकता।

बेरांजे : यह तो भाग्यवाद हुआ।

ड्यूडार : यह अक्लमंदी है। जब इस तरह की बात होती, तो

होने की निश्चित रूप से कोई वजह रही होगी। यही वह वजह है जिसका हमें पता लगाना है।

वेरांजे : (उठकर) खैर, मैं इस स्थिति को मानने को तैयार नहीं।

ड्यूडार : आप क्या कर सकते हैं ? आप क्या करने की सोच रहे हैं ?

वेरांजे : अभी तो मैं कुछ नहीं जानता। मैं सोचूंगा। मैं अखबारों को चिट्ठियां भेजूंगा, मैं घोषणा-पत्र तैयार करूंगा, मैं मेयर से बातचीत के लिए समय लूंगा, या फिर डिप्टी मेयर से, यदि मेयर के पास समय नहीं होगा।

ड्यूडार : अधिकारियों को अपना काम अपने आप करने दीजिए। कुछ भी हो, मैं नहीं जानता कि उनके काम में दखल देना ठीक रहेगा कि नहीं। वैसे मैं तो अब भी यही सोचता हूं कि यह कोई बहुत गंभीर बात नहीं है। मैं समझता हूं इस बात से घबराना तो वेवकूफी है कि कुछ लोगों ने अपनी खाल बदलनी चाही है। वे अपनी खाल में खुश नहीं महसूस कर रहे थे। वे जो चाहें करें, यह उनका सिरदर्द है।

वेरांजे : बुराई को जड़ से ही काट देना चाहिए।

ड्यूडार : बुराई, बुराई ! यह तो कोरी कहावत है ! कौन जानता है कि बुराई क्या है और अच्छाई क्या है ? जाहिर है हमारी अपनी-अपनी पसंद है। आप अपने लिए ही चिंतित हैं। सच तो यही है। लेकिन आप गैंडा कभी बनेंगे नहीं··· हां सच···यह आपके भाग्य में नहीं है !

वेरांजे : लो, लो ! यदि हमारी सरकार और नागरिक आप ही की तरह सोचने लगें तब तो कुछ होगा ही नहीं।

ड्यूडार : आप बाहर से थोड़े ही मदद मांगेंगे ! यह एक अंदरूनी मामला है, जिसका संबंध सिर्फ अपने देश के साथ है।

वेरांजे : मैं अंतर्राष्ट्रीय एकजुटता मे विश्वास रखता हूं···

ड्यूडार : आप शेखचिल्ली हैं ! देखिए, मैं किसी बुरी नीयत से ऐसा नहीं कह रहा हूं, मैं आपका आपमान नहीं कर रहा हू ! यह आपके भले के लिए है, आप जानते ही हैं। असल

बात तो यह है कि आपको शान्त हो जाना चाहिए।

बेरांजे : मैं जानता हूं, माफ कीजिए। मैं बहुत ज्यादा घबराया हुआ हूं। मैं अपने आपको ठीक करूंगा। मैं इसलिए भी माफी चाहता हूं, कि मैं आपका समय ले रहा हूं और अपनी अनाप-शनाप बातें सुनने के लिए आपको मजबूर कर रहा हूं। आपको जरूर कोई काम होगा। क्या आपको मेरी बीमारी की लीव एप्लीकेशन मिल गई ?

ड्यूडार : उसकी चिंता न कीजिए। सब ठीक-ठाक है। वैसे भी, दफ्तर में काम अभी शुरू नहीं हुआ।

बेरांजे : क्या सीढ़ियों की अभी मरम्मत नहीं हुई ? इतनी लापरवाही···तभी तो हर बात गड़बड़ है।

ड्यूडार : आजकल मरम्मत हो रही है। काम तेजी से नही हो रहा। काम करने वाले आसानी से नही मिलते। वे काम हाथ में ले लेते हैं, एक या दो दिन काम करते है और उसके बाद छोड़ जाते हैं। फिर मुड़कर नही आते। तब दूसरे मजदूरों को ढूंढना पड़ता है।

बेरांजे : और लोग बेरोजगारी की शिकायत करते हैं ! उम्मीद है कि सीढ़ियां कम से कम सिमेंट की होंगी।

ड्यूडार : नही, फिर लकड़ी की लेकिन नई लकड़ी की।

बेरांजे : ओह ! दफ्तरों का वही पुराना ढर्रा। पैसा बरबाद करते हैं और जब कोई जरूरी खर्च होता है तब बहानेबाजी करेंगे कि पैसा नही है। मेरा विचार है कि पैपियों साहब खुश नही होंगे। उनकी बड़ी इच्छा थी कि सीढ़ियां सीमेंट की हों। इस बारे मे वे क्या कहते हैं ?

ड्यूडार : अब हमारा कोई बड़ा साहब नही है। पैपियों साहब ने इस्तीफा दे दिया है।

बेरांजे : क्या कहा ?

ड्यूडार : हां, हां, मैं ठीक कह रहा हूं।

ड्यूडार : यही तो सिद्ध करता है कि कायापलट के लिए वह कितने ईमानदार थे।

बेरांजे : ऐसा उन्होंने जानबूझ कर नहीं किया होगा। मुझे विश्वास है कि यह सब उनकी मर्जी के खिलाफ हुआ है।

ड्यूडार : हम कैसे कह सकते हैं? लोगों के फैसलों की सही वजह क्या होती, यह कहना मुश्किल है।

बेरांजे : जरूर उनसे कोई भूल हुई है। उनमे कई गूढ़ कंप्लेक्सेज़ थे। उन्हें अपना साइको-अनालिसिज़ करवाना चाहिए था।

ड्यूडार : अगर इस केस के पीछे कोई मानसिक कारण भी हो तो भी इससे कई बातें खुलकर सामने आ सकती है। हर आदमी अपने ढंग से ऊपर उठता है।

बेरांजे : वे किसी झांसे में आ गए हैं, मैं तो यही कहूंगा।

ड्यूडार : ऐसा तो किसी के साथ भी हो सकता है।

बेरांजे : (घबराकर) किसी के साथ? नहीं, नहीं! आपके साथ नहीं, क्यों, आपके साथ नहीं? मेरे साथ नहीं।

ड्यूडार : उम्मीद तो यही है।

बेरांजे : क्योंकि हम नहीं चाहते···नहीं चाहते हैं···क्यों?

ड्यूडार : हां, हां, जरूर···बोलिए, बोलिए?

बेरांजे : (थोड़ा शांत होकर) मैं तो अब भी यह सोचता हूं कि पैपियों साहब यदि चाहते तो अपने आपको रोक सकते थे। मैं समझता था कि उनके पास अपने आपको काबू में रखने की ताकत कुछ ज्यादा ही होगी! ···ख़ास तौर पर, जबकि मेरी समझ यह नहीं आता कि ऐसा करने मे उनको क्या लाभ है, उनका भौतिक लाभ, नैतिक लाभ···

ड्यूडार : उनकी इस हरकत के पीछे कोई लाभ नहीं है, यह ज़ाहिर है।

बेरांजे : बेशक। उनका कोई लाभ नहीं है इसलिए उनका केस बहुत बुरा नहीं है···या फिर बहुत बुरा? बहुत बुरा, मैं

समझता हूं, क्योंकि, अगर उन्होंने ऐसा तो···देखिए, मुझे विश्वास है अपनी खुशी से किया है किया। बोटार ने उनके बदलाव को सख्ती के साथ लिया होगा। वह उनके बारे में क्या सोचता है, वह बड़े साहब के बारे में क्या सोचता है?

ड्यूडार : बेचारे बोटार को तो बहुत बुरा लगा, वह तो गुस्से में आपे से बाहर हो गया। मैंने इतना गुस्से से भरा आदमी शायद ही कभी देखा हो।

बेरांजे : खैर, इस बार मैं भी उसे गलत नहीं कहूंगा। वाह, बोटार, मान गए। काफी समझदार आदमी है। और मैं···हमेशा उसे गलत समझता रहा।

ड्यूडार : उसने भी आपको समझने में गलती की।

बेरांजे : इससे असली मुद्दे पर मेरी बेतरफदारी साबित होती है। वैसे आप खुद भी तो बोटार के बारे में काफी बुरी राय रखते थे।

ड्यूडार : बुरी राय···ऐसा कहना ठीक नहीं। इतना तो जरूर कहूंगा कि मैं अकसर उससे सहमत नहीं होता था। मुझे उसकी नास्तिकता, उसका किसी पर विश्वास न करना, उसका शक्की स्वभाव कभी पसन्द नहीं आया। इस बार भी मैंने उसका पूरी तरह समर्थन नहीं किया।

बेरांजे : इस बार कारण कुछ और हैं।

ड्यूडार : नहीं। बात यह नहीं है, मेरा तर्क, मेरा विवेक उससे कहीं ज्यादा गहरा है जैसा कि आप समझते दिखाई देते हैं। ऐसा मैंने इसलिए किया क्योंकि, असल में, बोटार के पास कोई साफ-सुथरी और ठोस दलीलें नहीं थीं। मैं फिर दोहराता हू कि मुझे गेंडों का यह चक्कर भी पसन्द नहीं है, नहीं, बिलकुल नहीं, आप ऐसा मत सोचिए। लेकिन बोटार का दृष्टिकोण हमेशा की तरह बहुत अधिक आवेग से भरा था इसलिए बहुत ही सतही था। बोटार के इस रवैये के पीछे मुझे जो कारण नज़र आता है, वह है, उसकी अपनो से

बड़ों के प्रति नफरत। इसका नतीजा है : उसकी हीन-भावना, उसका रोष। इन सबके ऊपर, वह पिटी-पिटाई बातें करता है, मुझे घिसी-पिटी बातें पसन्द नहीं।

बेरांजे : खैर, आप चाहे पसन्द न भी करें, इस बार तो मैं बोटार से पूरी तरह सहमत हूं। जो भी हो, आदमी अच्छा है, बस।

ड्यूडार : इससे तो मैं भी इंकार नहीं करता लेकिन इसका कोई मतलब नहीं निकलता।

बेरांजे : हां, अच्छा आदमी है ! बड़ा मुश्किल है कि अच्छा आदमी मिले जो अपने ख्यालों में न खोया हो। एक अच्छा आदमी जिसके चारों पाव ज़मीन पर टिके हैं, माफ कीजिए, मेरा मतलब है दोनों पांव। मुझे खुशी है कि मैं उसके साथ पूरी तरह सहमत हूं। जब मैं उससे मिलूंगा, मैं उसे बधाई दूंगा। मैं पैपियों साहब को धिक्कारता हूं। उनका फर्ज था कि वे इस चक्कर में न आते।

ड्यूडार : आप बड़े तंगदिल हैं ! हो सकता है कि पैपियों साहब ने इतने साल बैठे-बैठे काम करने के बाद थोड़ा आराम करने की ज़रूरत महसूस की हो।

बेरांजे : (ताना कसते हुए) आप, आप तो बड़े फराखदिल है, बड़े दयानतदार हैं !

ड्यूडार : बेरांजे साहब, हमेशा समझने की कोशिश करनी चाहिए। और किसी घटना और इसके असर को समझने के लिए इसके कारणों तक जाने की ज़रूरत होती है, एक ईमानदार इंटलेक्चुअल कोशिश के साथ। लेकिन हमें इसकी कोशिश ज़रूर करनी चाहिए क्योंकि हम सोचने वाले जीव हैं। मैं सफल नहीं हुआ, मैं फिर दोहराता हूं, मैं कह नहीं सकता कि क्या मैं सफल होऊंगा। खैर, कुछ भी हो, शुरू में हमें अच्छा पक्ष ही लेना चाहिए अगर नहीं, तो कम से कम निष्पक्ष, उदार मन होना चाहिए जो कि वैज्ञानिक का विशेष गुण है। हर चीज के पीछे कोई तर्क

समझना ही समझाना है।

बेरांजे : बहुत जल्दी आप गेंडो के हमदर्द बनने वाले हैं।

ड्यूडार : नहीं, नहीं, बिलकुल नहीं। उस हद तक मैं नहीं जाऊंगा। मैं तो सिर्फ एक ऐसा आदमी हूं जो ठंडे दिमाग के साथ हालात को साफ-साफ देखने की कोशिश कर रहा है। मैं रिअलिस्टिक होना चाहता हूं। मैं यह भी मानता हूं कि उस चीज़ में कोई खास बुराई नहीं होती जिसे कुदरत ने बनाया है। लानत है उस पर जो हर जगह बुराई ही देखता है। यह काम तंगदिलो का है।

बेरांजे : आप, आप समझते हैं कि यह कुदरती है?

ड्यूडार : गेंडे से ज्यादा कुदरती और क्या हो सकता है?

बेरांजे : हां, लेकिन एक आदमी का गेंडे मे बदल जाना, यह तो एकदम एबनार्मल है।

ड्यूडार : क्या! एकदम एबनार्मल, ! ···देखिए···

बेरांजे : हा, एकदम एबनार्मल पूरी तरह से एबनार्मल!

ड्यूडार : मुझे लगता है कि आपको अपने पर बहुत विश्वास है। क्या हम जान सकते हैं कि नार्मल कहां खत्म होता है और एबनार्मल कहां शुरू? आप, आप इन धारणाओ की व्याख्या कर सकते हैं कि नार्मेलिटी क्या है? अभी तक कोई इस समस्या को सुलझा नहीं पाया, न ही चिकित्सा द्वारा और न ही फिलासफी द्वारा। आपको इस बात का पता होना चाहिए।

बेरांजे : फिलासफी इस समस्या को चाहे न सुलझा सके लेकिन व्यवहार में यह कोई समस्या नहीं है। फिलासफर तो सिद्ध कर देंगे कि हलचल का अस्तित्व नहीं है···और हम चलते हैं, चलते हैं, चलते हैं ··(वह कमरे में एक तरफ से दूसरी तरफ चलना शुरू करता है।)···हम चलते है या फिर गैलिलियो की तरह खुद से कहते हैं: "फिर भी, यह धरती है जो घूमती है, सूरज नहीं।"

ड्यूडार : आप अपने दिमाग में सब कुछ गडबडा रहे है ! देखिए, यह गडबड़ न कीजिए। गैलिलियो के केस मे, यह उलटा था। वहां व्यवहार और कट्टरपंथ की तुलना में सैद्धांतिक और वैज्ञानिक विचार ठीक साबित हुए।

वेराजे · (खोया हुआ) यह सब क्या बकवास है ! व्यवहार, कट्टरपंथ, ये खाली शब्द हैं, खाली शब्द ! हो सकता है कि मेरा दिमाग इन सबको गड़बड़ा रहा हो लेकिन आपके दिमाग के पेच तो ढीले पड़ रहे है। आपको तो अब इतना भी नही पता कि नार्मल क्या है और एबनार्मल क्या है ! आप अपने गैलिलियो के साथ मेरा दिमाग चाट रहे है···भाड मे जाए गैलिलियो।

ड्यूडार : आपने खुद ही तो गैलिलियो का नाम छेड़ा था और इस सारे मसले को उठाया था जब आपने कहा था कि व्यवहार से बढ़कर कुछ नही। ऐसा कहना ठीक हो सकता है लेकिन तभी, जब यह सिद्धांत से निकले ! चिंतन का, और विज्ञान का इतिहास इसे अच्छी तरह साबित कर देता है।

बेरांजे : (और अधिक गुस्से में आकर) यह कुछ भी साबित नही करता। यह सब बकवास है, यह सब पागलपन है !

ड्यूडार : यहां भी हमें यह जानना है कि पागलपन क्या होता है···

बेराजे : पागलपन, पागलपन ही है ! पागलपन, पागलपन ही है, बस ! हर आदमी जानता है कि पागलपन क्या होता है। और गैंडे, ये व्यवहार हैं या सिद्धांत ?

ड्यूडार : दोनों।

बेरांजे : कैसे दोनों ?

ड्यूडार : दोनों। पहला और दूसरा, या फिर, पहला या दूसरा। इस पर सोचना पड़ेगा !

बेरांजे : तो फिर, इस हालत में मैं···सोचने से इनकार करता हूं !

ड्यूडार : आप तो आपे से बाहर हुए जा रहे हैं। हमारी एक जैसी राय नहीं है, हम तो आराम से बातचीत कर रहे हैं।

तो करनी ही चाहिए ।

बेरांजे : (डरे हुए) आप सोचते हैं कि मैं आपे से बाहर हुआ जा रहा हूं ? ऐसा लगता है जैसे, मैं जां की तरह बर्ताव कर रहा हूं । नहीं, नहीं, मैं उसकी तरह नहीं दीखना चाहता । (शांत हो जाता है ।) मुझे ज्यादा फिलासफी नहीं आती । मैंने कोई खास पढाई नहीं की । आप, आपके पास काफी डिग्रियां हैं । यही वजह है कि आप बड़े आराम से बहस कर लेते है जबकि मुझे यह भी नहीं पता होता कि मैं जवाब क्या दूं, मैं अनाड़ी हूं ।

(गैंडों का शोर पहले से ज्यादा ऊंचा, पहले मंच के पीछे की खिड़की के नीचे, बाद मे मच के आगे की खिड़की के नीचे ।)

लेकिन मैं तो महसूस करता हूं कि आप गलत हैं··· मैं कुदरती तौर से महसूस करता हू, नहीं, मेरा यह मतलब नहीं है, कुदरती तौर से तो गैंडे महसूस करते हैं, मेरा मन कहता है, हा, यह शब्द ठीक है, मन कहता है ।

ड्यूडार : आपका मन से कहने का क्या मतलब है ?

बेरांजे : मन से कहने का मतलब यह है·· यों ही, बस ! मैं महसूस करता हूं, कि बस···कि आपकी बहुत अधिक सहनशीलता और आपकी बहुत अधिक उदारता···सचमुच मे, यकीन मानिए, यह कमजोरी है···अंधापन है···

ड्यूडार : आप ही हैं जो ऐसा कह रहे हैं, शायद भोलेपन में ।

बेरांजे : मेरे साथ बातों मे तो हमेशा आप ही जीतेंगे । लेकिन सुनिए, मैं तर्कशास्त्री को पकड़कर लाने की कोशि- करूंगा···

ड्यूडार : कैसा तर्कशास्त्री ?

बेरांजे : तर्कशास्त्री, फिलासफर, तार्किक और क्या···आप मुझसे ज्यादा अच्छी तरह जानते हैं कि तर्कशास्त्री क्या होता है ।

एक ऐसा तर्कशास्त्री जिससे मैं मिला हूं, जिसने मुझे समझाया है···

ड्यूडार : क्या समझाया है आपको ?

बेरांजे : उसने समझाया कि एशियाई गैंडे अफ्रीकी होते है और अफ्रीकी गैंडे एशियाई होते हैं।

ड्यूडार : आपकी बात जरा समझ में नही आई।

बेरांजे : नही···नही···उसने इसका उलटा साबित किया है, कि अफ्रीकी गैंडे एशियाई होते हैं और एशियाई···माफ कीजिए। यह वह नही है जो मैं कहना चाहता था। खैर, आप उसके साथ यह सब सुलझा लेंगे। वह आपके जैसा ही है, अच्छा आदमी है, बारीकियों को समझने वाला इंटलैक्चुअल, पढ़ा-लिखा।

(गैंडो का शोर बढ रहा है। दोनों पात्रों के शब्द खिड़कियो के नीचे से गुजरते हुए जानवरो के शोर में डूब जाते है। कुछ क्षणों के लिए ड्यूडार और बेरांजे के ओंठ बिना कोई शब्द सुनाई दिए हिलते दिखाई देते हैं।)

फिर आ गए ! ओह ! ये तो कभी खत्म ही नही होगे ! (वह मंच के पिछले भाग की खिड़की की ओर दौड़ता है।) बस ! बहुत हो गया ! कमीनो !

(गैंडे आगे निकल जाते है, बेरांजे उनके पीछे मुट्ठी बन्द किए हाथ हिलाता है।)

ड्यूडार : (बैठते हुए) मैं आपके तर्कशास्त्री से मिलना पसन्द करूंगा। अगर वह मुझे ऐसे पेचीदे सवालों पर रोशनी देना चाहता है, मुश्किल, कठिन और पेचीदे ··खैर, मुझे तो बड़ी खुशी होगी।

बेरांजे : (मच के आगे की खिड़की की ओर दौड़ते हुए) हां, हां, मैं उसे लेकर आऊंगा, वह आपसे बात करेगा। आप

देखेंगे, वह एक माना हुआ आदमी है। (गैंडों से, खिड़की में से) कमीनो ! (पहले जैसा अभिनय।)

ड्यूडार : उन्हें जाने दीजिए। और थोड़ा तमीज के साथ बोलिए। इस तरह बात नहीं किया करते जीवधारियों से ··

बेरांजे : (अब भी खिड़की के पास) लो, और आ रहे हैं! (सामने की खिड़की के नीचे जहां वाद्यवृंद बैठता है, वहां से गैंडे के सींग से छिदी हुई एक टोपी ऊपर प्रकट होती है। यह बाईं ओर से बड़ी तेजी के साथ चलती हुई दाईं ओर को गायब हो जाती है।) गैंडे के सींग पर टोपी! अरे, यह तो तर्कशास्त्री की टोपी है! तर्कशास्त्री की टोपी ! तुम्हारा बेड़ा गर्क हो, तर्कशास्त्री गैंडा बन गया!

ड्यूडार : इसका मतलब यह तो नहीं कि आप बदतमीजी से बात करें!

बेरांजे : किस पर विश्वास किया जाए, हे भगवान, किस पर विश्वास किया जाए! तर्कशास्त्री गैंडा है!

ड्यूडार : (खिड़की के पास जाकर) कहां है वह ?

बेरांजे : (उंगली से इशारा करते हुए) उधर, वह रहा, देखा !

ड्यूडार : टोपी में सिर्फ यही एक गैंडा है। यही तो हैरानगी की बात है। यह सचमुच आपका तर्कशास्त्री है! ···

बेरांजे : तर्कशास्त्री ··· गैंडा !

ड्यूडार : फिर भी उसने अपने पुराने व्यक्तित्व का एक निशान संभाल रखा है!

बेरांजे : (फिर अपनी मुट्ठी बन्द किए हाथ टोपी वाले गैंडे के पीछे हिलाते हैं जो अब ओझल हो गया है।) मैं आपके साथ नहीं चलूंगा ! मैं आपके साथ नहीं चलूंगा !

ड्यूडार : अगर, जैसा कि आपने कहा, वह एक असली फिलासफर था, तब उस पर कोई असर नहीं डाल सकता था। फैसला करने से पहले उसने सभी पहलुओं को अच्छी तरह नाप-तोल लिया होगा।

बेरांजे : (खिड़की के पास, भूतपूर्व तर्कशास्त्री तथा अन्य गैंडों के पीछे जो दूर निकल गए है, चिल्लाते हुए) मैं आपके साथ नही चलूगा !

ड्यूडार : (आराम कुर्सी पर ठीक से बैठते हुए) हां, अब तो इस पर सोचना ही पड़ेगा !

(बेरांजे सामने की खिड़की बन्द करता है, पिछली खिड़की की तरफ जाता है जिधर से दूसरे गैंडे गुजर रहे हैं, और अब लगता है कि वे घर के चारों ओर चक्कर लगा रहे हैं। वह खिड़की खोलता है, उन पर चिल्लाता है।)

बेराजे : नही, मैं तुम्हारे साथ नही चलूगा !

ड्यूडार : (अपने आप से, अपनी आराम कुर्सी पर बैठे हुए) वे घर के चारों ओर घूम रहे हैं। खेल रहे हैं। बड़े बच्चो जैसे ! (कुछ क्षणो से डेज़ी को बाईं ओर ज़ीने की आखिरी सीढ़ियां चढते हुए देखा जा सकता है। वह बेराजे का दरवाज़ा खटखटाती है। अपनी एक बांह मे वह एक टोकरी लटकाए हुए है।) कोई दरवाज़ा खटखटा रहा है, बेरांजे साहब, कोई है !

(वह बेराजे की आस्तीन को पकड़कर उसे खीचता है जो अभी भी खिड़की के पास खडा है।)

बेरांजे : (गैंडों के पीछे चिल्लाते हुए) शर्म आनी चाहिए ! शर्म आनी चाहिए, इस तमाशे के लिए।

ड्यूडार : कोई आपका दरवाज़ा खटखटा रहा है, बेरांजे साहब, आपको सुनाई नहीं दे रहा ?

बेराजे : खोलिए, अगर आप चाहें ! (वह बिना कुछ और बोले गैंडों को देखता जा रहा है जिनका शोर अब कम होता जाता है। ड्यूडार दरवाज़ा खोलने जाता है।)

डेज़ी : (अन्दर आते हुए) नमस्कार, ड्यूडार साहब !

ड्यूडार : अरे, आप हैं, मिस डेज़ी !

डेज़ी : बेरांजे साहब है ? पहले से अच्छे हैं ?

ड्यूडार : नमस्ते, मिस डेज़ी, तो आप बेरांजे साहब से अक्सर मिलने आया करती हैं ?

डेज़ी : कहां हैं वे ?

ड्यूडार : (इशारा करते हुए) उधर।

डेज़ी : बेचारे, इनका कोई नही है। आजकल कुछ बीमार भी रहते हैं, थोड़ी मदद तो करनी ही चाहिए।

ड्यूडार : आप सचमुच बहुत अच्छी दोस्त हैं, मिस डेज़ी !

डेज़ी : हां, इसमें शक ही क्या है, मैं अच्छी दोस्त हूं यह सच है।

ड्यूडार : आप दिल की अच्छी हैं।

डेज़ी : मैं अच्छी दोस्त हूं, बस।

बेरांजे : (पीछे मुड़कर, खिड़की खुली छोड़कर) अरे, मिस डेज़ी ! आपने आकर बड़ा अच्छा किया, आप कितनी अच्छी हैं !

ड्यूडार : इससे इनकार नही किया जा सकता।

बेरांजे : जानती हैं, मिस डेज़ी, तर्कशास्त्री गेंडा है !

डेज़ी : जानती हूं, इधर आते हुए मैंने अभी-अभी उन्हें देखा है, रास्ते में। अपनी उम्र के हिसाब से वह काफी तेज़ी से दौड़ रहे थे ! अब आप अच्छे हैं, बेरांजे साहब ?

बेरांजे : (डेज़ी से) सिर, हर वक्त सिर ! सिर में दर्द ! बड़ा खतरनाक ! आप क्या सोचती हैं ?

डेज़ी : मैं समझती हूं कि आपको आराम करना चाहिए ''कुछ दिन और घर में रहकर, सारी चिंताएं छोड़कर आराम करना चाहिए।

ड्यूडार : (बेरांजे और डेज़ी से) कहीं मैं आपको डिस्टर्ब तो नहीं कर रहा !

बेरांजे : (डेज़ी से) मैं तर्कशास्त्री की बात कर रहा हूं'''

डेज़ी : (ड्यूडार से) आप हमें डिस्टर्ब क्यों करेंगे ? (बेरांजे से) अच्छा, तर्कशास्त्री ? मैं तो इस बारे में कुछ नहीं सोच रही !

ड्यूडार : (डेज़ी से) मेरा यहां होना कहीं कबाब में हड्डी तो नहीं ?

डेज़ी : (बेरांजे से) आप मुझ से क्या सोचने की उम्मीद रखते हैं ? (बेरांजे और ड्यूडार से) आपके लिए एक ताज़ा समाचार : बोटार गेंडा बन गया है।

ड्यूडार : अच्छा !

बेरांजे : यह नहीं हो सकता ! वह इसके खिलाफ था। आपको देखने में गलती हुई होगी, उसने इसका विरोध किया था। ड्यूडार ने अभी-अभी मुझे यही बताया था। क्यों, ड्यूडार साहब ?

ड्यूडार : यह सच है।

डेज़ी : मैं जानती हूं कि वह इसके खिलाफ था। लेकिन फिर भी वह गेंडा बन गया है, मिस्टर पंपियों की कायापलट के चौबीस घंटे बाद।

ड्यूडार : बात साफ है ! उसने अपना इरादा बदल लिया है ! हर आदमी को ऐसा करने का पूरा हक है।

बेरांजे : तब तो, तब तो कुछ भी हो सकता है !

ड्यूडार : (बेरांजे से) वह अच्छा आदमी है जैसा कि आपने थोड़ी देर पहले बताया।

बेरांजे : (डेज़ी से) आप पर विश्वास करना मुश्किल लग रहा है। किसी ने आप से झूठ कहा है।

डेज़ी : मैंने उसे ऐसा करते देखा है।

बेरांजे : तब उस ने खुद झूठ बोला है, नाटक किया है।

डेज़ी : वह बिलकुल सच्चा दिखाई दे रहा था, सच्चाई का साक्षात् अवतार।

बेरांजे : कोई कारण बताया उसने ?

डेज़ी : उसके शब्द थे : हमें वक्त के साथ चलना चाहिए ! ये उसके आखिरी इंसानी शब्द थे।

ड्यूडार : (डेज़ी से) मुझे पक्का विश्वास था कि मैं आपको यहां

मिलूँगा, मिस डेज़ी।

बेरांजे : ···वक्त के साथ चलना! क्या अजीब बात है! (वह हवा में हाथ झटकता है।)

ड्यूडार : (डेज़ी से) जब से दफ़्तर बंद हुआ है, आप से कहीं और मिलना नामुमकिन हो गया है।

बेरांजे : (बात जारी रखते हुए, एक तरफ होकर) क्या बचपना है! (फिर वही अभिनय)

डेज़ी : (ड्यूडार से) अगर आप मुझसे मिलना ही चाहते थे तो टेलीफोन कर दिया होता।

ड्यूडार : (डेज़ी से)···ओह! मैं दूसरों के मामलों में दखल नहीं देता, मिस डेज़ी।

बेरांजे : खैर, सोचने के बाद बोटार का सनकीपन मुझे अचंभे में नहीं डालता। उसकी मानसिक दृढ़ता सिर्फ एक दिखावा थी। फिर भी, इसका मतलब यह नहीं कि वह एक अच्छा आदमी नहीं है या नहीं रहा है। अच्छे आदमी अच्छे गेंडे बनते हैं। क्या किया जाए! वे दिल के साफ होते हैं, इसलिए झाँसे में जल्दी आ जाते हैं।

डेज़ी : आपको एतराज़ न हो तो मैं टोकरी मेज़ पर रख लूँ! (टोकरी रखती है।)

बेरांजे : लेकिन वह ऐसा अच्छा आदमी था जिसमें काफी रोष भरा था···

ड्यूडार : (डेज़ी से, उसकी टोकरी रखवाने में तत्परता दिखाते हुए) माफ कीजिए) हम दोनों को माफ कीजिए, हमें पहले ही आपकी मदद करनी चाहिए थी।

बेरांजे : (बात जारी रखते हुए)···वह एक तो उस नफरत का शिकार था जो उसे अपने बड़े अफसरों के लिए थी और दूसरे, हीन भावना का···

ड्यूडार : (बेरांजे से) आपकी दलील जमी नहीं। क्योंकि उसने ठीक अपने बड़े साहब की तरह ही किया और यह बड़ा

साहब उन लोगों के हाथ की कठपुतली था जिन्होंने उसका शोषण किया · ये उसके ही शब्द थे। इसके उलटे, मुझे तो लगता है कि इस केस में बोटार की जात-बिरादरी की भावना उसके विद्रोही मन पर हावी हो गई है।

वेराजे : विद्रोही तो गेंडे है क्योंकि इनकी सख्या कम है।

ड्यूडार : हा, अभी तक तो ऐसा ही है।

डेज़ी : यह एक ऐसी माइनारिटी है जिसकी सख्या अच्छी खासी है और बढ़ भी रही है। मेरा चचेरा भाई गेंडा बन गया है और उसकी बीवी भी। यह कहने की तो जरूरत ही नही कि शहर की बड़ी-बड़ी हस्तियां, यहा तक कि हमारा धर्माधीश···

ड्यूडार : धर्माधीश !

डेज़ी : धर्माधीश।

ड्यूडार : आप देखेंगे कि यह सब दूसरे देशों मे भी फैलेगा।

वेराजे : और यह सब हमारे यहां से शुरू हुआ !

डेज़ी : ···और कुछ ऊंचे परिवारो से : जैसे सेंसीमों के ड्यूक।

बेरांजे : (हाथ ऊपर उठा कर उपहास की मुद्रा मे) हमारे महा-पुरुष !

डेज़ी : और दूसरे भी, बहुत सारे दूसरे भी। हो सकता है शहर का चौथा हिस्सा।

बेरांजे : हमारा अब भी बहुमत है। हमे इसका फायदा उठाना चाहिए। इससे पहले कि हमारा सफाया हो जाए, हमें जरूर कुछ करना चाहिए।

ड्यूडार : ये बडे होशियार हैं, बड़े होशियार।

डेज़ी : चलो छोड़ो, हम कुछ खा लें। मैं कुछ चीजें लाई हूं।

बेरांजे : आप बड़ी अच्छी हैं, मिस डेज़ी।

ड्यूडार : (अपने आप से) हां, बड़ी अच्छी।

बेरांजे : (डेज़ी से) किन शब्दों में आपका धन्यवाद करूं !

डेज़ी : (ड्यूडार से) आप भी कुछ लीजिएगा ?

ड्यूडार : मैं कबाब में हड्डी नहीं बनना चाहूंगा।

डेजी : (ड्यूडार से) यह आप क्या कह रहे हैं ड्यूडार साहब ? आप अच्छी तरह जानते हैं कि आपका रुकना हमें अच्छा लगेगा।

ड्यूडार : आप अच्छी तरह जानते हैं कि मैं डिस्टर्ब करना नहीं चाहता।

बेरांजे : (ड्यूडार से) क्यों नहीं, ड्यूडार साहब, क्यों नहीं। वैसे आपसे मिलकर खुशी होती है।

ड्यूडार : सच बात तो यह है कि मैं थोड़ा जल्दी में हूं। मुझे किसी से मिलना है।

बेरांजे : कुछ देर पहले तो आप कह रहे थे कि आपको कोई काम नहीं।

डेजी : *(टोकरी से खाना निकालते हुए)* जानते हैं, मुझे खाना ढूढ़ने में काफी परेशानी हुई। दुकाने बंद पड़ी हैं, बाहर लिखा है : सफाई के लिए बंद।

बेराजे : इन्हें पकड़ कर बाड़ों में डाल देना चाहिए और इन पर कड़ी निगरानी रखनी चाहिए।

ड्यूडार : मैं समझता हूं कि ऐसा कर पाना मुश्किल होगा। सबसे पहले तो पशु संरक्षण समिति को ही आपत्ति होगी।

डेजी : और वैसे भी हर एक का कोई न कोई रिश्तेदार या दोस्त इन गेंडों में है जिस कारण मामला और भी पेचीदा हो जाता है।

बेराजे : तो मतलब यह हुआ कि हर कोई इस मामले में उलझा है !

ड्यूडार : सभी एकजुट हैं।

बेरांजे : लेकिन कोई आदमी गेंडा कैसे हो सकता है ? ऐसा तो सोचा भी नहीं जा सकता ! *(डेजी से)* क्या खाना लगाने में मैं मदद करूं ?

डेजी : *(बेराजे से)* नहीं, आप आराम से बैठिए। मुझे पता है

कि प्लेटें कहा हैं ।

(डेजी अलमारी की ओर जाती है जहा से प्लेटें और छुरी कांटे लाएगी ।)

ड्यूडार : (अपने आप से) वाह ! इसे तो घर की हर चीज़ का पता है···

डेज़ी : (ड्यूडार से) तो फिर तीन प्लेटें, ठीक है न, आप खाने के लिए रुक रहे है न ?

बेरांजे : (ड्यूडार से) रुक जाइए, साहब, रुक जाइए।

डेज़ी : (बेरांजे से) बात यह है कि धीरे-धीरे आदत पड जाती है । अब गलियों मे चौकड़ी भरते हुए गेंडों के झुंड देखकर कोई हैरान नही होता । उनके आने पर लोग एक तरफ हट जाते हैं, और फिर ऐसे चल देते है जैसे कुछ हुआ ही न हो ।

ड्यूडार : अक्लमंदी इसी मे है ।

बेरांजे : नही, नहीं । मेरे बस की बात नही ।

ड्यूडार : (सोचने की मुद्रा मे) वैसे तो मैं सोचता हू कि क्यों न एक बार करके देख लें ।

डेज़ी : अभी तो खाना खा लें ।

बेरांजे : आप, एक कानूनदान, आप कैसे कह सकते हैं कि···

(बाहर तेजी से दोड़ते हुए गेंडों का ऊंचा शोर सुना जा सकता है, तुरहियां और नगाड़े भी सुने जा सकते है ।) क्या हो रहा है यह ? (वे तीनो मंच के आगे की खिड़की पर फौरन आते हैं ।) क्या हो रहा है यह ?

(एक दीवार गिरने का शोर होता है । मंच का कुछ हिस्सा धूल से ढक जाता है । अगर हो सके तो धूल इतनी उडाई जाए कि ये तीनों पात्र इससे पूरी तरह घिर जाएं । उनकी केवल बातें सुनाई देती हैं ।)

बेरांजे : कुछ दिखाई नहीं देता, क्या हो रहा है ?

ड्यूडार : दिखाई तो कुछ नही देता लेकिन सुना जा सकता है।
बेरांजे : यह काफी नही !
डेजी : धूल प्लेटों को गंदा कर देगी।
बेरांजे : यह तो बहुत बुरा होगा।
डेजी : अब जल्दी-जल्दी खाना खा लें। अब इस बारे में सोचना बंद करें।

(धूल छंट जाती है।)

बेरांजे : (दर्शकों की ओर सकेत करते हुए) इन्होने फायर स्टेशन की दीवारों को गिरा डाला है।
ड्यूडार : सच है, ये गिर गई है।
डेजी : (जो खिड़की से जाने के बाद मेज के पास खडी एक प्लेट हाथ में लिए साफ कर रही थी, फिर भाग कर खिड़की के पास जाती है) वे बाहर आ रहे है।
बेरांजे : सभी फायरमैन, गेंडों की पूरी एक रेजीमेंट, नगाडो के साथ।
डेजी : गलिया इनसे भर रही हैं !
बेरांजे : अब ये हद से बढ गए हैं, हद से बढ गए हैं !
डेजी : कुछ और गेंडे चले आ रहे है, आंगनो से निकल कर !
बेरांजे : और घरों से भी···
ड्यूडार : खिड़कियो से भी !
डेजी : वे दूसरो के साथ मिलने जा रहे हैं।

(एक आदमी बाईं ओर स्थित दरवाजे से बड़ी तेजी के साथ निकलकर सीढ़ियों से नीचे जाता है। उसके बाद एक और आदमी जिसके माथे पर एक बड़ा सींग है। उसके बाद एक औरत जिसका सारा सिर गेंडे का है)

ड्यूडार : हम जैसों की संख्या अब बहुत नही रह गई।
बेरांजे : इनमे से कितने हैं एक सींग वाले और कितने दो सींग वाले ?

ड्यूडार : संख्या शास्त्री इनकी सख्या तो आंक ही रहे होंगे। वाह, कितना अच्छा अवसर है एक ऊंची बहस के लिए !

बेरांजे : एक या दूसरे की परसेंटेज का केवल अंदाजा ही लगाया जा सकता है। यह सब जल्दी-जल्दी हो रहा है। अब उनके पास समय नहीं है। अब उनके पास गिनने का समय नही है !

डेज़ी : अक्लमंदी तो यही है कि इस सिरदर्द को सख्याशास्त्रियों पर ही छोड़ दें। चलिए, बेरांजे साहब, चलिए, खाना खा लीजिए। इससे आपको आराम मिलेगा। आप अच्छा भी महसूस करेंगे। (ड्यूडार से) और आप भी।

(वे खिड़की से हट जाते हैं। डेज़ी बेरांजे की बांह अपने हाथ में लेती है और वह आराम से उसके पीछे चलता है। ड्यूडार बीच में रुक जाता है।)

ड्यूडार : मुझे ज्यादा भूख नहीं है—वैसे साफ बात तो यह है कि मुझे डिब्बाबंद खाने बहुत अच्छे नही लगते। मेरा घास पर बैठ कर खाना खाने को जी चाहता है।

बेरांजे : ऐसा मत कीजिए। जानते हैं इसमें क्या खतरा है ?

ड्यूडार : दरअसल मैं आपको डिस्टर्ब नहीं करना चाहता।

बेरांजे : लेकिन हम कह तो रहे हैं कि···

ड्यूडार : (बेरांजे की बात काट कर) कोई फॉरमैलिटी की बात नहीं।

डेज़ी : (ड्यूडार से) अगर आप सचमुच ही जाना चाहते हैं, तो ठीक है। हम आपको मजबूर नहीं कर सकते कि···

ड्यूडार : मेरा मतलब आपको ठेस पहुंचाना नहीं था।

बेरांजे : (डेज़ी से) इन्हें जाने मत दीजिए, इन्हें जाने मत दीजिए।

डेज़ी : मैं तो चाहूंगी कि यह रुक जाएं···लेकिन कौन किसी को रोक सकता है !

बेरांजे : (ड्यूडार से) मनुष्य गेंडे से श्रेष्ठ है !

ड्यूडार : मैं इसका विरोध नहीं करता। साथ ही, मैं आपके मद्दमत

भी नहीं। कहना मुश्किल है, अनुभव से ही पता चल सकता है।

बेरांजे : (ड्यूडार से) दूसरों की तरह आप भी, ड्यूडार साहब, आप भी कमज़ोर हैं। यह थोड़े समय का पागलपन है, जिस पर आप पछताएंगे।

डेज़ी : अगर यह थोड़े समय का ही पागलपन है तब कोई बड़ा खतरा नही।

ड्यूडार : मैं धर्म-संकट मे हूं ! मेरा फर्ज मुझे मजबूर करता है कि मैं अपने मालिको और साथियों का सुख-दुख मे साथ निभाऊं।

बेराजे : आपकी उनसे शादी तो नही हुई।

ड्यूडार : मैंने शादी का विचार छोड़ दिया है, मुझे छोटे घरेलू परिवार की अपेक्षा बड़ा विश्वव्यापी परिवार पसंद है।

डेज़ी : (मात्र औपचारिकता पूरी करते हुए) आप हमें बहुत याद आएंगे, ड्यूडार साहब, लेकिन हम कुछ नहीं कर सकते।

ड्यूडार : मेरा फर्ज है कि मैं उन्हें न छोड़ूं, मुझे अपना फर्ज निभाना है।

बेरांजे : इसके उलटे, आपका फर्ज है कि...आपको अपना असली फर्ज नहीं पता...आपका फर्ज है कि आप बिना किसी हिचक, मजबूती के साथ उनका विरोध करें।

ड्यूडार : मेरे विचार साफ रहेंगे, (वह मच के चारो ओर चक्कर लगाने शुरू करता है।) बिलकुल साफ। अगर आलोचना करनी ही है तो बेहतर है कि बाहर के बजाय अदर से की जाए। मैं उन्हे दगा नही दूंगा, दगा नही दूगा।

डेजी : बहुत बड़ा दिल है इनका !

बेरांजे : बहुत ज्यादा बड़ा है। (ड्यूडार से, फिर दरवाज़े की ओर दौड़ते हुए) आपका दिल बहुत बड़ा है, आप इंसान हैं। (डेज़ी से) इन्हें रोकिए। ये गलती कर रहे हैं। ये इंसान हैं।

डेज़ी : मैं क्या कर सकती हूं ?

(ड्यूडार दरवाजा खोलता है और भागता है। उसे बड़ी तेज़ी के साथ सीढ़ियों से नीचे जाते देखा जा सकता है। बेरांजे उसके पीछे जाता है और चौकी पर खड़े हो उसे चिल्ला-चिल्ला कर पुकारता है।)

बेरांजे : लौट आइए, ड्यूडार साहब। हम आपको चाहते है, उधर मत जाइए ! अब गए ! (वापस आता है।) गए !

डज़ी : हम कुछ नही कर सकते थे।

(वह दरवाजा बंद करती है। बेरांजे सामने की खिड़की की ओर दौड़ता है।)

बेरांजे : वह उनमे जा मिला है, किधर है वह अब ?

डेज़ी : (खिड़की के पास आकर) उनके साथ।

बेरांजे : वह कौन-सा है ?

डेज़ी : अब कहा नही जा सकता। अब उसे पहचाना नही जा सकता !

बेरांजे : वे सब एक ही जैसे है, एक ही जैसे ! (डेज़ी से) उसका हौसला टूट गया था। आपको उसे ज़बरदस्ती रोक लेना चाहिए था।

डेज़ी : मेरी हिम्मत नही हुई।

बेरांजे : आपको थोड़ा और सख्त होना चाहिए था, आपको जिद पकड़ लेनी चाहिए थी, वह आपसे प्रेम करता था, है न ?

डेज़ी : उसने कभी ढंग से कहा भी तो नही।

बेरांजे : सभी इस बारे मे जानते थे। ऐसा उसने प्रेम मे निराश होने पर किया है। वह शर्मीला था ! आप पर रौब जमाने के लिए ही उसने कोई बड़ा काम करना चाहा है। आपका उसके पीछे-पीछे जाने को दिल नही करता ?

डेज़ी : बिलकुल नहीं। नही तो मैं यहां कैसे होती।

बेरांजे : (खिड़की के बाहर देखते हुए) गलियों मे अब सिर्फ वे ही हैं। (पिछली खिड़की की ओर भागता है।) सिर्फ वे ही हैं।

आपने गलती की, मिस डेज़ी। (सामने की खिड़की से फिर देखते हुए) जहां तक नज़र जा सकती है, एक भी इंसान नहीं। गलियां अब उनकी ही हैं। कुछ एक सींग वाले, कुछ दो सींग वाले, आधे-आधे, पहचानने का और कोई तरीका नहीं! (दौड़ते हुए गैंडों के बड़े ऊंचे शोर सुने जा सकते हैं। वैसे ये शोर संगीतपूर्ण हैं। मंच की पिछली दीवार पर विविध आकार प्रकार से बनाए हुए गैंडों के सिरों के चित्र प्रकट और लीन होते हैं। अब से नाटक के समाप्त होने तक यह प्रक्रिया चलती रहेगी और सिरों की संख्या बढ़ती जाएगी। अन्तिम क्षणों में ये सिर दीवार पर अधिक समय तक रहेंगे और अन्त में, ये सारी दीवार को भरकर स्थिर हो जाएंगे। अपने दैत्याकार रूप में होने पर भी ये सिर उत्तरोत्तर सुन्दर होते जाने चाहिए) आप निराश तो नहीं हैं, मिस डेज़ी? क्यों? आपको कोई पछतावा तो नहीं?

डेज़ी : नहीं, नहीं!

बेरांजे : आपको तसल्ली देना मुझे बड़ा ही अच्छा लगेगा। मैं आपसे प्यार करता हूं, डेज़ी, अब मुझे कभी न छोड़ कर जाइए।

डेज़ी : खिड़की बंद कर दो, डार्लिंग। ये बहुत शोर कर रहे हैं। और धूल भी यहां तक आ रही है। यह सब कुछ गंदा कर देगी।

बेरांजे : हां, हां। तुम ठीक कहती हो। (वह सामने की खिड़की बंद करता है और डेज़ी पिछली खिड़की। दोनों मंच के मध्य में आकर मिलते हैं।) जब तक हम दोनों इकट्ठे हैं मुझे किसी बात का डर नहीं, मेरे लिए सब कुछ एक जैसा है। आह, डेज़ी! मैं सोचता था कि मैं फिर कभी किसी लड़की से प्यार नहीं कर पाऊंगा। (वह डेज़ी के हाथ अपने हाथों में लेता है, उसकी बाहें थाम लेता है।)

डेज़ी : देखा, सब कुछ हो सकता है।

बेरांजे : तुम्हें खुश रखना मुझे कितना अच्छा लगेगा! क्या तुम

मेरे साथ खुश रह सकती हो।

डेज़ी : क्यों नहीं ? अगर तुम खुश हो तो मैं भी खुश हूं। तुम कहते हो कि तुम्हें किसी बात का डर नहीं, और तुम हर बात से डरे हुए हो ! क्या हो सकता है हमारे साथ ?

वेरांजे : (अभिभूत होते हुए) मेरे प्यार, मेरी खुशी ! मेरी खुशी, मेरे प्यार···अपने ओंठ पास लाओ, मैंने तो सोचा भी नहीं था कि मुझमें अब भी प्यार का इतना जोश है !

डेज़ी : अब शांत हो जाओ, अपने पर भरोसा रखो अब।

वेरांजे : मुझे भरोसा है, अपने ओंठ पास लाओ।

डेज़ी : मैं बहुत थकी हुई हूं, डार्लिंग। शांत हो जाओ, थोड़ा आराम कर लो। जाओ, आराम-कुर्सी पर बैठ जाओ। (डेज़ी वेरांजे को कुर्सी की ओर ले जाती है।)

वेरांजे : उस हालत में, ड्यूडार को बोटार से झगड़ा करने की कोई ज़रूरत नहीं···थी।

डेज़ी : अब ड्यूडार के बारे में और मत सोचो। मैं तुम्हारे पास हूं। हमें दूसरे लोगों की ज़िंदगी में दखल देने का कोई हक नहीं।

वेरांजे : लेकिन तुम मेरी ज़िंदगी में तो दखल दे रही हो। मेरे साथ सख्त होना तुम्हें खूब आता है।

डेज़ी : अपनी खुशी की हिफाज़त तो करनी ही पड़ती है। मैंने ठीक कहा न ?

वेरांजे : मैं तुम्हारी पूजा करता हूं, डेज़ी, तुम सचमुच देवी हो।

डेज़ी : जब तुम मुझे और अधिक जान लोगे तो शायद तुम ऐसा नहीं कहोगे।

वेरांजे : जितना अधिक तुम्हें जाना जाता है उतना ही तुम और अच्छी लगने लगती हो, और तुम सुन्दर तो इतनी हो, सुन्दर तो इतनी हो (गेंडों के गुज़रने का शोर फिर सुनाई देता है।)···खासतौर पर जब तुम्हारी उनसे तुलना की जाए···(खिड़की की ओर संकेत करता है।) तुम कहोगी

कि यह कोई तारीफ नही लेकिन वे तुम्हारी सुन्दरता को और अधिक निखार रहे हैं…

डेज़ी : आज कोई गड़बड़ तो नहीं की न ? तुम ने ब्रांडी तो नही पी ?

बेरांजे : नही, नहीं, कोई गड़बड़ नहीं की।

डेज़ी : यह सच है ?

बेरांजे : हां, हां, मैं तुम्हें यकीन दिलाता हूं।

डेज़ी : तुम पर यकीन करना चाहिए ?

बेरांजे : (थोड़ा हड़बड़ा कर) हां, हां, यकीन करो, सच।

डेज़ी : तो फिर एक छोटा गिलास ले सकते हो। तुम ठीक महसूस करोगे। (बेरांजे उठने को आतुर) तुम बैठे रहो, डार्लिंग। कहां रखी है बोतल ?

बेरांजे : (संकेत करते हुए) वहां, उस छोटी मेज पर !

डेज़ी : (मेज की ओर जाते हुए जहां से वह…गिलास और बोतल उठाएगी।) इसे बड़ी अच्छी तरह छिपा कर रखा है तुमने।

बेरांजे : ताकि इसे देख दिल न कर आए।

डेज़ी : (एक छोटा गिलास बनाकर बेरांजे को देती है।) तुम सचमुच बड़े अच्छे हो। सुधर रहे हो।

बेरांजे : तुम्हारे साथ रहकर मैं और भी तेज़ी से सुधरूंगा।

डेज़ी : (गिलास देते हुए) तो लो, यह रहा तुम्हारा इनाम !

बेरांजे : (एक ही घूंट में गिलास खाली करता है।) शुक्रिया। (गिलास फिर से डेज़ी के सामने लाता है।)

डेज़ी : नहीं, डार्लिंग, नहीं। अभी इतनी ही बहुत है। (बेरांजे से गिलास ले लेती है, बोतल के साथ इसे मेज़ पर रख देती है।) मैं नहीं चाहती कि तुम्हारा कोई नुकसान हो। (बेरांजे के पास वापस लौट आती है।) और तुम्हारा सिरदर्द ? अब कैसा है ?

पहले से तो बहुत कम है, मेरी रानी।

डेजी : तब हम पट्टी उतार देंगे। तुम्हें अच्छी नहीं लगती।
बेरांजे : नहीं, नहीं, इसे मत छुओ।
डेजी : क्या बात करते हो, हम इसे उतारेंगे।
बेरांजे : मैं डरता हूं कि कहीं इसके नीचे कुछ निकल न आए।
डेजी : (बेरांजे के विरोध के बावजूद पट्टी हटाते हुए) हमेशा तुम्हारे डर, तुम्हारे निराशा भरे विचार। देखो, कुछ नहीं है। तुम्हारा माथा बिलकुल साफ है।
बेरांजे : (अपना माथा टटोलते हुए) यह सच है, तुम मुझे उलझनों से मुक्ति दे रही हो। (डेजी बेरांजे का माथा चूमती है।) तुम्हारे बिना मेरा क्या होगा!
डेजी : मैं अब कभी तुम्हें अकेला नहीं छोड़ूंगी।
बेरांजे : तुम्हारे साथ रहकर मेरे सब दर्द दूर हो जाएंगे।
डेजी : मैं भी जान लूंगी कि इन्हें कैसे दूर रखा जा सकता है।
बेरांजे : हम मिलकर किताबें पढ़ा करेंगे। मैं विद्वान बन जाऊंगा।
डेजी : और जब बाहर बहुत भीड़ नहीं होगी, हम अकसर दूर-दूर तक घूमने जाया करेंगे।
बेरांजे : हां, नदी किनारे, पार्क में…
डेजी : चिड़ियाघर।
बेरांजे : मैं मज़बूत और दिलेर बनूंगा। मैं भी बुरी नजर रखने वाले लोगों से तुम्हारी रक्षा करूंगा।
डेजी : छोड़ो, छोड़ो, तुम्हें मेरी रक्षा नहीं करनी पड़ेगी। हम किसी का बुरा नहीं चाहते, डार्लिंग। कोई बुरा नहीं चाहता।
बेरांजे : कभी-कभी न चाहते हुए भी हमसे किसी का बुरा हो जाता है। या यूं कहें कि हम इसे रोकते नहीं। जैसे, तुम्हें भी बेचारे पैपियो साहब अच्छे नहीं लगते। लेकिन उस दिन जब बीफ गेंडा बन गया था, तुम्हें शायद इतनी रुखाई के साथ उनसे एकदम यह नहीं कहना चाहिए था कि उनके हाथ बड़े रूखे हैं।

डेज़ी : यह झूठ नहीं था। थे तो ऐसे ही।

वेरांजे : जानता हूं, डार्लिंग। फिर भी तुम्हें यह बात ज़रा आराम से कहनी चाहिए थी, थोड़े प्यार के साथ। उसके दिमाग पर बहुत असर हुआ।

डेज़ी : सच ?

वेरांजे : उसने स्पष्ट तो कुछ नहीं होने दिया क्योंकि वह स्वाभिमानी था। उसे ज़रूर काफी गहरी चोट पहुंची होगी। ज़रूर इसी बात ने उसे फैसले के लिए उकसाया होगा। शायद तुमने एक जीव को बचा लिया होता !

डेज़ी : मैं कैसे जान सकती थी कि उसके साथ क्या होने जा रहा है···उसने बदतमीज़ी की।

वेरांजे : जहां तक मेरा सवाल है, मैं जां के साथ अच्छी तरह पेश न आने के लिए हमेशा अपने को धिक्कारता रहूंगा। मैं कभी भी उसे साफ-सुथरे रूप मे यह नहीं दिखा पाया कि मुझे उससे कितनी दोस्ती थी। और मैं उसे अच्छी तरह समझ नही पाया।

डेज़ी : ज्यादा सोचो नहीं। जो भी हो, अपनी तरफ से तुमने कम नहीं किया। असम्भव को तो किया नही जा सकता। पछताने से क्या मिलेगा ? इन लोगों के बारे में अब और नहीं सोचो। भूल जाओ उन्हें। बुरी यादें दिमाग से निकाल दो।

वेरांजे : इन यादों को—ये सुनाई भी देती हैं, दिखाई भी देती हैं। ये यथार्थ हैं।

डेज़ी : मैं नहीं जानती थी कि तुम इतने यथार्थवादी हो, मैं समझती थी कि तुम कवि अधिक हो। तो फिर, तुम्हारे पास कोई कल्पना नहीं है ? यथार्थ कई प्रकार के हैं ! तुम उसे चुनो जो तुम्हारे लिए ठीक है। कल्पना के संसार में चले जाओ।

वेरांजे : कहना आसान है !

डेज़ी : मैं क्या तुम्हारे लिए काफी नहीं हूं ?

बेरांजे : तुम तो मेरा सब कुछ हो, सब कुछ हो !

डेज़ी : अपनी इन परेशानियों से तुम सब कुछ बिगाड़ लोगे ! सब लोगों मे दोष होते हैं, ठीक है। लेकिन, फिर भी, तुम और मैं, हम दोनों में दूसरों से कम हैं।

बेराजे : तुमको ऐसा लगता है ? सच ?

डेज़ी : हम आम लोगों के मुकाबले मे कुछ अच्छे ही हैं। हम अच्छे हैं, हम दोनों।

बेरांजे : सच है, तुम अच्छी हो और मैं अच्छा हूं। यह सच है।

डेज़ी : तो फिर जीना हमारा हक है। यह हमारा फर्ज भी है कि हम जीएं, खुश रहें चाहे हालात कितने भी बुरे हों। अपराध-भावना एक भयंकर लक्षण है। यह पवित्रता की कमी का संकेत है।

बेरांजे : हां, जरूर, यह हो सकता है··· (वह उस खिड़की की ओर संकेत करता है जिसके नीचे से गैंडे गुजर रहे हैं, फिर मंच की पिछली दीवार की ओर जहां एक गैंडे का सिर प्रकट होता है।) ···उनमें से बहुतों के साथ ऐसा ही हुआ।

डेजी : तो फिर आओ, हम और अधिक अपने आपको अपराधी महसूस न करें।

बेरांजे : तुम बिलकुल ठीक कहती हो, मेरी रानी, मेरी देवी·· मैं तुम्हारे पास हूं, हूं न ? हमे कोई अलग नही कर सकता। हमारा प्रेम है, सिर्फ यही है जो सच है। किसी को हक नहीं कि हमे खुश रहने से रोके, रोक भी नही सकता, ठीक है न ? (टेलीफोन की घण्टी सुनी जा सकती है।) कौन हो सकता है टेलीफोन पर ?

डेज़ी : (चिंतित) मत उठाओ ! ···

बेराजे : क्यों ?

डेज़ी : नहीं जानती। शायद न उठाना बेहतर होगा।

बेरांजे : हो सकता है कि यह पैपियों साहब या बोटार या जां या ड्यूडार हो जो कहना चाहता हो कि उसने अपना

बदल लिया है। तुमने कहा तो था कि उनके लिए यह एक थोड़े समय का पागलपन है !

डेज़ी : मुझे ऐसा नही लगता । यह सम्भव नही कि उन्होंने इतना जल्दी अपना फैसला बदला हो। उन्हें सोचने का समय ही कहां मिला होगा। इस प्रयोग में वे आखिर तक जाएंगे।

बेरांजे : हो सकता है कि सरकारी अफ़सर अब चेत रहे हों और इस मामले में कोई कदम उठाने के लिए हमारी मदद मांग रहे हों।

डेज़ी : मुझे हैरानगी होगी।

(टेलीफ़ोन की घण्टी फिर बजती है।)

बेरांजे : हां, हां, यह सरकारी घंटी ही है; मैं इसे पहचानता हू। एक देर तक बजने वाली घंटी ! मुझे इसका जवाब देना ही चाहिए। कोई और हो ही नही सकता। (वह टेलीफोन उठाता है) हैलो ? (रिसीवर में से गैंडों की चिंघाड़ें सुनाई देती हैं।) सुना तुमने ? चिंघाड़ें ! सुनो !

(डेज़ी रिसीवर अपने कान के पास लाती है, आवाज सुन उसे झटका लगता है, रिसीवर फौरन नीचे रख देती है।)

डेज़ी : (डरे हुए) यह क्या हो रहा है !

बेरांजे : अब ये हमारे साथ मज़ाक कर रहे हैं।

डेज़ी : बड़े सस्ते मजाक !

बेरांजे : देखा तुमने, मैंने क्या कहा था !

डेज़ी : तुमने तो मुझे कुछ नही कहा था।

बेरांजे : मुझे पता था कि ऐसा होगा, मैंने पहले ही कह दिया था।

डेज़ी : पहले तो तुमने कुछ नही कहा। तुम कभी भी पहले से कुछ नहीं कहते। तुम पहले से तभी कहते हो जब कोई बात हो चुकी होती।

बेरांजे : हां, मैं पहले से कह देता हूं, पहले से कह देता हूं।

डेज़ी : ये लोग अच्छे नही हैं। यह बहुत खराब बात है। कोई मेरे साथ चालें, मज़ाक करे, यह मुझे पसन्द नहीं।

बेरांजे : तुम्हारे साथ मज़ाक करने की उनमें हिम्मत कहां? यह तो मेरे साथ हो रहा है।

डेज़ी : और चूंकि मैं तुम्हारे साथ हूं, तभी तो मुझे भी इसका कुछ हिस्सा मिल रहा है। वे बदला ले रहे हैं। लेकिन हमने उनका क्या बिगाड़ा है? (घंटी फिर बजती है।) प्लग बाहर निकाल दो।

बेरांजे : डाक-तार वाले इसकी इजाज़त नही देते!

डेज़ी : अच्छा, यह छोटा-सा काम करने की हिम्मत नही और कहते हो कि मेरी रक्षा करोगे! (डेज़ी प्लग निकाल देती है और घंटी बजनी बन्द हो जाती है।)

बेरांजे : (रेडियो की ओर भागते हुए) रेडियो चला दें। खबरें सुनने के लिए।

डेज़ी : हां ज़रूर, हमें पता होना चाहिए कि हालात कैसे हैं! (रेडियो से चिंघाड़ने की आवाज़ें आती हैं। बेरांजे जल्दी-जल्दी स्विच दबाता है। रेडियो बन्द हो जाता है। लेकिन दूर से चिंघाड़ने की प्रतिध्वनियों जैसी आवाज़ें सुनी जा सकती हैं।) मामला सचमुच बिगड़ता जा रहा है! मुझे बिलकुल पसन्द नही, मैं मानने को तैयार नही। (वह कांपने लगती है।)

बेरांजे : (बहुत बेचैन) घबराओ नही! घबराओ नही!

डेज़ी : इन्होंने रेडियो स्टेशन पर कब्ज़ा कर लिया है!

बेरांजे : (कांपते हुए और बेचैन) घबराओ नहीं! घबराओ नही! घबराओ नही!

(डेज़ी पहले दौड़कर पिछली खिड़की पर जाती है, इससे बाहर देखती है, फिर सामने की खिड़की पर आती है और बाहर देखती है। बेरांजे भी ऐसा ही करता है लेकिन उलटी दिशा में। तब दोनों मंच के

बीच स्वयं को एक दूसरे के आमने-सामने पाते हैं।)

डेज़ी : अब ये कोई मजाक नही कर रहे। अब ये सीरियस हैं !

वेरांजे : अब सिर्फ ये ही हैं, सिर्फ ये ही हैं ! सरकारी अफसर भी उनके साथ मिल गए हैं।

(दोनों पहले की तरह खिड़कियों की तरफ जाते हैं, मंच के बीच में मिलते हैं।)

डेज़ी : कही पर कोई और नही बचा।

वेरांजे : हम अकेले हैं, हम अकेले बचे है।

डेज़ी : ठीक यही तो तुम चाहते थे।

वेराजे : यह तुम थी जो ऐसा चाहती थी।

डेज़ी : नही तुम !

वेराजे : नहीं तुम !

(सभी ओर से आवाजें आती हैं। गेंडों के सिरों से पिछली दीवार भर जाती है। घर के दाए-बाएं से जानवरों के भागते हुए पैरों और हांफती हुई सासों का शोर। लेकिन, फिर भी, ये भयानक आवाजें ताल तथा लययुक्त है जो एक प्रकार के संगीत की सृष्टि करती हैं। सबसे ऊंचा शोर छत के ऊपर से आता है और यह शोर पैरों को जोर-जोर से पटकने का है। छत से कुछ प्लास्टर गिरता है। मकान बुरी तरह से हिलने लगता है।)

डेज़ी : भूचाल आ रहा है ! (वह समझ नही पाती कि किधर जाए।)

वेरांजे . नही, ये हमारे पड़ोसी हैं, ये महापाद प्रहारी ! (वह अपना घूंसा चारों ओर घुमाता है।) बन्द करो यह शोर ! हमे काम करने दो। शोर मचाना मना है, मना है शोर मचाना।

डेज़ी : ये तुम्हारी बात थोड़े ही मानेंगे। (फिर भी शोर कम हो जाता है और अब यह एक संगीतमय पृष्ठभूमि के रूप में

रह जाता है।)

वेरांजे : (स्वयं भी डरे हुए) घबराओ नहीं, रानी। हम एक दूसरे के पास हैं, क्या तुम मेरे साथ सुखी नहीं हो? मैं तुम्हारे पास हूं, क्या यह काफी नहीं है? मैं तुम्हारी सभी परेशानियां दूर कर दूंगा।

डेज़ी : शायद इसमें हमारा दोष है।

वेरांजे : अब ज्यादा मत सोचो। हमें पछताना नहीं चाहिए। अपराध-भावना खतरनाक होती है। आओ, हम अपना जीवन जीएं, खुश रहें। खुश रहना हमारा फर्ज है। वे बुरे नहीं हैं, हम उन्हें कुछ नहीं कहेंगे। वे हमारा कुछ नहीं बिगाड़ेंगे, शांत हो जाओ, आराम करो। आराम-कुर्सी पर बैठ जाओ (वह उसे आराम-कुर्सी तक ले जाता है।) शांत हो जाओ। (डेज़ी आराम कुर्सी पर बैठती है।) एक गिलास ब्रांडी लोगी ठीक महसूस करने के लिए?

डेज़ी : मेरा सिर दुख रहा है।

वेरांजे : (पट्टी उठाकर और डेज़ी के सिर पर बांध कर) मैं तुमसे प्रेम करता हूं, मेरी रानी। चिंता न करो, वे जल्दी ठीक हो जाएंगे। यह थोड़ी देर का पागलपन है।

डेज़ी : वे ठीक नहीं होंगे। यह हमेशा का पागलपन है।

वेरांजे : मुझे तुमसे प्यार है, मैं तुम्हारे प्यार में पागल हूं।

डेज़ी : (पट्टी उतारते हुए) जैसा हो रहा है, होने दो। तुम ही बताओ, हम क्या कर सकते हैं?

वेरांजे : वे सभी पागल हो गए हैं। सारी दुनिया बीमार है। वे सभी बीमार हैं।

डेज़ी : ये हम नहीं हैं जो इनका इलाज करेंगे।

वेरांजे : इस मकान में कैसे रहें, इनके साथ?

डेज़ी : (शांत होते हुए) हमें समझदारी से चलना चाहिए। हमें कोई रास्ता निकालना है, उनके साथ बनाकर रहने की कोशिश करनी है। उनकी सुनने और अपनी सुनाने की

कोशिश करनी है।

वेरांजे : वे हमारी सुन नहीं सकते।

डेज़ी : फिर भी, यह जरूरी है। कोई दूसरा रास्ता नही।

वेरांजे : तुम उन्हें समझ लेती हो, तुम ?

डेज़ी : अभी नही। लेकिन हमे उनकी साइकॉलॉजी समझने की कोशिश करनी चाहिए और उनकी भाषा सीखनी चाहिए।

वेरांजे : उनकी कोई भाषा नहीं है ! सुनो'''तुम इसे भाषा कहती हो !

डेज़ी : तुम्हे क्या पता ? तुम कौन-सी बड़ी भाषाएं जानते हो !

वेरांजे : इस बारे मे बाद में चर्चा करेंगे। पहले खाना तो खा लें।

डेज़ी : मुझे भूख नही है अब। बहुत हो गया। सहने की कोई हद होती है।

वेरांजे : लेकिन तुम मुझसे ज्यादा हिम्मतवाली हो। देखना, कही तुम इसके असर मे न आ जाना। तुम्हारी हिम्मत के लिए ही तो मैं तुम्हारी तारीफ किया करता हू।

डेज़ी : ऐसा तुम पहले भी कह चुके हो।

वेराजे : तुम्हें मेरे प्यार में विश्वास है ?

डेज़ी : हा, जरूर।

वेराजे : मैं तुमसे प्यार करता हू।

डेज़ी : कितनी बार कहोगे यह बात, डार्लिंग !

वेराजे : सुनो, डेज़ी, हम कुछ तो कर सकते हैं। हमारे बच्चे होंगे, हमारे बच्चो के बच्चे होंगे, समय तो लगेगा लेकिन हम दोनों मिलकर मनुष्य-जाति को फिर से पैदा करें।

डेज़ी : मनुष्य-जाति को फिर से पैदा करें ?

वेरांजे : एक बार ऐसा हो चुका है।

डेज़ी : कई युग पहले। आदम और हौवा'''बड़ी हिम्मत थी उनमे।

वेराजे : हम भी हिम्मत रख सकते हैं। वैसे तो इतनी जरूरत भी

नहीं। वह तो अपने आप होता है, समय के साथ, धीरज के साथ।

डेज़ी : फायदा क्या है ?

बेरांजे : हां, हां, थोड़ी हिम्मत, थोड़ी सी हिम्मत।

डेज़ी : मुझे बच्चे नहीं चाहिए। कौन यह झंझट मोल ले !

बेरांजे : तो फिर दुनिया को कैसे बचाओगी ?

डेजी : किसलिए बचाएं ?

बेरांजे : क्या बात करती हो...! मेरे लिए ही सही, डेज़ी। आओ, दुनिया बचा लें।

डेज़ी : कुछ भी हो, शायद ये हम हैं जिन्हें बचाना ज़रूरी है। शायद ये हम हैं जिनका दिमाग ठीक नहीं है।

बेराजे : तुम बहक रही हो, डेजी, तुम्हें बुखार है।

डेज़ी : तुम्हे क्या अपनी जाति के कोई और दिखाई दे रहे हैं ?

बेराजे : डेज़ी, मैं नहीं चाहता कि तुम ऐसी बात कहो।

(डेज़ी चारों ओर गेंडों के सिरों को देखती है—दीवारों पर, दरवाजे से बाहर चौकी पर, मंच के अगले हिस्से पर)

डेज़ी : ये ही है, असली लोग। हंस-खेल रहे है। अपनी चमडी मे, अपनी चमड़ी मे खुश लग रहे है। ये पागल नहीं लग रहे। इनमे कोई बनावटीपन नहीं। इनके अपने-अपने कारण थे।

बेराजे : (हाथ जोड़कर और डेज़ी को घबराहट मे देखते हुए) ये हम हैं जो ठीक हैं, डेज़ी, मुझ पर विश्वास करो।

डेज़ी : कैसा दावा कर रहे हो !

बेराजे : तुम अच्छी तरह जानती हो कि मैं ठीक कह रहा हूं।

डेज़ी : कोई भी चीज़ पूरी तरह ठीक नहीं होती। यह दुनिया है जो ठीक है, न तुम, न मैं !

बेरांजे : नहीं डेज़ी, मैं ठीक हूं। सबूत यह है कि जब मैं बात करता हूं तुम इसे समझ लेती हो।

डेज़ी : इससे तो कुछ साबित नहीं होता।

बेरांजे : सबूत यह है कि मैं तुम्हें इतना चाहता हूं जितना कि एक आदमी के लिए एक औरत को चाहना संभव है।

डेज़ी : क्या अजीब दलील दी है !

बेरांजे : मैं अब तुम्हें समझ नही पा रहा, डेज़ी मेरी रानी, तुम नही जानती कि तुम कह क्या रही हो ! हमारा प्यार ! हमारा प्यार, सोचो, हमारा प्यार···

डेज़ी : जिसे तुम प्यार कहते हो, मुझे उससे जरा शर्म आ रही है। यह बीमार भावना, यह मर्द की कमजोरी। और औरत की भी। इसका उस जोश, उस ज़बरदस्त ताकत के साथ कोई मुकाबला नही जो हमारे चारों ओर इन जीवों से निकल रही है।

बेरांजे : ताकत ? तुम्हें ताकत चाहिए ? लो, यह रही ताकत ! (वह डेज़ी के मुह पर चांटा मारता है।)

डेज़ी : ओह ! मैंने कभी सोचा भी न था··· (आराम-कुर्सी में ढुलक जाती है।)

बेरांजे : ओह ! माफ कर दो; मेरी रानी, मुझे माफ कर दो ! (बेरांजे उसका चुम्बन लेना चाहता है, वह हटा देती है।) माफ कर दो, डार्लिंग। मैं ऐसा बिलकुल नही चाहता था। न जाने मुझे क्या हो गया, कैसे मैं काबू से बाहर हो गया !

डेज़ी : क्योंकि तुम्हारे पास देने को कोई दलीलें नही बची थी, बस, इसलिए।

बेरांजे : ओफ ! तब तो कुछ ही क्षणों में हम शादी के पच्चीस साल पार कर गए।

डेज़ी : मुझे तुम पर दया भी आती है, मैं तुम्हे समझती हूं।

बेरांजे : (डेज़ी रो रही है।) ठीक है, मेरे पास देने को और दलीलें नही बचीं, ठीक है। तुम समझती हो कि वे मुझसे ज्यादा ताकतवर है, कि वे हमसे ज्यादा ताकतवर हैं, यही न ?

डेज़ी : हां, जरूर।

बेरांजे : तो फिर, यह सब होते हुए भी, मैं तुम्हारे सामने कसम खाता हूं, मैं हार नही मानूंगा।

डेज़ी : (उठती है, बेराजे के पास जाती है, उसके गले में बाहें डालती है।) मेरे प्रियतम, मे तुम्हारे साथ मिलकर उनका मुकाबला करूंगी अंत तक।

बेरांजे : कर सकोगी ?

डेज़ी : मैं वचन निभाऊगी। विश्वास करो। (गैंडों के शोर लयबद्ध हो गए हैं।) गा रहे है, सुन रहे हो ?

बेरांजे : गा नही रहे, चिंघाड रहे हैं।

डेज़ी : गा रहे हैं।

बेरांजे : मैं कहता हूं चिंघाड़ रहे हैं।

डेज़ी : तुम्हारा दिमाग खराब है, गा रहे हैं।

बेरांजे : तो फिर तुम्हारे पास संगीत सुनने के कान नही हैं।

डेज़ी : तुम तो बुद्धू ही निकले, तुम्हें संगीत के बारे में कुछ नही पता, और देखो, वे खेल रहे हैं, नाच रहे हैं।

बेरांजे : तुम इसे नाचना कहती हो ?

डेज़ी : ये ऐसे ही तो नाचते हैं। बड़े सुन्दर हैं।

बेराजे : बड़े घिनौने है !

डेज़ी : मैं नही चाहती कि कोई इनकी निंदा करे। मुझे दुख पहुंचता है।

बेरांजे : माफ कर दो। उनकी खातिर हम आपस मे नही झगड़ेंगे।

डेज़ी : वे देवता स्वरूप हैं।

बेराजे : बहुत बढा-चढा रही हो, डेज़ी, जरा अच्छी तरह देखो इन्हें।

डेज़ी : जलो नही, डार्लिंग। और मुझे माफ भी कर दो। (वह फिर बेरांजे के पास जाती है और उसे आलिंगन मे लेना चाहती है। इस बार बेरांजे टाल देता है।)

बेरांजे : अब मैं समझ सकता हूं कि हम दोनों के विचार एकदम उल्टी दिशा मे चल रहे हैं। बेहतर होगा कि अब हम और

बहस न करें।

डेजी : देखो, छोटापन न दिखाओ।

बेरांजे : पागल नहीं बनो।

डेजी : (बेरांजे से, जो उसकी ओर अपनी पीठ कर लेता है। वह शीशे में अपने आपको देखता है, बड़े गौर के साथ देखता है।) अब हमारे लिए एक साथ रहना संभव नहीं होगा।

(बेरांजे अपने आपको शीशे मे देखना जारी रखता है, डेजी धीरे-धीरे दरवाजे की ओर यह कहते हुए जाती है : "यह अच्छा आदमी नही है, हां, सच, अच्छा आदमी नही है।" वह कमरे से बाहर जाती है, उसे धीरे-धीरे पहली एक दो सीढ़ियों से उतरते देखा जा सकता है।)

बेरांजे : (अब भी शीशे में देख रहा है।) फिर भी, आदमी देखने मे इतना बुरा नही। हालाकि मैं बड़े खूबसूरत आदमियो में से नही हूं! मुझ पर विश्वास रखो, डेजी! (वह पीछे मुड़ता है।) डेजी! डेजी! कहां हो, डेजी? तुम ऐसा मत करना! (वह दरवाजे की ओर भागता है।) डेजी! (वह चौकी पर आता है और जगले से नीचे देखता है।) डेजी। वापस आ जाओ, लौट आओ, मेरी डार्लिंग डेजी! तुमने खाना भी नही खाया है! डेजी, मुझे अकेला मत छोडो! याद है कि तुमने क्या वायदा किया था। डेजी! डेजी! (हारकर पुकारना बंद कर देता है, एक निराशा-सूचक चेष्टा करता है और कमरे में वापस आ जाता है।) ठीक है, अब हममें निभ भी तो नहीं पा रही थी। आपस मे बनती नही थी। जीना मुश्किल हुआ जा रहा था। लेकिन उसे बिना कारण बताए मुझे छोड़कर नही जाना चाहिए था। चारो ओर देखता है।) कुछ लिखकर भी नहीं छोड़ गई। यह कोई तरीका नही। मैं बिलकुल अकेला हूं अब। (वह दरवाजे को चाबा लगाने आता है, बड़े ध्यान

से, लेकिन गुस्से में) मुझे कोई नही पकड़ेगा, मुझे। (बड़े ध्यान से खिड़कियां बंद करता है।) तुम मुझे नही पकड़ोगे, मुझे। (सभी गैंडो के सिरो को संबोधित करता है।) मैं तुम्हारे साथ नही चलूगा, मैं तुम्हें नही समझ पा रहा। *मैं जो हू, वही रहूगा। मैं इंसान हू। इंसान।* (आरामकुर्सी पर जाकर बैठता है।) हालात अब सहन से बिलकुल बाहर हैं। अगर वह गई है तो दोष मेरा है। मैं उसका सब कुछ था। अब उसका क्या होगा ? एक और इसान का बोझ मेरी आत्मा पर। जानता हूं कि बहुत बुरा होगा, बहुत बुरा होना संभव है। राक्षसों की दुनिया मे एक अकेली जान…बेचारी ! उसे ढूढने मे कोई नही मेरी मदद कर सकता, कोई नही, क्योंकि कोई बचा ही नही। (नई चिघाड़ें, भागा दौड़ी, धूल के बादल।) मैं इनकी आवाज़ भी नही सुनना चाहता। मैं कानो में रुई डालने जा रहा हू। (वह कानों में रुई डालता है और शीशे में अपने आप से बातें करता है।) उन्हें समझाने के सिवाय कोई दूसरा हल नही। समझाना, क्या समझाना ? और कायापलट, क्या इसे फिर से पलटा जा सकता है ? बोलो, क्या इसे फिर से पलटा जा सकता है ? यह काम किसी जादूगर के *बस का होगा, मेरा नही। सबसे पहले, उन्हें समझाने के* लिए, उनसे बात करनी पड़ेगी। उनसे बात करने के लिए मुझे इनकी भाषा सीखनी पड़ेगी। या उन्हे मेरी भाषा सीखनी पड़ेगी ? लेकिन मैं कौन-सी भाषा बोल रहा हू ? क्या है मेरी भाषा ? क्या यह फ्रेंच है ? होनी तो फ्रेंच ही चाहिए ! लेकिन फ्रेंच क्या होती है ? इसे फ्रेंच कहा जा सकता है, अगर कोई चाहे तो किसी को एतराज़ नही हो सकता, मैं अकेला ही तो इसे बोल रहा हूं। मैं क्या बोल रहा हूं ? जो मैं बोल रहा हूं उसे क्या मैं समझता हूं, क्या मैं समझता हूं ? (वह कमरे के बीचोंबीच जाता है।) और अगर

जैसा कि डेज़ी ने मुझे कहा था, अगर वे हैं जो ठीक हैं तो ? (वह शीशे के पास जाता है।) आदमी बदसूरत नहीं है, बदसूरत नहीं है आदमी ! (वह स्वयं को शीशे मे देखता है, अपने चेहरे पर हाथ फेरते हुए।) क्या अजीब चीज़ है, फिर कैसा लगता हूं मैं ? कैसा ? (अलमारी की ओर तेज़ी से जाता है, कुछ फोटो निकालता है जिन्हें बड़े ध्यान से देखता है।) फोटो ! कौन हैं ये लोग ? पैपियों साहब, या फिर डेज़ी ? और यह, यह बोटार है या ड्यूडार या जां ? या मैं, शायद ! (वह फिर से अलमारी के पास जाता है और दो-तीन पेंटिंगें निकालता है।) हां, अब मैं अपने आपको पहचानता हूं, यह मैं ही हूं, मैं ही हूं ! (वह पिछली दीवार के पास जाकर, गैंडों के सिरों के पास इन पेंटिगों को लटका देता है।) यह मैं ही हूं, मैं ही हूं। (जब वह इन पेंटिगों को लटकाता है तो यह दिखाई देने लगता है कि ये एक बूढ़े आदमी, एक मोटी औरत तथा एक किसी दूसरे आदमी के चित्र हैं। इन चित्रों की बदसूरती गैंडों के सिरों की तुलना में जो अब बहुत सुन्दर बन गए हैं, बिलकुल उलटा असर पैदा करती है। बेराजे इन चित्रों को अच्छी तरह देखने के लिए थोड़ा पीछे हटता है।) मैं देखने में अच्छा नहीं हूं। मैं देखने में अच्छा नहीं हूं। (वह चित्रों को नीचे उतारता है, गुस्से में इन्हें ज़मीन पर पटकता है, शीशे के पास जाता है।) ये वे हैं जो सुन्दर हैं। मैं गलत था ! ओह ! कितना अच्छा होता जो मैं उन जैसा लगता। क्या करूं, मेरा कोई सींग नहीं है ! चपटा माथा कितना बदसूरत लगता है। अपने ढलते हुए चेहरे को चुस्त बनाने के लिए एक-दो सींग तो चाहिए ही। शायद आ जाएं, और फिर मुझे शर्म नहीं आएगी, तब मैं उन सबके साथ घुल-मिल सकूंगा। लेकिन कुछ भी तो नहीं आ रहा ! (वह अपनी हथेलियों को देखता है।) मेरे हाथ कोमल हैं। क्या

ये रूखे हो जाएंगे ? (वह अपना कोट उतारता है, कमीज के बटन खोलता है, शीशे में अपनी छाती देखता है, कमीज के बटन खोलता है, शीशे मे अपनी छाती देखता है।) मेरी त्वचा ढल रही है। छिः ! यह शरीर बहुत ज्यादा सफेद और इस पर बाल भी हैं। कितना अच्छा होता जो मेरी भी मजबूत चमड़ी होती, यह अद्‌भुत गहरे हरे रंगवाली चमड़ी ! एक बिना बालों का खूबसूरत नंगापन, जैसा कि उनका है ! (वह चिंघाड़ें सुनता है।) उनके गीतो मे एक खिंचाव है, थोड़े कर्कश हैं लेकिन खिंचाव जरूर है ! काश मैं भी उनकी तरह गा पाता। (उनकी तरह गाने की कोशिश करता है।) आऽऽ, आऽऽ, बर्ऽऽ ! नहीं, यह ठीक नही ! एक बार फिर कोशिश करूं, और जोर से ! आऽऽ, आऽऽ, बर् ! नही, नही, यह वैसा नही है, कितना मरियल है, इसमे दम की कमी है ! मैं चिंघाड़ नही पाता। मैं सिर्फ चीख रहा हूं। आऽऽ, आऽऽ, बर्ऽऽ ! चीख लेना चिंघाड़ना नही होता ! दोष मेरा ही है, जब मौका था मुझे उनके साथ चले जाना चाहिए था। बहुत देर हो गई अब ! आह, मैं अभागा हू, मैं अभागा हूं। आह, मैं कभी नही गैंडा बन पाऊंगा, कभी नहीं, कभी नही ! अब मैं बदल नही सकता। चाहूंगा तो सही, सचमुच बहुत चाहूगा लेकिन बन नहीं सकता। मेरा तो अपने आपको देखने का मन नही करता। मुझे बहुत ज्यादा शर्म आती है ! (वह शीशे की ओर पीठ कर लेता है।) कितना बदसूरत हूं मैं ! वह तबाह हो जाएगा जो भीड़ के साथ चलना नहीं चाहता ! (अचानक चौंक उठता है।) कोई बात नहीं, जो हो गया सो हो गया ! मैं एक-एक को देख लूगा ! मेरी बन्दूक, मेरी बंदूक ? (पिछली दीवार की ओर मुड़ता है जहां गैंडों के सिर अब स्थिर हो गए हैं, मुड़ते समय वह चिल्लाता है :) देख लूंगा एक-एक को ! मैं आखिरी आदमी बचा हूं, मैं आखिर तक बना रहूगा ! मैं हथियार नहीं डालूंगा।

पर्दा गिरता है।

OO

मुद्रक : हरिकृष्ण प्रिंटर्स, शाहदरा, दिल्ली-110032